दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१४

बौद्धलघुग्रन्थसंग्रहः



सम्पादकः

जनार्दनपाण्डेयः

कार्यकारी योजनानिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान

सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द- २५४१ खीस्ताब्द- १९९७

बौद्धलघुग्रन्थसंग्रहः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१४

बौद्धलघुग्रन्थसंग्रहः



सम्पादकः

जनार्दनपाण्डेयः

कार्यकारी योजनानिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान

सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द- २५४१ खीस्ताब्द- १९९७

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१४

प्रधान सम्पादक : प्रो० समदोङ् रिन्पोछे

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९७

मूल्य सजिल्द : रु० ११०.००
अजिल्द : रु० ८०.००

प्रकाशक

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१ ००७

मुद्रक : शिवम् प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES -14

BAUDDHALAGHUGRANTHA SAMGRAHA

(A COLLECTION OF MINOR BUDDHIST TEXTS)



Editor

Janardan Pandey

Acting Project Director

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH PROJECT

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES

SARNATH, VARANASI

B.E. 2541 **C.E. 1997**

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES -14

Chief Editor: ***Prof. Samdhong Rinpoche***

First Edition: 550 copies, 1997

Price : Hardback: Rs. 110.00
Paperback: Rs. 80.00

Publisher:

Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

Printed at Shivam Printers, Maldahiya, Varanasi

प्रकाशकीय

प्राय: देखा गया है कि महान् आचार्यों, सिद्धों एवं विद्वानों की भी मुक्तकरूप में लिखी हुई लघुरचनाएं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपादेय होने पर भी उपेक्षित रह जाती हैं, क्योंकि लघुकाय होने के कारण उनका ग्रन्थरूप में प्रकाशन नहीं हो पाता और जिज्ञासु पाठक उनमें निर्दिष्ट ज्ञान से वंचित रह जाते हैं। यह स्थिति प्राय: सभी सम्प्रदायों की रचनाओं में है, अत: हमने विचार किया है कि बौद्ध वाङ्मय में प्राप्त ऐसी महत्त्वपूर्ण लघुरचनाओं को यथासंभव धी: में प्रकाशित किया जाय और फिर उन्हें **बौद्ध लघुग्रन्थसंग्रह** नाम से ग्रन्थ का रूप दे दिया जाय, साथ ही जिन ग्रन्थों का भोटानुवाद उपलब्ध हो वह भी साथ में रखा जाय ताकि उसकी प्रामाणिकता में सन्देह न रहे और भोटभाषी भी उससे लाभ उठा सकें । इसी क्रम में यह बौद्ध लघुग्रन्थसंग्रह का प्रथम भाग प्रस्तुत है। इसमें ११ लघु ग्रन्थ संगृहीत हैं जिनका संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। दुर्लभ बौद्धग्रन्थ शोध योजना के श्री जनार्दन पाण्डेय ने इसका सम्पादन किया है, इसके लिये हम उनको साधुवाद देते हैं। आशा करते हैं कि इसी प्रकार आगे भी यह क्रम चलता रहेगा और इस योजना से अनेक अज्ञात महत्त्वपूर्ण लघु ग्रन्थ प्रकाश में आ सकेंगे।

२२ मई, ९७ — समदोङ रिनपोछे
वैशाख पूर्णिमा — निदेशक

དཔར་སྐྲུན་ཆེད་བརྗོད།

༄༅། །མཁས་ཤིང་གྲུབ་པ་བརྙེས་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ཉམས་མྱོང་སློང་བརྗོད་ཀྱི་རྩུལ་དུ་བརྩམས་པའི་གྲོལ་བའི་རང་བཞིན་ཅན་གྱི་བསྟན་བཅོས་རྩུང་ངུ་མང་དག་ཅིག་ཡིག་ཚོགས་ཉུང་བས་གླེགས་བམ་གྱི་གཟུགས་ཚད་རྩུང་རྐྱེན་ཕལ་ཆེར་དཔར་སྐྲུན་མ་བྱུང་བར་བདང་སྙོམས་སུ་ལུས་ཏེ་དེའི་གནད་ཆེའི་བརྗོད་དོན་རྣམས་དོན་གཉེར་ཅན་མང་པོའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་མ་གྱུར་པའི་གནས་རྩུལ་འདི་ཧ་ལམ་ཆོས་ལུགས་ཡོངས་རྫོགས་མཚུངས་པར་མཐོང་བས། ནང་པའི་རིག་གཞུང་རྣམས་སུ་ཁ་འཐོར་དུ་བཞུགས་པའི་གལ་ཆེའི་དཔེ་ཚན་རྩུང་ངུ་གང་ཐོབ་ཅིག་ རྣིའི་དུས་དེབ་ནང་རིམ་བཞིན་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་པ་དེ་དག་ད་ལམ་ཕྱོགས་བསྡུས་ཀྱིས་"སངས་རྒྱས་པའི་དཔེ་ཚན་རྩུང་ངུ་བསྡུས་པ"ཞེས་པའི་དེབ་གཟུགས་སུ་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ཤིང་། དཔེ་ཚན་དེ་ཚོའི་ནང་ནས་བོད་འགྱུར་ཡོད་པ་རྣམས་ཀྱི་བོད་དཔེ་ཡང་མཉམ་དུ་དཔར་སྐྲུན་ཞུས་ན་དཔེ་ཚན་དེ་ཚོ་ཚད་འཛིན་ཐུབ་པ་ཡོང་རྒྱུ་མ་ཟད། བོད་སྐད་ཐོག་ངོ་སྤྲོད་གནང་མཁན་རྣམས་ལའང་ཕན་ཐོགས་ཡོང་རྒྱུ་སྙམ། དེབ་གཟུགས་གླེགས་བམ་དང་པོ་འདིའི་ནང་དཔེ་ཚན་རྩུང་ངུ་བཅུ་གཅིག་ཡོད་པ་དེ་ཚོའི་ངོ་སྤྲོད་མདོར་བསྡུས་རྣིའི་དུས་དེབ་ཁག་ནང་ཐོན་ཡོད།

ཆེས་དཀོན་པའི་ནང་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་འཆར་གཞིའི་ངེས་སྟོན་པ་དཔལ་ལྡན་ཇནྭཛནཔུཏྲེཡས་ཞུ་དག་ངེས་འདྲོང་གནང་བར་ཁོང་ལ་ལེགས་སོ་བསྔགས་བརྗོད་ཞུ་རྒྱུ་མ་ཟད། མ་འོངས་པར་ཡང་འདིའི་བོད་

ཕྲེང་མུ་མཐུད་དཔར་སྐྲུན་ཞུ་ཐུབ་པ་དང་། དེ་སྔོན་དཔར་དུ་མ་ཐོན་པའི་དཔེ་ཚན་ཆུང་ངུ་མང་པོ་དཔར་ཐོན་ཐུབ་པའི་སྨོན་འདུན་བཅས། ཝཱ་ཎ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་བློ་བཟང་བསྟན་འཛིན་གྱིས་

༡༩༩༧ ཕྱི་ཟླ་ ༥ ཚེས་ ༣༣ བཟང་པོར་བྲིས།

विषय-सूची

प्रस्तुत ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय

१. अष्टसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमितापिण्डार्थ:सटीक: (नवश्लोकी)

अष्टसाहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता का सार क्या है ? इसे श्री कम्बलाम्बरपाद ने ९ श्लोकों में व्यक्त किया है । इसकी टीका भी संभवत: उन्होंने स्वयं की है । इसमें १४ पद्य हैं । प्रथम मंगलाचरण अभिसमयालंकार का है । इसके बाद चार श्लोकों में टीका का उपोद्घात है और अन्तिम श्लोक अनुशंसा है । बीच के ९ श्लोक 'कर्मप्रभावं' से 'सर्वमाकाशलक्षणम्' तक मूल रचना है । इसका भोटानुवाद भी उपलब्ध है, जो साथ में दिया जा रहा है ।

२. क्रियासंग्रहकारिका:

बौद्ध वाङ्मय में कुलदत्तकृत **क्रियासंग्रह पञ्जिका** सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। पञ्जिका शब्द प्राय: व्याख्या अर्थ में प्रयुक्त होता है इसी से सन्देह होता था कि क्या यह किसी मूलग्रन्थ की व्याख्या है ? संयोग से राष्ट्रीय संग्रहालय नेपाल के सूचीपत्र भाग ७, खण्ड १, पृष्ठ १२१ में श्रीनागार्जुनपाद के एक ग्रन्थ क्रियासंग्रहकारिका का उल्लेख मिला, जिसका केवल अन्तिमपत्र ही उन्हें प्राप्त हुआ था, उस पत्र में जो कारिकाएँ लिखी गई थीं वे ६, ७, ८ प्रकरणों की आरम्भिक कारिकाएँ थीं, इससे यह अनुमान सही सिद्ध हो गया कि श्रीनागार्जुनपाद ने इन १० कारिकाओं में सम्पूर्ण क्रियासंग्रह की विधि की सूचना दी थी और श्री कुलदत्त ने प्रत्येक प्रकरण के प्रारम्भ में इनमें से एक-एक कारिका लेकर उसमें सूचित विषयों की विस्तृत विधि अपनी पञ्जिका में दी है और प्रसंगवशात् आये हुए अन्य विषयों पर भी विवेचन किया है, जैसे कारिका में निर्देश है 'परीक्षागुरुशिष्याणां' पञ्जिका में दोनों की परीक्षा का पूरा विवरण दे दिया है, इसी प्रकार केवल इन्हीं १० कारिकाओं के आधार पर कुलदत्त का यह विशाल ग्रन्थ तैयार हो गया है । इन कारिकाओं का भोटानुवाद भी साथ में दिया जा रहा है ।

३. गुरुपञ्चाशिका

विश्व के सभी मतों और सम्प्रदायों में गुरु की महत्ता को अक्षुण्ण रूप से स्वीकार किया गया है । गुरु ही अज्ञान को दूर करता है, इष्टदेव की प्राप्ति कराता है और मोक्ष प्राप्ति का उपाय बताता है । गुरु की महिमा पर शास्त्रों में बहुत कुछ कहा गया है । प्रस्तुत ग्रन्थ गुरुपञ्चाशिका सुप्रसिद्ध महाकवि अश्वघोष की रचना है । इसमें गुरु की महिमा के साथ ही शिष्य को गुरु के साथ कैसा व्यवहार और आचरण करना चाहिये यह भी बताया गया है ।

इस ग्रन्थ की मूल संस्कृत मातृका उपलब्ध नहीं थी । न्यू कैटलागस् कैटलागरम् (भाग ६, पृष्ठ ७२) की सूचनानुसार किन्हीं प्रकीर्णपत्रों के आधार पर इसके १ से ३३ श्लोकों को श्री सिल्वाँ लेवी ने फ्रेंच अनुवाद के साथ Autour d' Aśvaghoṣa शीर्षक से J.A. Vol. 215 में 1929 में प्रकाशित किया था । सौभाग्य से भारतीय उपाध्याय पद्माकर वर्मा और तिब्बती अनुवादक भिक्षु रत्नभद्र द्वारा किया हुआ इसका तिब्बती अनुवाद तो० सं. ३७२१ में सुरक्षित है और इस पर आचार्य चोंखापा की टीका भी उपलब्ध है, जो कलेक्टेड वर्क्स ऑफ चोंखापा, भाग- क० पृ० ३१५ में प्राप्त है । इसी उपलब्ध तिब्बती साहित्य के आधार पर हमने उक्त ३३ श्लोकों को शुद्ध कर तथा ३४ से ५० तक शेष १७ श्लोकों का तिब्बती से संस्कृत में रूपान्तर करके इसे पूर्ण किया है । इसका भोटानुवाद भी साथ में दिया जा रहा है ।

४. गुह्यवज्रविलासिनीसाधनम् (योगिनीसर्वस्वः)

गुह्यवज्रविलासिनी साधन अथवा योगिनीसर्वस्व सिद्धाचार्य शबरपाद की रचना है, ये ८४ सिद्धों में प्रमुखरूप से गिने जाते हैं । हमने इनका परिचय धीः अंक १७, पृष्ठ ५-६ पर दिया है । इस ग्रन्थ में इन्होंने श्लोक १-२ में मंगलाचरण, ३ से १० तक अपना परिचय तथा ग्रन्थरचना का उद्देश्य, ११ से १६ तक इस साधन का उपदेश किसे देना चाहिये और किसे नहीं, यह प्रतिपादन किया है । श्लोक १७ से ३० तक साधन की प्रारम्भिक तैयारियाँ बताई हैं । ३१ से

साधनविधि प्रारम्भ की है । मण्डलरचना, पुष्पपातन द्वारा संस्कार, शून्यता भावना, देवी के पंचाक्षर का न्यास, सूर्यमण्डल की भावना, उसमें धर्मोदया के स्वरूप का ध्यान और इसके साथ ही सहजासक्त चेता १६वर्षीय पद्मनर्तेश्वर का सबीज ध्यान, दोनों के सुरत सुख से युक्त अपने को समझना और देवी के साथ विनोद की भावना, मण्डलपूजा, धूपादि से गुह्यमण्डलपूजा, देवी के व पद्मनर्तेश्वर के अवयवों का पूजन, रमण के लिये प्रार्थना में गाथागान, चित्तस्मरणपूर्वक नवपुष्पि प्रयोग, नवपुष्पि की परिभाषा और प्रयोगविधि, इस प्रकार विलासिनी के साथ आत्मविग्रह की क्रीडाभावना, भावनाखिन्न होने पर बाँये हाथ से पञ्चाक्षर मंत्र का जप, दोलाजाप का लक्षण और उसकी विधि, इससे जगत्क्लेश के छेदन और अविद्यादि के लय की भावना करना, इस प्रकार समाधिस्थ होकर निश्चल हो अभ्यास करने से महामुद्रा की सिद्धि । विद्या से उत्पन्न वज्रपीठ पर मण्डलादि बनाकर पूर्ववत् उन दोनों का ध्यान जप आदि करना, नित्य रात्रि के चौथे प्रहर में पूजा करना, नित्यपूजाविधि, पंचाक्षर मंत्र इसका उद्धार और जप की विधि, जपमाला के द्रव्य, फलश्रुति, बिना गुरु के उपदेश के साधन न करने का विधान और महायानानुयायियों की विशेषता कि इस प्रकार के साधन से बिना किसी अभ्यास के तथता को प्राप्त करते हैं, संक्षेप में ये ही विषय इसमें वर्णित हैं । इसका भोटानुवाद उपलब्ध नहीं है ।

५. गुह्यावली

इस ग्रन्थ के रचयिता को किसी ने दउड़ीपाद, किसी ने धौलीपाद, किसी ने दौळीपाद नाम से लिखा है, अभी तक जो सिद्धों की सूचियाँ बनी हैं उनमें कहीं यह नाम नहीं है केवल अभयदत्त की सूची में ७०वीं संख्या में 'धहुलीपा' यह नाम आया है । संभवत: इसी को लोगों ने उक्त नामों से ग्रहण किया हो । इनकी यह एक मात्र रचना उपलब्ध है । इसके प्रारम्भ के ३ श्लोकों पर टीका भी उपलब्ध हुई है जिसका विवरण हमने धी: अंक ८ में दिया है । उसके प्रारम्भ में टीकाकार ने इन्हें बड़े आदर से महामुद्रासिद्ध कहा है । इसके उद्धरण जिन ग्रन्थों में प्राप्त हुए हैं उन्हें धी: के 'लुप्तबौद्धवचन संग्रह' स्तम्भ में संगृहीत किया गया

है। यह केवल २५ पद्यों का लघु ग्रन्थ है किन्तु ग्रन्थकार ने प्रत्येक पद्य में गुरु की महत्ता दर्शाते हुए सिद्ध किया है कि गुरु से स्वाधिष्ठान प्राप्त कर योग्य साधक इस गुह्यसिद्धि द्वारा जिस लोकोत्तर आनन्द को प्राप्त करता है वह वर्णनातीत है । इसके प्रत्येक पद्य से स्पष्ट प्रतीत होता है कि रचनाकार वास्तव में स्वयं महामुद्रासिद्ध है और उसने उस अनुत्तर सुख का अनुभव किया है । इस ग्रन्थ का तिब्बती अनुवाद उपलब्ध नहीं है ।

६. तत्त्वरत्नावलोकः

तत्त्वरत्नावलोक अथवा तत्त्वरत्नालोक सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीवागीश्वरकीर्ति की रचना है । सौभाग्य से इसका विवरण (व्याख्या) भी उन्होंने स्वयं किया है । इसमें तत्त्व और साध्य के स्वरूप तथा अन्तर का विवेचन है तथा विभिन्न आचार्यों के मतों से भ्रान्त और निर्णय न कर पाने वाले विनेयजनों की स्पष्ट प्रतिपत्ति के लिये पारमितानयवादियों द्वारा चार प्रकार के तथा मन्त्रनयवादियों द्वारा सात प्रकार के साध्य का स्वरूप बता दिया है । चतुर्थाभिषेक के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्या द्वारा विभिन्न भ्रान्तियों का निराकरण किया गया है । ग्रन्थ यद्यपि लघुकाय है किन्तु विषय और प्रतिपादन शैली की दृष्टि से अनुकरणीय एवं महत्त्वपूर्ण है । इसमें केवल २१ श्लोक हैं, जिनमें प्रतिपादित विषय इस प्रकार हैं—

विषय	श्लोक
मङ्गलाचरण	१
ग्रन्थरचना का प्रयोजन	२
तत्त्व और साध्य के स्वरूप की प्रतीति विषयक जनप्रवाद	३
वेदान्तियों तथा सश्रावक खड्गजिनों द्वारा मान्य साध्यस्वरूप	४
पारमितानयवादियों द्वारा मान्य चार प्रकार का साध्यस्वरूप	५-७
मन्त्रनयोपदिष्ट सात प्रकार का साध्यस्वरूप	८-१४
प्रज्ञाज्ञानोपदेशानन्तर अमृतरूप बोधिचित्त ग्रहण की चतुर्थाभिषेकता का खण्डन	१५

इसका भोटानुवाद भी साथ में दिया जा रहा है ।

७. नानासिद्धोपदेशाः

साधना की अन्तिम परिणति है महामुद्रा । इसकी सिद्धि होने पर ही बुद्धत्व की प्राप्ति होती है । इस महामुद्रा की सिद्धि के लिये जिन्होंने प्रयत्न किया तथा सिद्धि प्राप्त होने पर उन्हें जो अनुभव हुआ उसी को उन्होंने अपने उपदेश के रूप में व्यक्त किया है । इसमें १४ सिद्धों के महामुद्राविषयक उपदेशों का संग्रह है । इसका तिब्बती अनुवाद उपलब्ध नहीं है ।

८. पञ्चाकारः

''पञ्चबुद्धात्मकु सर्वजगोऽयम्'' यह एक मान्य सिद्धान्त है । इसी के अनुसार हेतुफलात्मक भवनिर्वाणैकरसता ही जगत् है, यह प्रतिपादन करने के लिये पञ्चबुद्धों में किस बुद्ध का जगत् के किस पदार्थ से सम्बन्ध है यह दर्शाने हेतु 'पञ्चाकार' ग्रन्थ की रचना हुई है । इसी विषय को आचार्य अद्वयवज्र ने भी इसी नाम से प्रदर्शित किया है[१] । हमें यह भट्टरत्नाकर की रचना प्राप्त हुई है, जिसे यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है । इसकी दो मातृकाएँ उपलब्ध हुईं पर दोनों में प्रारम्भ के ३ पद्य नहीं हैं । इसमें पञ्चबुद्धों और उनकी मुद्राओं (शक्तियों) के स्वरूप का वर्णन है और जागतिक पदार्थों से उनका सम्बन्ध भी ।

---

१. द्रष्टव्य- अद्वयवज्रसंग्रह पृ० ४०, गा० ओ० सी० बड़ौदा ।

९. पञ्चाकाराभिसम्बोधिः

यह ग्रन्थ भी उपर्युक्त पञ्चाकार ग्रन्थ के साथ ही लिखा हुआ मिला है । इसका रचनाकार ज्ञात नहीं है । पञ्चाकार में जो विषय संक्षेप में पद्यों में दिया है वही इसमें विस्तार से गद्य में दे दिया है । सेकोद्देश के टीकाकार ने रूपादिवासनात्मकपञ्चज्ञानसंवित्ति को पञ्चाकाराभिसम्बोधि कहा है, तात्पर्य वही है ।

इन दोनों ग्रन्थों का तिब्बती अनुवाद उपलब्ध नहीं है ।

१०. योगावतारः

जैसा कि ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें योगी को साधना कैसे करनी चाहिये, यह बताया गया है । केवल ८१/२ कारिकाओं में ग्रन्थकार ने आसनोपवेशन से लेकर ग्राह्यग्राहकभाव की निर्वृति, मनःसमापत्ति, तथता ज्ञान द्वारा अविकल्पत्व, सर्वाकारशून्यता, स्वाकारमात्रशेषत्व, इस प्रकार प्रज्ञावेदित निरोध की प्राप्ति आदि सारी प्रक्रियाओं की सूची दे दी है, जैसे क्रियासंग्रह-कारिका में आर्य नागार्जुन ने सम्पूर्ण क्रियाओं की सूची दी है और कुलदत्त ने पञ्जिका में उन सारी क्रियाओं की विधि देकर विशाल ग्रन्थ तैयार किया है उसी प्रकार इस सूची के आधार पर भी योगसाधना की विधि पर विशाल ग्रन्थ तैयार हो सकता है । यद्यपि ये सारे विषय भिन्न-भिन्न साधनाओं में स्वतन्त्ररूप से वर्णित हैं ।

इस ग्रन्थ का परिचय धीः अंक ४ पृष्ठ २१ में दिया गया था उस समय हमें जो मातृका उपलब्ध हुई उसके अन्त में ''कृतिरियं नागार्जुनपादानाम्'' लिखा हुआ था किन्तु इसका तिब्बती अनुवाद तो० ४०७४ देखने पर ज्ञात हुआ कि यह आचार्य दिङ्नाग की कृति है । इस ग्रन्थ को तिब्बती पाठ के आधार पर संस्कृत में पुनरुद्धार करके श्री दुर्गाचरण चटर्जी ने जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल पृ० २४e-२५e में योगावतारोपदेश नाम से प्रकाशित किया था, संभवतः तब उन्हें मूल ग्रन्थ नहीं मिला था । म० म० हरप्रसाद शास्त्री ने भी

दरबार लाईब्रेरी नेपाल के कैटलाग में इसका विवरण दिया है । इसका भोटानुवाद संलग्न है ।

११. स्वाधिष्ठानप्रभेदः

सेकोद्देश टीका (पृ० ४०) में स्वाधिष्ठान की परिभाषा दी है—"स्वाधिष्ठानं नाम संवृतेः सत्यदर्शनम्", विमलप्रभा (भा० १ पृ० ७) में भी "स्वाधिष्ठानं शून्ये त्रैधातुकदर्शनं नाम" अर्थात् स्व-देह में ही आराध्य के स्वरूप की स्थापना को स्वाधिष्ठान कहा है । बौद्धेतर साधनाओं में भी 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' यह नियम सर्वत्र प्रचलित है, आचार्य घण्टावज्रपाद ने इसे इन शब्दों में स्पष्ट किया है—

हृदये वर्तते नित्यं बिन्दुरेको निरक्षरः ।
तं च भावयतां पुंसां ज्ञानमुत्पद्यते ध्रुवम् ॥

अर्थात् चक्षुरादि पञ्चविज्ञानों का चित्त आलयविज्ञान में समारोप करके निश्चल हो, पुनः हृदय में उनका निक्षेप करने पर बिन्दुरूप दिखाई पड़ता है । उसे देखने पर ज्ञान उत्पन्न होता है और इससे बुद्धत्व की प्राप्ति होती है । बुद्धत्व प्राप्ति के लिये उन्होंने पाँच क्रमों का निर्देश किया है जिनमें पहला स्वाधिष्ठानक्रम है । शेष विश्ववज्रक्रम, मणिपूरक्रम, जालन्धरक्रम और ओडियानक्रम हैं । घण्टावज्रपाद का कहना है कि अधिष्ठान क्रम का अभ्यास प्रारम्भ में गुरु का अधिष्ठान करके करना चाहिये । इसमें किसी प्रकार की साधना, ध्यान, पूजा, आदि नहीं करनी पड़ती, केवल सर्वात्मना गुरु के प्रति समर्पण और उनकी आज्ञा का अनिवार्य रूप से पालन से ही शिष्य गुरु के गुणों को प्राप्त कर लेता है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ **स्वाधिष्ठानप्रभेद** में आर्यदेवपाद ने माया और स्वाधिष्ठान द्वारा प्राप्त ज्ञान का भेद दर्शाया है और स्वाधिष्ठान की प्रक्रिया तथा उससे होने वाले फलों का निर्देश किया है । उनका कहना है कि "मेरा चित्तमय ही सम्पूर्ण जगत् है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं" इस प्रकार स्वाधिष्ठान द्वारा माया की भावना और तथता का अनुसरण करता हुआ प्राणी भव (जन्म-मरण) की कल्पना से मुक्त हो जाता है । इसका भोटानुवाद साथ में दिया गया है ।

*

कम्बलाम्बरपादानाम्

अष्टसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमितापिण्डार्थः सटीकः

(नवश्लोकी)

AṢṬASĀHASRIKĀPRAJÑĀPĀRAMITĀ PIṆḌĀRTHA

(NAVAŚLOKĪ)

WITH

COMMENTARY

OF

KAMBALĀMBARAPĀDA

अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितापिण्डार्थसटीकः

(नवश्लोकी)

ॐ नमो भगवत्यै आर्यप्रज्ञापारमितायै ।

या सर्वज्ञतया नयत्युपशमं शान्त्यैषिणः श्रावकान्
या मार्गज्ञतया जगद्धितकृतां लोकार्थसम्पादिका ।
सर्वाकारमिदं वदन्ति मुनयो विश्वं यया संगता-
स्तस्यै श्रावकबोधिसत्त्वगणिनो बुद्धस्य मात्रे नमः ॥

प्रज्ञापारमिताम्बो(म्भो)धौ शुभरत्नाकरे स्वयम् ।
सर्वाः पारमितास्तत्र तादात्म्येन व्यवस्थिताः ॥

निष्प्रपञ्चा निराभासा निर्विकल्पा निरालया ।
निःस्वभावा परा सूक्ष्मा बिन्दुनादविवर्जिता ॥

प्रज्ञापारमिता माता सर्वबुद्धोदया परा ।
त्रयानुपलब्धिरूपा च सर्वज्ञज्ञानगोचरा ॥

प्रज्ञापारमितां सम्यग् यो भावयितुमिच्छति ।
तेनार्थतो नवश्लोकाश्चिन्तनीयाः समासतः ॥

प्रज्ञायाः श्रुच्चिन्ताभावनालक्षणायाः पारमिता पारंगता, प्रकर्षपर्यन्तगमनात् सर्वसङ्कल्परहितेति यावत्। तां सम्यक् यो भावयितुमविरताकारेण मनसि कर्तुमिच्छति अभिलषति यः, तेन नवश्लोका वक्ष्यमाणाऽर्थतोऽर्थद्वारेण चिन्तनीयाश्चिन्तयितव्याः। किं समासतो विस्तरतो वेत्याह। समासतः संक्षेपतः। यतः संक्षिप्तोक्तं मन्दधियोऽपि विज्ञातुं शक्नुवन्तीत्यभिप्रायः । तानेव नवश्लोकान् क्रमेण दर्शयन्नाह—

कर्मप्रभावसंभूतं षडायतनलक्षणम् ।
पुनर्भवमिति ख्यातं प्रतिभासोपमं हि तत् ॥ १ ॥

कर्म शुभाशुभं तस्य कर्मणः प्रभावः कर्मप्रभावः कर्माधिपत्यं यतो यातं संभूतम्, किं तत् ? षडायतनलक्षणम्। आयं विज्ञानं तन्वन्तीत्यायतनानि, आध्यात्मिकानि षट्। चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायमनांसीति षडायतनानि। लक्षणं चिह्नं यस्य तत् षडायतनलक्षणम्। तदीदृशं पुनर्भवं पुनरुत्पत्तिक्रममित्येवं ख्यातं प्रसिद्धम्, विनिश्चितमिति यावत्। तत् पुनः परमार्थतः किं स्वभावम् ? प्रतिभासोपमं हि तत् प्रतिभासस्येव सादृश्यं सारूप्यं यस्य तत् प्रतिभासोपमम्। कर्तृकर्मकरणव्यापाररहितत्वात्, शून्यमिति यावत्॥ १ ॥

बाह्यान्यपि रूपादीन्यायतनानि यत्स्वभावानि तानि क्रमेण दर्शयन्नाह—

निर्मितं नगरं यद्वद् विलोकयति निर्मितः ।
तद्वत् पश्यति रूपाणि कर्मभिर्निर्मितं जगत् ॥ २ ॥

यथा निर्मितं नगरं यदपरो निर्मितकः पश्यति । तच्च तदयमस्ति, अभूतसंभूतत्वात्। द्रष्टाद्रष्टव्ययोस्तद्वद्रूपाणि बहिर्भासमानानि कर्मभिर्निर्मितं जगत् त्रैलोक्यं पश्यतीत्येवं शेषम्, निर्मितत्वेन तद्विशेषादित्यभिप्रायः ॥ २ ॥

प्रतिश्रुत्कोपमत्वं शब्दानां प्रतिपादयितुमाह—

धर्मं देशयतः शब्दा ये केचित् श्रुतिगोचराः ।
प्रतिश्रुत्कोपमाः सर्वे प्रोद्भूतश्रुतिनः श्रुताः ॥ ३ ॥

धर्मं देशयत इत्युपदेष्टराधिपत्याज्जातास्तदाभासाः शब्दाः श्रुतिगोचराः । श्रुतिविषया ये केचिदन्ये तत्समानजातीयाः । प्रतिश्रुत्कमुपमा येषां ते प्रतिश्रुत्कोपमाः । अत एवाविशेषेणाह—सर्व इति। प्रोद्भूतञ्च तत्र

श्रुतं चेति प्रोद्भूतश्रुतिनः। श्रुता उपलब्धा ये केचित् शब्दाः। सर्वे प्रतिश्रुत्कोपमाः संवृत्या इति यावत् ॥ ३ ॥

स्वप्नसमत्वमपि प्रतिपादयितुमाह—

आघ्रातं स्वादितं यच्च स्पृष्टं विषयलालसैः ।
स्वप्नतुल्यमिदं सर्वमुपलब्धं न विद्यते ॥ ४ ॥

आघ्रातं घ्राणविज्ञानेन विषयीकृतं गन्धद्रव्यम् । स्वादितं रसाख्यम्। स्प्रष्टव्याख्यं यच्चेति । तदपि विषयलालसा विषयकांक्षिणः तैरिति प्रत्येकमभिसंबुद्धैः तैर्विषयलालसैर्यदुपभुक्तं गन्धद्रव्यं तदुपलब्धं न विद्यते । यतः स्वप्नेन तुल्यं स्वप्नतुल्यं तदविशेषादित्यभिप्रायः ॥ ४ ॥

ननु चक्षुरादीन्याध्यात्मिकानि बाह्यान्यपि रूपाण्यायतनानि सन्ति । कथं तर्हि यदुक्तं क्रियावान् चेष्टत इत्याशङ्कामपाकर्तुमाह—

मायायन्त्रो नरो यद्वद् भिन्नां चेष्टां करोति वै ।
तद्वच्चेष्टां करोत्येव देहयन्त्रो निरात्मकः ॥ ५ ॥

मायैव यन्त्रदेहप्रतिरूपं यस्य नरस्य स मायायन्त्रो नरः, स चेष्टां करोति । यद्वत् यथैव । न तत्र क्रिया कारकं चास्ति । तद्वत् तथैव चेष्टां कायव्यापारं गमनादिलक्षणां भिन्नां नानाप्रकारां करोति। कोऽसौ देहयन्त्रः। देह एव यन्त्रं यस्य स देहयन्त्रो निरात्मकः निर्गत आत्मा यस्मादिति निरात्मकः। आत्मरहितोऽतोऽत्र क्रियावान् परमार्थतः कश्चिदस्तीति। वै शब्दो अक्षमायाम् । न क्षम्यत एवैतद्यदुत(ता)र्थक्रियावान्। नात्मेति निरात्मन्यपि मायायन्त्रेण प्रतिरूपके तथा दर्शनात्तथात्रापि तद्विशेषादित्यवशेषम् ॥ ५ ॥

मरीच्युपमत्वमपि प्रतिपादयतुमाह—

नानोपलब्धयोगाश्च प्रतिक्षणसमुद्भवाः ।
मरीचिसदृशा ह्येते दृष्टनष्टा विलक्षणाः ॥ ६ ॥

नानाभूता उपलब्धयस्तदुपाधिभेदपरिकल्पिता योगाश्चेति। या अपि प्रतिक्षणसमुद्भवाः। क्षणं क्षणं प्रतिक्षणम्, समुद्भवन्तीति समुद्भवाः, प्रतिक्षणं समुद्भवो यासां ताः प्रतिक्षणसमुद्भवाः, क्षणिका इति यावत् । ताः पुनः परमार्थतः किंस्वभावाः? मरीचिभिः सदृशाः भ्रमन्तः खमादित्यसंपर्काद्यथा मरीचिनिचया आदौ दृष्टा पश्चान्नष्टास्तथैवैताः । उपलब्धयो विषयविज्ञप्तयो निःस्वभावाः, विसदृशाः पूर्वापरासंघटित-स्वभावत्वात्। विसदृशस्वभावा बालास्त्वेकत्वेनाध्यवसीय प्रवर्तन्त इति ॥ ६ ॥

संवृतिसत्यगतिग्राह्यग्राहकाद्वयाभासशून्यतया प्रकृतिप्रभास्वरमाद्यनुत्पन्नचित्तप्रभावत्वं दर्शयितुं प्रतिबिम्बोपमत्वं ख्यापयितुमाह—

प्रतिबिम्बनिभं ग्राह्यमनादौ चित्तसंभवम् ।
तदाकारं च विज्ञानमन्योन्यप्रतिबिम्बवत् ॥ ७ ॥

प्रतिबिम्बस्य निभं सादृश्यं यस्य तत्प्रतिबिम्बनिभम् आदर्शादि-मण्डलान्तर्गतमुखादिसमानकम्। किं तत् ? चित्तात् संभवतीति चित्तसंभवं तन्मात्रप्रतिबद्धम् । बाह्यवस्तुनिरपेक्षमिति । यावद् ग्राह्यबहिर्मुखाश्वास-वासनाविधेयीकृतग्राह्यत्वेनाध्यवसितम्, अद्वयरूपतया प्रतिभासमानम्, अनादौ अनादिकालीनचित्तविठयितं तत्प्रतिबिम्बसमम्, समानेतरकाल-त्वेन विचार्यमाणस्यासत्त्वान्न केवलं तदेव, तदाकारं च विज्ञानं तस्यैवाकारः सारूप्यं यस्य तत्तदाकारम् । च शब्दः समुच्चये । न केवलं तदेव तत्तदाकारमपि तद् ग्राहकमपीति । ग्राह्यवैधुर्याद् ग्राहकमप्यस-दित्यभिप्रायः । संबन्धिशब्दत्वेन परस्परमन्योन्यप्रतिबिम्बवत् प्रतिबिम्ब-सदृशं ग्राह्यग्राहकमित्यन्योन्यमित्यपेक्षणीयम् । तद्द्वयानुपलम्भस्यान्योन्या-नुपलम्भरूपस्य प्रभास्वरस्य चित्तधर्मत्वादित्यभिप्रायः । तस्यापि चित्तस्य प्रकृतिप्रभास्वरस्य व्यपगतग्राह्यग्राहकाकारस्य रागाद्यविद्यामलव्यपगमाद् विशुद्धस्यापि सत्तो(त्ता) अभिनिवेशपरिहारार्थः ॥ ७ ॥

उदकचन्द्रोपमत्वं ख्यापयितुमाह—

ध्यायिनां स्वच्छसन्ताने यज्ज्ञानेन्दुसमुद्भवम् ।
उदकचन्द्रोपमं तद्धि प्रत्यक्षं च न विद्यते ॥८॥

ध्यानं चित्तैकाग्रतालक्षणम्, तद्विद्यते येषां ते ध्यायिनः चित्तवशिनः, स्वच्छस्वभाव[स्या]नाविलत्वात् । कायवाक्चित्तात्मसन्तानश्चेत्यनुत्तर-प्रतीत्यसमुत्पादात्मको ह्रीःकाराक्षरसंप्रज्वलितचित्तसन्तानः शरदमृतरश्मि-रेफपरिणताग्निमण्डलारूढः, अ इति नादोपवृंहिताष्टदलकमलमध्यगत-षोडशकलाकलापात्मकः ककाराक्षरतारागणपरियुतनाभिदेशावस्थितबुद्ध पद्म इत्युच्यते। तत्कलापरिणतचन्द्रमण्डलं दृष्ट्वा तस्योपरि स्वच्छसन्ताने हूंकारज्वलद्भासुरं तद्विनिर्गताग्निज्वालाज्वलितमात्मानमनुपश्यतां यज्ज्ञा-नेन्दुसमुद्भवं बोधिचित्तवज्रज्ञानेन्दुसकलजगदवभासमानस्वरूपत्वात् तस्मादुद्भवतीति ज्ञानेन्दुसमुद्भवः, तं वज्रपरिणतं प्रज्ञोपायात्मकत्वात् । निरुपस(म)निर्वाणलक्षणप्रज्ञादेव्यालिङ्गितात्मभावसरभससमापत्तियुतम्, प्रावृण्मेघसमप्रभनिदर्शितनीलभावम्, अष्टभिर्भुजैर्भूषितम्, वज्रखड्गबा-णाङ्कुशव्यग्रदक्षिणकरम्, चक्रचापघण्टापाशव्यग्रवामकरम्, त्रिमुखम्, शरीरसमानवर्णप्रथममुखयुतम्, दक्षिणेतरपीतशुक्लम्, घण्टासक्तमामकी-देवीसक्तबाहुयुगम्, सर्वालङ्कारभूषितम्, अक्षोभ्यनाथमुकुटिनम्, अन्यो-न्यानुगतमुखचुम्बनम्, ईषद्विकसितनयनयुगलम्, सत्त्वपर्यङ्कासीनम्, अतसी-कुसुमसंकाशम्, मामकीदेवीस्तनयुगलनिपीडितसरभसारूढम्, सूर्यमण्डल-प्रभास्वरवज्रसत्त्वरूपम्, महासुखस्वभावम्, क्षरदमृतधाराभिषिच्यमान-शरीरम्, प्रज्ञोपायाद्वयीभूतं चेति तथागतात्मकम्। उदकचन्द्रोपमम् उदक-चन्द्रवदुदकचन्द्रसदृशम् । हि शब्दो यस्मादर्थे । तस्मात् शून्येभ्य एव धर्मेभ्यः शून्या धर्माः प्रभवन्ति, धर्मेभ्य आद्यनुत्पन्नत्वादुदकचन्द्रोपमत्व-मुच्यते। अत एव धर्मधातुस्वभावत्वेन भावाभावाभिनिवेशाभावात्। प्रत्यक्षं च न विद्यत इति। तदीदृशं तत्त्वं सर्वधर्मानुपलम्भमन्तरेण साक्षात्कर्तु-मशक्यमिति साक्षात् करणोपायम् ॥८॥

सर्वधर्माणामाकाशसमत्वं प्रतिपादयितुमाह—

योगिनामपि यज्ज्ञानं तदप्याकाशलक्षणम् ।
तस्माज्ज्ञानं च ज्ञेयं च सर्वमाकाशलक्षणम् ॥ ९ ॥

ज्ञानमात्रसमापत्तिर्योग इत्यभिधीयते । योगशब्देन वज्र इत्यपि गृह्यते, स येषामस्ति [ते] योगिनः, तेषामपि यज्ज्ञानं सर्वधर्माभिनिवेश-लक्षणम्, प्रज्ञोपायाद्वयीभूतम्, भूतं चेत्तथागतात्मकम्, तदपि न केवलं पूर्वस्कन्धधात्वायतनादिप्रपञ्चस्वभावम्, किन्त्वेतदपीति यावत् । तथा-गतात्मकमचलितधर्मधातुस्वभावम्, एकत्वेन तथागतादिस्वभावविरहाद्य-नुत्पन्नत्वात् । अभाव इत्यपि न शक्यं वक्तुम्, विप्रतिषेध्यभावाद्य-नुत्पन्नत्वान्न भाव इति । तदाह— आकाशसमं सर्वं प्रपञ्चरहितत्वात् । आकाशमिवाकाशम्, तदेव लक्षणं चिह्नं यस्य तदाकाशलक्षणम्, यत एवं कारणात् सर्वधर्माणामनावृत्तिस्वभावत्वेन, अत एव कारणाज्ज्ञानं त्रैधातु-कायत्तचित्तचैतसिकस्वरूपमाकाशलक्षणं ज्ञेयम् । यदुपदर्शितमविद्यानु-गमात्। सत्त्वभाजनलोकलक्षणं स्कन्धधात्वायतनानि(दि)प्रपञ्चस्वभावं ज्ञेयम् । ज्ञानविषयीकृतत्वेन ज्ञेयत्वमात्रानुबन्धितद्बोधत्वे ज्ञेयस्य तद्विषय-परिकल्पनाज्ज्ञेयत्वमुच्यते। सर्वज्ञज्ञानस्याद्वयाकाशसमतया एवमाह । सर्व-मिति निरवशेषम्, नैकदेशमात्रम् । यदाहुः श्रावकाः— पुद्गलमात्र-नैरात्म्यस्कन्धास्तु विद्यन्त इति । ते हि सोपधिशेषनिर्वाणमिच्छन्ति । अन्ये तु निरुपधिशेषमुक्तिलक्षणम्। यदाह **समाधिराजे**—''सर्वेण सर्वं भवसर्व-शून्यं प्रादेशिकी शून्यता तीर्थिकानाम्''। यदयमत्रार्थः— न तज्जगति किञ्चिदस्ति यन्नाकाशलक्षणम्। अपितु सर्वमाकाशलक्षणं बोधिचित्त-स्वरूपमिति ॥ ९ ॥

तदीदृशं तत्त्वं नवश्लोकैरुपदिश्य बोधिसत्त्वस्य कुलगोत्राणां फलमुपदर्शयितुमाह—

इति चिन्तयतस्तत्त्वं सर्वभावेष्वनाश्रितम् ।
बोधिप्रणिधिचित्तं च ज्ञानमग्रं भविष्यति ॥ १० ॥

आर्याष्टसाहस्रिकायाः प्रज्ञापारमितायाः [नवश्लोक] पिण्डार्थः [सटीकः] समाप्तः ।

॥ कृतिरियं श्रीकम्बलाम्बरपादानाम् ॥



ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དགུ་པའི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། སྣགབདེཔྲཛྙཱཔཱརམིཏཱནབཤློཀཔིཎྜཨརྠཊཱིཀཱ། བོད་སྐད་དུ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་དོན་བསྡུས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དགུ་པའི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ངག་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་རྒྱ་མཚོ་སྟེ། །
དགེ་བ་རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་རང་ཉིད་ཡིན། །
ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་དག་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
དེ་རུ་དེ་ཡི་བདག་ཉིད་དག་གིས་གནས། །

སྤྲོས་པ་མེད་ཅིང་སྣང་བ་མེད། །
རྟོག་པ་མེད་ཅིང་སྐྱོན་དང་བྲལ། །
དངོས་པོ་མེད་ཅིང་ཤིན་ཏུ་ཕྲ། །
བློ་དང་སྒྲ་ནི་རྣམ་སྤངས་པའོ། །

ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་ཡུམ་ནི། །
སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་པའི་མཆོག །

1. ཕྱུ་དཔེར། (ཕིཏྲུ) ཐིག་ལེ།

རྗེས་སུ་མི་དམིགས་གསུམ་གྱི་ཚུལ། །
ཀུན་མཁྱེན་ཡེ་ཤེས་རྒྱུ་ཅན་གྱི། །

ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ནི། །
གང་ཞིག་ཡང་དག་བསྒོམ་འདོད་པས། །
དེས་ནི་ཚིགས་བཅད་དགུ་ཡི་དོན། །
མདོར་བསྡུས་པ་ནི་བསམ་པར་བྱ། །

ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཤེས་རབ་ནི་གང་ཐོས་པ་དང་། བསམ་པ་དང་། བསྒོམ་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ། །ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ནི་རབ་ཏུ་མཐར་ཐུག་པར་འགྲོ་བས་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུ་སྟེ། དེ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། དེ་གང་ཞིག་ཡང་དག་བསྒོམ་འདོད་པས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའི་རྣམ་པས་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་མངོན་པར་དགའ་བ་གང་ཡིན་པ་དེས་ནི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དགུ་པོ་[1]འོག་ནས་བཤད་པའི་དོན་ཞེས་པ་དོན་གྱི་སྒོ་ནས་བསམ་པར་བྱ་ཞིང་ཡིད་ལ་བྱའོ། །

ཅི་རྒྱས་པར་རམ་ཞེ་ན། དེ་མ་ཡིན་པར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་མདོར་བསྡུས་པ་ནི་ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ཉུང་དུ་བསྡུས་པའོ། །ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དགུ་པོ་དེ་ཉིད་རིམ་གྱིས་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

1. གསེར། དགུའི།

ལས་ཀྱི་མཐུ་ལས་ཀུན་བྱུང་བའི། |
སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་གི་མཚན་ཉིད་ཅན། |
ཡང་སྲིད་ཅེས་བྱར་གྲགས་པ་ནི། |
དེ་ནི་མིག་ཡོར་དག་དང་མཚུངས། ༡ |

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ལས་ནི་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བ་རྣམས་སོ། །ལས་དེ་ལས་བྱུང་བ་ནི་ལས་ཀྱི་མཐུ་ལས་ཞེས་བྱ་སྟེ། ལས་བདག་པོར་གྱུར་པའོ། །དེ་ལས་བྱུང་བ་ནི་ཡང་དག་པར་སྐྱེས་པ་སྟེ། དེ་གང་ཞེ་ན། སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་གི་མཚན་ཉིད་ཅན། །ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། སྐྱེ་བ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ། །དེ་རྒྱས་པར་བྱེད་པས་ན་སྐྱེ་མཆེད་དེ། ནང་གི་བདག་ཉིད་ཅན་མིག་དང་རྣ་བ་དང་། སྣ་དང་ལྕེ་དང་ལུས་དང་ཡིད་དང་དྲུག་ནི་སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་གི་མཚན་ཉིད་ཅན[1]ནི་མཚན་མ་སྟེ། ལས་ཀྱི་མཐུ་ལས་བྱུང་བའི་སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་གི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ། །དེ་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། ཡང་སྲིད་ཅེས་བྱ་སྟེ། ཡང་སྐྱེ་བར་བྱེད་པའི་ཆོས་ཅན་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །དེ་ལྟར་གྲགས་པ་ནི་རབ་ཏུ་བརྗོད་ཅིང་དེས[2]པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡིན་པ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། དེ་ནི་མིག་ཡོར་དག་དང་མཚུངས། །ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། མིག་ཡོར་ཉིད་འདྲ་ཞིང་མཚུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་མིག་ཡོར་དང་མཚུངས་པ་སྟེ།

1. གསེར། ཅན། མི་འདུག
2. གསེར། ངེས།

བྱེད་པ་པོ་ལས། །དང་བྱ་བ་རྣམས་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་སྟོང་པའོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །

ཕྱི་རོལ་གྱི་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་སྐྱེ་མཆེད་གང་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དེ་རིམ་བཞིན་དུ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

ཇི་ལྟར་སྒྱུལ་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ལ། །
སྒྱུལ་པ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་བཞིན། །
ལས་རྣམས་ཀྱིས་སྒྱུལ་འགྲོ་བ་ཡིས། །
གཟུགས་རྣམས་དེ་བཞིན་མཐོང་བར་འགྱུར། ༣ །

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ཇི་ལྟར་སྒྱུལ་པའི་གྲོང་ཁྱེར་དེ་ལ། དེ་ལས་གཞན་པའི་སྒྱུལ་པ་རྣམ་པར་ལྟ་བར་བྱེད་པ་ན། དེ་གཉིས་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པ་ལས་ཀུན་དུ་འབྱུང་བའི་ཕྱིར། བལྟ་བར་བྱ་བ་དང་ལྟ་བ་པོ་གཉི་ག་ཡང་དེ་དང་འདྲ་སྟེ། གཟུགས་རྣམས་དེ་བཞིན་དུ་ཕྱི་རོལ་དུ་སྣང་བར་གྱུར་པ་ན་ལས་ཀྱིས་སྒྱུལ་པར་འགྲོ་བས་ཁམས་གསུམ་པོར་མཐོང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། སྒྱུལ་པ་ཉིད་ཡིན་པར་ཁྱད་པར་མེད་དེ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །

སྒྲ་རྣམས་ནི་བྲག་ཅ་དང་མཚུངས་སོ་ཞེས་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

1.. གསེར། བྱེད་པ་པོ་འདི།

ཆོས་རྣམས་སྟོན་པའི་སྒྲ་དང་ནི། |
ཐོས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་གང་ཅིའང་རུང་། |
མཚན་བྱ་ཐོས་པ་བྱུང་གྱུར་པ། |
ཐམས་ཅད་བྲག་ཅ་ལྟ་བུ་ཡིན། ३ |

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ཆོས་རྣམས་སྟོན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྟོན་པ་པོའི་དབང་དུ་བྱས་པ་ལས་བྱུང་ཞིང་དེ་ལས་གྲག་པའི་སྒྲ་རྣམས་སོ། །ཐོས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་ནི་ཐོས་པའི་ཡུལ་དུ་གྱུར་པ་རྣམས་སོ། །གང་ཅིའང་རུང་ཞེས་བྱ་བ་ནི། གང་དེ་དང་རིགས་མཐུན་པ་རྣམས་[1]ཀྱང་ངོ་། །མཚན་བྱ་ཐོས་པ་བྱུང་གྱུར་པ། །ཞེས་པ་ནི་མཚན་པར་བྱ་བ་ཐོས་ཤིང་ཉེ་བར་དམིགས་པ་གང་ཅི་ཡང་རུང་བའི་སྒྲ་རྣམས་ཏེ། གང་ལས་ཐོས་པར་གྱུར་པ་ཡོད་པ་རྣམས་སོ། །དེ་བས་ན་ཁྱད་པར་མེད་པར་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་སྨོས་སོ། །བྲག་ཅ་ལྟ་བུ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་འདི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་བྲག་ཅ་དང་མཚུངས་པར་འབྱུང་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།།

སྐྱེས་བུའི་མི་ལམ་དང་འདྲ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར།

ཡུལ་ལ་ཆགས་པས་སྨོམ་པ་དང་། |
སྐྱང་དང་དེ་བཞིན་རིག་པ་རྣམས། |

1. གསེར། གཞན་རྣམས།

དམིགས་སུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ།
འདི་དག་ཐམས་ཅད་མི་ལམ་འདྲ། ༨

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ཡུལ་ལ་ཆགས་པས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་ཡུལ་འདོད་པ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཞེས་རེ་རེ་ལའང་སྦྱར་བར་བྱའོ། །སྨོམ་པ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐའི་རྣམ་པར་ཤེས་པས་ཡུལ་དུ་བྱས་པ་སྟེ། དྲིའི་རྫས་རྣམས་སོ། །མྱང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རོ་ཞེས་བྱ་བ་རྣམས་སོ། །དེ་བཞིན་རེག་པ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རེག་བྱ་རྣམས་ཏེ། དེ་ལྟར་ཡུལ་ལ་ཆགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་གང་ཞིག་སྤྱོད་པའི་དྲི་དང་རོ་དང་རེག་བྱ་ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་པ་དེ་རྣམས་ནི་དམིགས་སུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འདི་དག་ཐམས་ཅད་མི་ལམ་འདྲ། །ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། དེ་རྣམས་ནི་མི་ལམ་དང་མཚུངས་ཤིང་ཁྱད་པར་མེད་དོ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །

ཅི་གལ་ཏེ། མིག་ལ་སོགས་པ་ནང་གི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་དང་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་ཕྱིའི་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་ཀྱང་མེད་པར་གྱུར་ན་དེ་དང་ལྡན་པའི་བྱ་བ་དང་སྤྱོད་པ་ཇི་ལྟར་སྣང་ཞེས་རྟོག་པ་བསལ་བའི་ཕྱིར།

ཇི་ལྟར་སྒྱུ་མའི་འཁྲུལ་འཁོར་མི།
བྱ་བ་ཐ་དད་བྱེད་པ་ལྟར།
ལུས་ཀྱི་འཁྲུལ་འཁོར་བདག་མེད་འདི།
དེ་བཞིན་བྱ་བ་བྱེད་པར་འགྱུར། ༩

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། སྒྱུ་མ་ཉིད་ཀྱི་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་གཟུགས་བརྙན་གྱི་མི་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྒྱུ་མའི་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་མིའོ། །བྱ་བ་ཐ་དད་བྱེད་པ་ལྟར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་ལྟར་དེ་ལ་བྱ་བ་དང་སྤྱོད་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཡང་དེ་ལ་ལུས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་དང་བྱ་བ་འགྲོ་བ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ཐ་དད་ཅིང་སྣ་ཚོགས་པ་རྣམས་བྱེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ། ལུས་ཀྱི་འཁྲུལ་འཁོར་བདག་མེད་འདི། །ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། ལུས་ཉིད་འཁྲུལ་འཁོར་ལྟ་བུ་ཡིན་པས་ན་ལུས་ཀྱི་[1]འཁྲུལ་འཁོར་ཞེས་བྱའོ། །གང་གི་ཕྱིར་བདག་དང་བྲལ་བས་ན་བདག་མེད་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་བདག་མེད་པས་ན་འདི་ལ་ནི་དོན་དམ་པར་བྱ་བ་དང་ལྡན་པ་འགའ་ཡང་མེད་དོ་[2]ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །དེ་བཞིན་བྱ་བ་བྱེད་པར་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལྟར་བྱ་བ་དང་ལྡན་པའི་བདག་མེད་ཀྱང་སྒྱུ་མའི་འཁྲུལ་འཁོར་གྱི་མིའི་གཟུགས་བརྙན་བྱ་བ་སྣ་ཚོགས་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་[3]དེ་དང་ཁྱད་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། །

སླིག་རྐྱུ་དང་མཚུངས་པར་ཡང་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

དམིགས་པ་སྣ་ཚོགས་གང་དང་གང་། །
སྐད་ཅིག་རེ་རེ་འབྱུང་འགྱུར་པ། །

---

1. གསེར། ལུས་ཀྱི་ཞེས་པ་མེད།
2. གསེར། དེ།
3. གསེར། ཡང་ཞེས་པ་མེད།

མཐོང་ན་འཇིག་ཅིང་མཚན་ཉིད་བྲལ། །
འདི་ནི་སྐྱིག་རྒྱུ་དག་དང་མཚུངས། ༦ །

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། དམིགས་པ་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཉི་བར་དབྱེ་བས་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་ཡིན་ལ། གང་དང་གང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐད་ཅིག་མའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ནོ། །སྐད་ཅིག་རེ་རེ་འབྱུང་འགྱུར་པ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐད་ཅིག་རེ་རེ་ཞིང་སྐྱེ་བར་འགྱུར་བའམ། མཚན་ཉིད་སོ་སོར་འབྱུང་བར་འགྱུར་པས་ན། །སྐད་ཅིག་རེ་རེ་འབྱུང་འགྱུར་པ། །ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། སྐད་ཅིག་མ་ཉིད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བུ་ཞི་ན། མཐོང་ན་འཇིག་ཅིང་མཚན་ཉིད་བྲལ། །འདི་ནི་སྐྱིག་རྒྱུ་དག་དང་མཚུངས། །ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ཇི་ལྟར་སའི་འགྱུར་པ་དང་། ཉི་མའི་འོད་ཟེར་ཕྲད་པ་ལས་སྐྱིག་རྒྱུའི་ཚོགས་སྣང་བ་དང་པོ་མཐོང་བ་ཡང་ཕྱིས་འཇིག་པར་འགྱུར་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཉི་བར་དམིགས་པའི་ཡུལ་རྣམས་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་ནི་དངོས་པོ་མེད་ཅིང་མཚན་ཉིད་དང་བྲལ་བས་སྟོན་དང་ཕྱི་མ་མི་འཐད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར། མི་འདྲ་བའི་རང་བཞིན་ཅན་ཡིན་པ་ལས་བྱིས་པར་གྱུར་པས་མཐའ་གཅིག་ཏུ་རྟོག་ཅིང་འདུག་ལ། ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པར་རྟོགས་པའི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ཆ་གཉིས་སུ་སྣང་བ་དེ་ཡང་གང་སྟོང་ཞིང་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བ་གཟོད་མ་ཉིད་ནས་མ་སྐྱེས་པའི་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་នོ། །

གཟུགས་བརྙན་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

གཟུང་བྱ་གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུ་སྟེ། |
ཐོག་མ་མེད་པའི་སེམས་ལས་བྱུང་། |
རྣམ་པར་ཤེས་པའང་དེ་འདྲ་སྟེ། |
ཕན་ཚུན་གཟུགས་བརྙན་དག་དང་མཚུངས། ༧ |

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། གཟུང་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁ་ཕྱིར་བལྟས་པ་གོམས་པའི་བག་ཆགས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་པ་སྟེ། གཟུང་བ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པས། གཉིས་སུ་མེད་ན་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་གཉིས་སུ་སོ་སོར་སྣང་བར་གྱུར་པའོ། །གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུ་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཟུགས་བརྙན་དང་མཚུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་ནི་གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། མེ་ལོང་གི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་དུ་ཆུད་པའི་བཞིན་ལ་སོགས་པ་དང་འདྲ་བའོ། །ཐོག་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པ་ལས་བྱུང་བའོ། །དེ་གང་ཞེ་ན། སེམས་ལས་བྱུང་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། སེམས་ཉིད་ལས་བྱུང་བས་ན་སེམས་ལས་བྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཙམ་དུ་རྗེས་སུ་འབྲེལ་བའི་ཕྱིའི་དངོས་པོ་ལ་ལྟོས་པ་མེད་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །དེ་བས་ན་དེ་ནི་གཟུགས་བརྙན་ལྟ་བུ་སྟེ། སྐྲི་དང་ཁྲད་པར་གྱི་དུས་ཉིད་ཀྱིས་རྣམ་པར་བརྟགས་ན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འབའ་ཞིག་ཏུ་མ་ཟད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པའང་དེ་དང་འདྲ་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། རྣམ་པ་དེ་ཉིད་དང་ཆ་འདྲ་བའི་ཤེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་རྣམ་པར་ཤེས་པའང་དེ་འདྲ་སྟེ་ཞེས་བྱའོ། །འང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྡུ་བ་སྟེ། འཛིན་པ་པོར་ཡོད་པའང་དེ་དང་འདྲ་སྟེ། གཟུང་བར་བྱ་བ་དང་བྲལ་ན་འཛིན་པ་པོའང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་བྱ་བར་

དགོངས་ཏེ། འབྲེལ་བའི་སྐབས་ནི་ཕན་ཚུན་གཅིག་ལ་གཅིག་ལྟོས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར། ཕན་ཚུན་གཟུགས་བརྙན་དག་དང་མཚུངས། །ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། གཟུང་བར་བྱ་བ་དང་འཛིན་པོ་ནི་གཅིག་ལ་གཅིག་ལྟོས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ། དེ་གཉིས་ཀར་དམིགས་པའི་ཕན་ཚུན་རྗེས་སུ་འབྲེལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་སེམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །

རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་སེམས་དེ་ཉིད་ཀྱང་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་དང་བྲལ་ཞིང་། འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་དང་མ་རིག་པའི་དྲི་མ་སྤངས་ཏེ། རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར་པ་ནི་ཡོད་དོ་ཞེས་མངོན་པར་ཞེན་པ་སྤངས་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་ཆུ་ཟླ་དང་། མཚུངས་པར་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

བསྒོམ་པ་དང་བའི་རྒྱུད་ལ་ནི། །
ཡེ་ཤེས་ཟླ་བ་གང་སྦྱུང་བ། །
མངོན་སུམ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། །
དེ་ནི་ཆུ་ཟླ་དག་དང་མཚུངས། [1] །

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། བསྒོམ་པ་ནི་སེམས་རྩེ་གཅིག་པའི་མཚན་ཉིད་ཅན་ཏེ། དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་བསྒོམ་པའོ། །དང་བ་ནི་བག་ཆགས་ཀྱི་རྙོག་པ་དང་བྲལ་བའོ། །རྒྱུད་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་

1. གསེར། བལྟོས་པ་ཉིད།

རྒྱུད་དེ། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ལུགས་ལས་བཟློག་ཅིང་། ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེས་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་ལའོ། །ཡེ་ཤེས་ལྔ་བ་གང་བྱུང་བ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་མ་རིག་པའི་མུན་པ་སེལ་ཅིང་ཉོན་མོངས་པའི་གདུང་བ་ཞི་བར་བྱེད་ལ། བག་ཆགས་ཀྱི་དྲི་མས་མ་གོས་པས་ལྔ་བ་དང་ཆོས་མཐུན་པའི་ཕྱིར། ཡེ་ཤེས་ལྔ་བ་ཞེས་བྱ་ལ།[1] དེ་[2]རྒྱུད་དག་པ་གང་ལས་བྱུང་ཞིང་ཤར་བ་དེ་ཡང་དངོས་པོར་གཟུང་དུ་མེད་པའི་ཕྱིར། མངོན་སུམ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། །ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་སྣང་དུ་ཟིན་ཀྱང་གང་གི་ཕྱིར་མངོན་སུམ་དུ་དམིགས་ཤིང་གཟུང་དུ་མེད་དོ། །ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ལས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཁོ་ན་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་གཟོད་མ་ཉིད་ནས་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར། དེ་ནི་ཆུ་ཟླ་དག་དང་མཚུངས། །ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། འདི་ལྟར་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་ན་དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་མངོན་སུམ་དུ་དམིགས་སུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལྟར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་དམིགས་སུ་མེད་པས་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བར་མི་ནུས་ཤེ་ན།[3] མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བའི་ཐབས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པར་བསྟན་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

---

1. གསེར། བྱ་བ་སྟེ།
2. གསེར། དེ་མི་སྣང་།
3. གསེར། ཞེ་ན།

རྣལ་འབྱོར་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་གང་། །
དེ་ཡང་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་དེ། །
དེ་བས་ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་དག །
ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་དོ། ༩ །

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། འདི་ལྟར་ཞི་གནས་ཏེ། སེམས་རྩེ་གཅིག་པའི་མཚན་ཉིད་དང་། ལྷག་མཐོང་སྟེ། ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཟུང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པ་ལ་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཅེས་བྱ་ལ་དེ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཀུང་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར། འཁོར་བ་དང་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་མི་གནས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་སུ་མེད་པར་གྱུར་པའི་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཏེ། དེ་ཡང་ཕུང་པོ་དང་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་སྤྲོས་[1]པའི་བདག་ཉིད་ཅན་མ་ཡིན་ཏེ། གང་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་མི་གཡོ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གཟོད་མ་ཉིད་ནས་མ་སྐྲེས་པའི་རང་བཞིན་ཏེ། འགྲོ་བ་དང་འོང་བ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་མེད་པའོ་ཞེས་ཀུང་བརྗོད་པར་ནུས་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དགག་[2]པར་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །མ་སྐྲེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་བས་ན། དེ་ཡང་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་

1. གསེར། སྐྲིས།
2. གསེར། དག

दे། །ཞེས་བྱ་བ་སློས་དེ། སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར། ནམ་མཁའ་དང་འདྲ་བས་ན་ནམ་མཁའ་སྟེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཅན་གྱི་མཚན་མ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་དེ། གང་གི་ཕྱིར་རྒྱུ་དེས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྐྲིབ་པ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གདན་ཚིགས་དེ་བས་ན་ཤེས་པ་སྟེ། ཁམས་གསུམ་པར་ཞུགས་པའི་སེམས་དང་། སེམས་ལས་བྱུང་བ་རྣམས་ཀྱང་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ལ། ཤེས་བྱ་དག་སྟེ། དེས་མཐོང་བའི་ཡུལ་མ་རིག་པའི་རྗེས་སུ་ཞུགས་པས་སྣོད་དང་བཅུད་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གྱི་མཚན་ཉིད་ཅན་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་ཤེས་བྱ་སྟེ། ཤེས་པ་ཡུལ་དུ་བྱས་པས་ཤེས་བྱ་ཉིད་ཙམ་དུ་རྗེས་སུ་འབྲེལ་ཅིང་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བའི་ཤེས་བྱ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡུལ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པས་ཤེས་བྱ་ཞེས་བྱ་ལ། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་ནི། དེ་གཉིས་ཀ་ཡང་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་མོ། །དེ་བས་ན་དེའི་ཁྱབ་པ་ཉིད་བསྟན་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་སྟེ། ཕྱོགས་གཅིག་ཙམ་མ་ཡིན་ཏེ་ལྷག་མ་མེད་པར་རོ། །གང་འདི་ལྟར་ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱིས་གང་ཟག་ཙམ་ལ་བདག་མེད་ཀྱི་ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་དང་། དེ་རྣམས་ཀྱི་ཐར་པའི་མཚན་ཉིད་དུ་ཕུང་པོ་ལྷག་མ་དང་བཅས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་འདོད་པ་དང་། གཞན་དུ་ན་[1] ལྷག་མ་མེད་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་འདོད་ཅིང་སྨྲ་ལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ནི་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནས་ཐམས་ཅད་དུ་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད

1. གསེར། ན། མི་སྣང་།

སྟོང་པ་ཉིད་དུ་གསུངས་ཀྱི། མུ་སྟེགས་པ་ལྟ་བུའི་ཕྱོགས་གཅིག་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ནོ།[1] །དེ་བས་ན་དེའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། འགྲོ་བ་གང་ཅིའང་རུང་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་དུ་མ་གྱུར་པ་ནི་འགའ་ཡང་མེད་དེ། དེ་བས་ན། ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའི་མཚན་ཉིད་དོ། །ཞེས་བཤད་དོ། །

དེ་ལྟར་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དགུས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྟན་ནས། འདིར་དངོས་པོ་མེད་པས་ཐོབ་པའི་འབྲས་བུ་མེད་པར་དོགས་པ་བསལ་ཅིང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རིགས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར།

དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་ཉིད་སེམས་པ། །
དངོས་པོ་ཀུན་ལ་མི་གནས་ཏེ། །
བྱང་ཆུབ་སྨོན་པའི་སེམས་ཀྱིས་ནི། །
ཡེ་ཤེས་དེ་ལྟར་འབྱུང་བར་འགྱུར། ༡༠ །

ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་པ་ཡིན་ནོ། །

བཙོམ་ལྡན་འདས་མ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་དོན་བསྡུས་པ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དགུ་པའི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀམ་པ་ལའི་ཞལ་སྔ་ནས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།



1. གསེར། ཏེ།

आचार्य नागार्जुनकृता

क्रियासंग्रहकारिका

KRIYĀSAṀGRAHAKĀRIKĀ

OF

ĀCĀRYA NĀGĀRJUNA

क्रियासंग्रहकारिका

परीक्षा गुरुशिष्याणां गुरोरध्येषणा ततः ।
मन्त्रसेवां गुरुः कुर्यात् ततो भूमेः परीक्षणम् ॥ १ ॥

देवतायोगयुक्तः सन् महीपूजां विधाय च ।
देवतोत्थापनं कृत्वा शोधयेन्मेदिनीं ततः ॥ २ ॥

यवानां रोपणं कृत्वा जाङ्गुली चापि पूजयेत् ।
सूत्रं संपात्य यत्नेन वास्तुनागं परीक्षयेत् ॥ ३ ॥

इष्टकालक्षणं सम्यग् ज्ञात्वादिग्रहणं ततः ।
सम्यगायव्ययौ ज्ञात्वा प्रासादस्य च लक्षणम् ॥ ४ ॥

देवदिक्पालवसुधाः सम्पूज्य च यथाविधि ।
ईतिकारोपणं कृत्वा होमं कुर्यात् प्रमोहनम् ॥ ५ ॥

वनयात्रा ततो द्वारं सम्यगुत्थापयेत्सुधीः ।
संस्थाप्य च शिरोदारु जुहुयादमृतानलम् ॥ ६ ॥

वज्राचार्यप्रवेशोऽस्मिन् समाधित्रयभावना ।
परिक्रमार्थसूत्राणां पातनं रजसामपि ॥ ७ ॥

अग्निक्रियाविधानं च पिण्डिकास्थापनं ततः ।
सव्यक्षणेन निष्पाद्य प्रतिमां स्थापयेत्ततः ॥ ८ ॥

चित्रकर्म वलिः पिण्डी गण्डिकालक्षणं ततः ।
एतेषां च प्रतिष्ठानं प्रव्रज्याग्रहणं तथा ॥ ९ ॥

लक्षणं धर्मधातूनां ध्वजानामवरोपणम् ।
जीर्णोद्धारोपसंहारौ पूजयेद् गणमण्डलम् ॥ १० ॥

॥ क्रियासंग्रहकारिका समाप्ता ॥

॥ कृतिरियं नागार्जुनपादानाम् ॥



བྱ་བ་བསྡུས་པ་ཞེས་བྱ་བ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཀྲིཡཱསཾགྲཧནཱམ། བོད་སྐད་དུ། བྱ་བ་བསྡུས་པ་ཞེས་བྱ་བ། དཔལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

བླ་མ་སློབ་མ་བརྟག་པ་དང་། །
བླ་མ་གསོལ་བཏབ་དེ་ནས་ནི། །
བླ་མས་སྟེགས་དང་བསྐྱེན་པ་བྱ། །
དེ་ནས་ས་ནི་ཡོངས་སུ་བརྟག ༡ །

ལྷ་ཡི་རྣལ་འབྱོར་ལྡན་གྱུར་པས། །
ས་ནི་མཆོད་པའི་ཚོ་ག་ཡིས། །
ལྷ་ནི་སྙིང་དུ་བཏེག་བྱས་ནས། །
དེ་ནས་ས་ནི་སྦྱང་བར་བྱ། ༢ །

དེ་ནས་བཏབ་ནས་ཧཱུྃ་ག་ཎྜི་ལ་མཆོད་པར་བྱའོ། །
ཁང་ས་ལ་ཐིག་ལེགས་པར་བཏབ་ནས་འབད་པས་ལྷོ་འབྲི་
བརྟག་པར་བྱའོ།[1] ༣ །

1. གསེར། སྣ། ཅོ་པར་རྣམས་སུ་གོང་བཞིན་ཚིག་ལྷུག་ཏུ་གསལ་ཀྱང་རྒྱ་དཔེར་ཚིགས་བཅད་ཐོག་བཞུགས་ཡོད།

སོ་ཕག་མཚན་ཉིད་ཡང་དག་པར། |
ཞེས་ནས་[1]ཕྱོགས་བཅུང་དེ་ནས་ནི། |
ཡང་དག་འཕེལ་དང་ཟད་པ་དང་། |
ཁང་བཟངས་མཚན་ཉིད་ཞེས་པ་དང་། ༤ |

ལྷ་དང་ཕྱོགས་སྐྱོང་ས་ཡི་ལྷ། |
ཚོ་ག་ཇི་བཞིན་ཡང་དག་མཆོད། |
[2]སོ་ཕག་བྱ་བའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ། |
སྦྱོངས་བྱེད་ཀྱི་མེར་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། ༥ |

ནགས་བལྟས་དེ་ནས་བློ་ལྡན་གྱིས། |
སྒོ་ནི་ཡང་དག་གདོད་པར་བྱ། |
གནས་པའི་ཞིང་གི་རྒྱ་མོ་ཡིས། |
བདུད་རྩིའི་མེ་ལ་སྦྱིན་སྲེག་བྱ། ༦ |

རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་རབ་བཞུགས་ནས། |
འདིར་ནི་ཏིང་འཛིན་གསུམ་བསྒོམས་ཏེ། |

---

1. གསེར། དང་།
2. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ། སོ་ཕག་བྱ་བའི་ཕྱིར་རབ་ཏུ་སྦྱོངས་བྱེད་ཀྱི་མེ་ལ་སྦྱིན་སྲེག་བྱའོ། ཞེས་ཚིག་ལྷུག་ཏུ་འདུག་པ་འདི་ཉིད་ཚིག་རྐང་གཉིས་སུ་ཕྱེས་ཏེ་ཚིགས་བཅད་ཁ་ཚང་བར་བྱས་ཡོད།

གོ་རིམས་བཞིན་དུ་དེ་ནས་ནི། |
ཐིག་གདབ་རྒྱལ་ཚོན་དགྱེ་བ་དང་། ༧ |

མེ་ཡི་བྱ་བ་རྣམ་པ་དང་། |
སྐེགས་བུ་དགོད་བྱ་དེ་ནས་ནི། |
དམ་པའི་མཚན་ཉིད་ཡོངས་རྫོགས་ནས། |
སྐུ་གཟུགས་རྣམས་ནི་གཞུག་པར་བྱ། ༨ |

རི་མོའི་ལས་དང་གཏོར་སྐེགས་དང་། |
གཙིའི་མཚན་ཉིད་དེ་ནས་ནི། |
དེ་དང་དེ་རྣམས་རབ་གནས་དང་། |
རབ་ཏུ་འབྱིན་པ་གཟེགས་དེ་བཞིན། ༩ |

ཆོས་དབྱིངས་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ནི། |
ཞིས་ཞིང་བཞེངས་པར་བྱ་ཐ་དང་། |
ཞིག་།པ་གསོ་དང་ཉེ་བར་བསྡུ། |
ཚོགས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་མཆོད་བྱ་ལ། ༡༠ |

བྱ་བ་བསྡུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་རྫོགས་སོ།། ||

•

1. གསེར། ཞིམ།

महाचार्य अश्वघोषकृता

गुरुपञ्चाशिका

GURUPAÑCĀṢIKĀ

OF

MAHĀCĀRYA AŚVAGHOŚA

गुरुपञ्चाशिका

ॐ नमो बुद्धाय ।

श्रीवज्रसत्त्वपदवीप्रतिलम्भहेतो-
नत्वा यथाविधि गुरोश्चरणारविन्दम् ।
तत्पर्युपास्तिरमला बहुतन्त्रगीता
संक्षिप्य कथ्यत इयं शृणुतादरेण ॥१॥

अभिषेकाग्रलब्धो हि वज्राचार्यस्तथागतैः ।
दशदिग्लोकधातुस्थैस्त्रिकालमेत्य वन्द्यते ॥२॥

त्रिकालं परया भक्त्या सपुष्पाञ्जलिमण्डलैः ।
पर्युपास्यो गुरुः शास्ता शिरसा पादवन्दनात् ॥३॥

सद्धर्मादीन् पुरस्कृत्य गृही वा नवकोऽपि वा ।
वन्द्यो व्रतधरैर्बुद्ध्या लोकावद्यावहानये ॥४॥

सुखासनं समुत्थानमर्थक्रियादिगौरवम् ।
सर्वमेव व्रती कुर्यात् त्यक्त्वा चार्चनवन्दनम् ॥५॥

प्राक् शिष्याचार्यसंबन्धः कार्यः परीक्ष्य सूरिभिः ।
समानसमयभ्रंशो दोषो हि गुरुशिष्ययोः ॥६॥

निष्कृपं क्रोधनं क्रूरं स्तब्धं लघुमसंयतम् ।
स्वोत्कर्षकं च नो कुर्याद् गुरुं शिष्यं च बुद्धिमान् ॥७॥

धीरो विनीतो मतिमान् क्षमावानार्जवोऽशठः ।
मन्त्रतन्त्रप्रयोगज्ञः कृपालुः शास्त्रकोविदः ॥८॥

दशतत्त्वपरिज्ञाता मण्डलालेख्यकर्मवित् ।
मन्त्रव्याख्याकृदाचार्यः प्रसन्नः स्याज्जितेन्द्रियः ॥ ९ ॥

तं नाथं योऽवमन्येत शिष्यो भूत्वा सचेतनः ।
सर्वबुद्धापमानेन स नित्यं दुःखमाप्नुयात् ॥ १० ॥

ईत्युपद्रवचौरैश्च ग्रहज्वरविषादिभिः ।
म्रियतेऽसौ महामूढो गुरुपादाभिनिन्दकः ॥ ११ ॥

राजवातानलव्यालैर्डाकिनीजलतस्करैः ।
विघ्नैर्विनायकैश्चापि मारितो नरकं व्रजेत् ॥ १२ ॥

न कुर्याच्चित्तसंक्षोभमाचार्यस्य कदाचन ।
यदा करोति दुष्प्रज्ञो नरके पच्यते ध्रुवम् ॥ १३ ॥

नरका ये समाख्याता अवीच्याद्या भयानकाः ।
तत्र वासः समाख्यात आचार्यस्य हि निन्दनात् ॥ १४ ॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन वज्राचार्यं महागुरुम् ।
प्रच्छन्नवरकल्याणं नावमन्येत् कदाचन ॥ १५ ॥

यथेष्टदक्षिणादानाद् गुरुभक्तं सगौरवम् ।
उक्ता ज्वरादयस्तापा न भूयः प्रभवन्ति हि ॥ १६ ॥

अदेयैः पुत्रदाराद्यैरसुभिर्वा निजैरपि ।
सेव्यः स्वसंवराचार्यः किं पुनर्विभवैश्चलैः ॥ १७ ॥

यतः सुदुर्लभं वस्तु कल्पासंख्येयकोटिभिः ।
बुद्धत्वमुद्योगवते ददातीहैव जन्मनि ॥ १८ ॥

नित्यं स्वसमयः साध्यो नित्यं पूज्यास्तथागताः ।
नित्यं च गुरवे देयं सर्वबुद्धसमो ह्यसौ ॥ १९ ॥

यद्यदिष्टतरं लोके विशिष्टतरमेव वा ।
तत्तद्धि गुरवे देयं सदैवाक्षयमिच्छता ॥ २० ॥

दत्तेऽस्मै सर्वबुद्धेभ्यो दत्तं भवति शाश्वतम् ।
तस्माच्च पुण्यसंभारः संभाराद् बोधिरुत्तमा ॥ २१ ॥

ते शिष्याः करुणोत्सर्गशीलक्षान्तिगुणान्विताः ।
ये नान्यत्वं कल्पयन्ति गुरोर्वज्रधरस्य च ॥ २२ ॥

चैत्यभङ्गादिभीत्याऽपि गुरोश्छायां न लङ्घयेत् ।
पादुकाऽऽसनयानादेर्लङ्घनस्य तु का कथा ॥ २३ ॥

श्रूयाद् यत्नाद् गुरोराज्ञां हृष्टचित्तो महामतिः ।
अशक्तः श्रावयेत् तस्मा उपपत्त्या त्वशक्तिताम् ॥ २४ ॥

गुरोः सिद्धिं समाप्नोति गुरोः स्वर्गं गुरोः सुखम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गुरोराज्ञां न लङ्घयेत् ॥ २५ ॥

स्वात्मवच्च गुरोर्द्रव्यं गुरुवच्च तदङ्गनाम् ।
स्वजनानिव तल्लोकान् पश्येन्नित्यं समाहितः ॥ २६ ॥

शय्यारोहमग्रयानमुष्णीषाद्युपबन्धनम् ।
न कुर्यादासने पादं कटिहस्तं च सन्निधौ ॥ २७ ॥

सुप्तेन वा निषण्णेन न स्थेयमुत्थिते गुरौ ।
दक्षश्चोत्साहसम्पन्नस्तत्कार्येषु सदा भवेत् ॥ २८ ॥

श्लेष्मादीनां परित्यागः पादप्रसारणं तथा ।
चङ्क्रमणं विवादं च न कुर्यात् पुरतो गुरोः ॥ २९ ॥

संवाहनं नर्तनं च न गानं न च वादनम् ।
बहु संलपनं चापि न कुर्यात् पुरतो गुरोः ॥ ३० ॥

नत्वाऽऽसनात् समुत्थेयं निषत्तव्यं च भक्तितः ।
निश्यप्सु सभये मार्गे प्रार्थ्याग्रे गमनं चरेत् ॥ ३१ ॥

नाङ्गानि चालयेद् धीमान् न जृम्भादि समाश्रयेत् ।
नाङ्गुलिस्फोटनं कुर्यात् पुरः पश्यति शास्तरि ॥ ३२ ॥

पादयोः क्षालनं चाङ्गप्रोञ्छाभ्यञ्जनमर्दनम् ।
पूर्वं प्रणम्य कर्तव्यं ततः कुर्याद् यदादिशेत् ॥ ३३ ॥

[आह्वानादौ गुरोर्नाम्नि पूज्यपादादि योजयेत् ।
अन्यदा श्रद्धया ब्रूयात् सादरैस्तु विशेषणैः ॥ ३४ ॥

आदिश्यताम्, करिष्यामि, प्रवदेत् साञ्जलिर्गुरुम् ।
श्रुत्वाऽऽदेशं चाविचाल्य यथाऽऽदिष्टं तथा चरेत् ॥ ३५ ॥

हासे कासे समुत्पन्ने करेणाच्छादयेन्मुखम् ।
तदन्ते मृदुभिर्वर्णैः स्वाभिप्रायं निवेदयेत् ॥ ३६ ॥

विनीतः पुरतो भूयात् सज्जो वस्त्रादिबन्धनैः ।
भूजानुः साञ्जलिः श्रोतुं याचयेत् तु त्रिवारकम् ॥ ३७ ॥

सत्कार्यं सर्वदा कुर्यान्निरहङ्कारचेतसा ।
त्रपया पापभीत्या संवृतो नववधूरिव ॥ ३८ ॥

न विलासमयीं चेष्टां कुर्यात् शास्तरि संमुखे ।
अन्यच्चैवंविधं कर्म सुपरीक्ष्य त्यजेद् भृशम् ॥ ३९ ॥

प्रतिष्ठायां मण्डले च होमे वा शिष्यसंग्रहे ।
आख्यानादौ गुरोर्वासे नित्यं कुर्याच्च सन्निधिम् ॥ ४० ॥

प्रतिष्ठादौ लभ्यते यत् तत्सर्वं गुरवेऽर्पयेत् ।
तेन दत्तं च गृह्णीयात् स्वयं चान्यांश्च तोषयेत् ॥ ४१ ॥

गुरुशिष्ये स्वशिष्यत्वं न विदध्यात् कदाचन ।
स्वशिष्यं व्यावृतं कुर्यात् सत्कारादेर्गुरोः पुरः ॥ ४२ ॥

आचार्यो यत्स्वयं दद्याद् गुरुर्वा यत् प्रदापयेत् ।
प्रणम्य धीमता ग्राह्यं बद्धाञ्जलिपुटेन तत् ॥ ४३ ॥

अविस्मृतः सर्वचर्यां यत्नात् कुर्वन् स्वबान्धवान् ।
अविस्मृतेर्निराकुर्यात् प्रेम्णा हृष्टेन चेतसा ॥ ४४ ॥

अनुज्ञातो गुरोः कार्यं श्रद्धालुर्नाचरेद् यदि ।
रुग्णस्तु कुशले चित्ते नैवं भवति पापभाक् ॥ ४५ ॥

किमन्यद्, गुरुतोषाय यच्छक्यं तत्समाचरेत् ।
चर्या कार्या प्रयत्नेन न कदाप्यवहेलयेत् ॥ ४६ ॥

सर्वथा सर्वदा सिद्धिराचार्य यानुगामिनी ।
गुरुर्वज्रधरस्योक्तेराराध्यः सर्ववस्तुभिः ॥ ४७ ॥

शिष्यः शुद्धाशयो भूत्वा त्रिरत्नं शरणं व्रजेत् ।
गुरोरधीत्यानुपठेत् कुर्यादुत्सर्गमेव च ॥ ४८ ॥

ततो मन्त्रादिदानेन कृत्वा सद्धर्मपात्रकम् ।
पठेच्च धारयेच्चापि मूलापत्तीश्चतुर्दश ॥ ४९ ॥

गुरुमनुगतशिष्यस्यानवद्यस्य कृत्वा
सकलसुहितवृद्धिं संचितं यन्मयेदम् ।
कुशलपदमनन्तं तेन वै सर्वसत्त्वाः
विजितसुगतभावा द्राक् सुसिद्धिं लभेयुः ॥ ५० ॥]

॥ इति गुरुपञ्चाशिका समाप्ता ॥



॥ कृतिरियं महाचार्याश्वघोषस्य ॥

བླ་མ་ལྔ་བཅུ་པ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། གུརུཔཉྩཱཤིཀཱ[1] བོད་སྐད་དུ། བླ་མ་ལྔ་བཅུ་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

དཔལ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་གནས་ཐོབ་རྒྱུར་གྱུར་པ། |
བླ་མའི་ཞབས་ཀྱི་པདྨར་ཇི་བཞིན་བཏུད་བྱས་ཏེ། |
དེ་བསྟན་པ་ནི་དྲི་མེད་རྒྱུད་མང་ལས་གསུངས་པ། |
མདོར་བསྡུས་བཤད་པ་འདི་ནི་གུས་པས་ཉན་པར་གྱིས།༡ |

དབང་བསྐུར་མཆོག་ཐོབ་རྡོ་རྗེ་ཡི། |
སློབ་དཔོན་ལ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས། |
ཕྱོགས་བཅུའི་འཇིག་རྟེན་ཁམས་བཞུགས་པས། |
དུས་གསུམ་དུ་ནི་མངོན་ཕྱག་འཚལ། ༢ |

མཆོག་ཏུ་དད་པས་དུས་གསུམ་དུ། |
དཀྱིལ་འཁོར་མེ་ཏོག་བཅས་ཐལ་མོས། |
སྟོན་པ་བླ་མ་བསྙེན་བཀུར་ཞིང་། |
ཞབས་ལ་སྤྱི་བོས་ཕྱག་བྱའོ། ༣ |

---

1. སྣི། གུརུཔཉྩབཻཤིཀ

ཁྲིམས་པའམ་ནི་གསར་བུ་ལ། །
འཇིག་རྟེན་སྐྱོད་པ་སྲུང་བའི་ཕྱིར། །
དམ་ཆོས་ལ་སོགས་མདུན་བདར་ཏེ། །
བརྟུལ་ཞུགས་འཛིན་པས་བློས་ཕྱུག་བྱ། ༤ །

གདན་བསྟབས་པ་དང་ལྷུང་བ་དང་། །
དོན་གྱི་བྱ་བ་སོགས་བསྙེན་བཀུར། །
བརྟུལ་ཞུགས་ཅན་གྱིས་ཀུན་བྱ་སྟེ། །
ཕྱག་བྱ་དམ་པ་མིན་ལས་སྲུང་། ༥ །

བླ་མ་དང་ནི་སློབ་མ་དག །
མཚུངས་པར་དམ་ཚིག་ཉམས་འགྱུར་བས། །
དཔའ་བོས་དང་པོར་སློབ་དཔོན་དང་། །
སློབ་མའི་འབྲེལ་བ་བརྟག་པར་བྱ། ༦ །

བློ་ལྡན་སློབ་མས་བླ་མར་ནི། །
སྙིང་རྗེ་མེད་ཅིང་ཁྲོ་ལ་གདུག །
ཁེངས་ཤིང་ཆགས་ལ་མ་བསྡམས་དང་། །
སྒྲོམས་དང་བཅས་པར་མི་བྱའོ། ༧ །

བརྟན་ཞིང་དུལ་ལ་བློ་གྲོས་ལྡན།
བཟོད་ལྡན་དྲང་ལ་གཡོ་སྒྱུ་མེད།
སྔགས་དང་རྒྱུད་ཀྱི་སྦྱོར་བ་ཤེས།
སྙིང་བརྩེར་ལྡན་ཞིང་བསྟན་བཅོས་མཁས། ༨

དེ་ཉིད་བཅུ་ནི་ཡོངས་སུ་ཤེས།
དཀྱིལ་འཁོར་འབྲི་བའི་ལས་ལ་མཁས།
སྔགས་བཤད་པ་ཡི་སྦྱོར་བ་ཤེས།
རབ་ཏུ་ཞི་ཞིང་དབང་པོ་དུལ། ༩

དེ་འདྲའི་མགོན་ལ[1] བསམས་བྱས་ནས།
སློབ་མར་གྱུར་ནས་བརྟས་ན་ནི།
སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་བརྟས་པས་ན།
དེས་ནི་རྟག་ཏུ་སྟུག་བསྔལ་འཐོབ། ༡༠

སློབ་དཔོན་ལ་ནི་སྨོད་པ་དེ།
ཡམས་དང་འཆི་བའི་ནད་རྣམས་དང་།
གདོན་དང་རིམས་དང་དུག་རྣམས་ཀྱིས།
མྱོངས་ཆེན་དེ་ནི་འཆི་བར་འགྱུར། ༡༡

1. གསེར། མགོན་པ།

རྒྱལ་པོ་མི་དང་སྦྲུལ་གདུག་དང་།
ཆུ་དང་མཁའ་འགྲོ་རྐུན་པོ་དང་།
གདོན་དང་ལོག་འདྲེན་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་།
བསད་ནས་སེམས་ཅན་དམྱལ་བར་འགྲོ ༡༢

ཉམ་ཡང་སློབ་དཔོན་དག་གི་ནི།
ཀུན་དུ་སེམས་དཀྲུགས་མི་བྱ་སྟེ།
གལ་ཏེ་རྨོངས་པས་བྱས་གྱུར་ན།
དམྱལ་བར་ངེས་པར་འཚེད་པར་འགྱུར། ༡༣

མནར་མེད་ལ་སོགས་འཇིགས་རུང་བའི།
དམྱལ་བ་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ།
སློབ་དཔོན་ལ་ནི་སྨོད་པ་རྣམས།
དེར་ནི་གནས་པར་ཡང་དག་བཤད། ༡༤

དེ་བས་འབད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས།
རྡོ་རྗེ་སློབ་དཔོན་བློ་གྲོས་ཆེ།
དགེ་བ་རབ་ཏུ་མི་སྨྲོམས་པ།
ཉམ་ཡང་སྨད་པར་མི་བྱའོ། ༡༥

བླ་མ་ལ་ནི་གུས་བཅས་ཡོན། །
རྗེས་སུ་མཐུན་པར་སྦྱིན་པར་བྱ། །
དེས་ནི་རིམས་སོགས་གནོད་པ་རྣམས། །
ཕྱིར་ཞིང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ། ༡༦ །

རང་གི་དམ་ཚིག་སློབ་དཔོན་ནི། །
སྦྱིན་མིན་བུ་དང་ཆུང་མ་དང་། །
རང་སྲོག་གིས་ཀྱང་བརྟེན་བྱ་ནི། །
ལོངས་སྤྱོད་གཡོ་བ་སྨོས་ཅི་དགོས། ༡༧ །

གང་ཕྱིར་བསྐལ་པ་བྲེ་བ་ནི། །
གྲངས་མེད་པར་ཡང་རྙེད་དཀའ་བའི། །
སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱང་བརྩོན་ལྡན་ལ། །
ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་སྟེར་བར་བྱེད། ༡༨ །

རྟག་ཏུ་རང་གི་དམ་ཚིག་བསྲུང་། །
རྟག་ཏུ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མཆོད། །
རྟག་ཏུ་བླ་མ་ལ་ཡང་འབུལ། །
འདི་ནི་སངས་རྒྱས་ཀུན་དང་འདྲ། ༡༩ །

མི་ཟད་དེ་ནི་འདོད་པ་ཡིས། |
ཅུང་ཟད་ཡོད་འོང་གང་དང་གང་། |
ཤིན་ཏུ་ཁྲུད་པར་གྱུར་པ་ཉིད། |
དེ་དང་དེ་ནི་ལྷ་མར་སྲིན། ༣༠ |

དེ་ཕྱིན་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ། |
རྟག་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར། |
དེ་ཕྱིན་བསོད་ནམས་ཚོགས་ཡིན་ཏེ། |
ཚོགས་ལས་དངོས་གྲུབ་མཆོག་ཏུ་འགྱུར།༣༡ |

དེ་བས་སློབ་མ་སྙིང་རྗེ་གཏོང་། |
ཚུལ་ཁྲིམས་བཟོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྡན། |
སློབ་དཔོན་དང་ནི་རྡོ་རྗེ་འཛིན། |
ཐ་དད་པར་ནི་མི་རྟག་གོ ༣༢ |

མཆོད་རྟེན་བཤིར་འདྲའི་སྡིག་འཛིར་པས། |
གྲིབ་མའང་བགོམ་པར་མི་བྱ་ན། |
ལྷམ་དང་སྟན་དང་བཞོན་པ་སོགས། |
བགོམ་མི་བྱ་བ་སྨོས་ཅི་དགོས། ༣༣ |

བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་དགའ་སེམས་ཀྱིས། །
བླ་མའི་བཀའ་ནི་འབད་དེ་མཉམ། །
རིགས་པ་ཡིས་ནི་མི་ནུས་པ། །
མི་ནུས་དེ་ལ་ཚིག་གིས་སྨྲུང་། ༣༤ །

བླ་མ་ལས་ནི་དངོས་གྲུབ་དང་། །
མཐོ་རིས་དང་ནི་བདེ་བ་འབྱོབ། །
དེ་བས་འབད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །
བླ་མའི་བཀའ་ལས་འདའ་མི་བྱ། ༣༥ །

བླ་མའི་རྫས་ནི་སྲོག་ཇི་བཞིན། །
བླ་མའི་སྡུག་པའང་བླ་མ་བཞིན། །
དེ་ཡི་འཁོར་ནི་གཉེན་བཞིན་དུ། །
མཉམ་པར་གཞག་པས་རྟག་ཏུ་བསམ། ༣༦ །

མལ་སྟན་འདུག་དང་སྔོན་འགྲོ་དང་། །
གཙུག་ཏོར་དག་དང་དཕྱངས་[1]པ་དང་། །
སྟན་ལ་རྐང་འཇོག་རྐེད་པར་ནི། །
ལག་གཞག་ཉེ[2]བར་མི་བྱའོ། ༣༧ །

1. གསེར་ བཅས།

2. གསེར། མཉེ། སྙེ། ཅོ། སྙེ་ཞེས་གསལ་ཀྱང་འདིར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་ཡོད།

བླ་མ་དག་ནི་ལངས་པ་ན།
ཉམ་དང་འདུག་པར་མི་བྱའོ།
རྟག་ཏུ་དེ་ཡི་བྱ་བ་ལ།
ལྷང་མཁས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པར་བྱ། ༢༨

མཆིལ་མ་ལ་སོགས་འདོར་བ་དང་།
སྟན་ལ་རྐང་འཇོག་རྐྱོང་བ་ནི།
འཆག་དང་རྒོད་པར་སྨྲ་བ་དག
བླ་མའི་མདུན་དུ་མི་བྱའོ། ༢༩

ཡན་ལག་མཉེ་དང་གར་དག་དང་།
གླུ་དང་རོལ་མོ་མི་བྱ་ཞིང་།
གཏམ་གྱི་སྦྱོར་བ་མང་པོ་རྣམས།
ཐོས་པའི་ཉེ་འཁོར་དུ་མི་བྱ། ༣༠

བཏུད་དེ་སྟན་ལས་ལྡང་བ་དང་།
གུས་པ་ཡིས་ནི་འདུག་པར་བྱ།
མཚན་ཆུ་འཇིགས་བཅས་ལམ་དུ་ནི།
བསྒོ་བ་ཐོབ་ན་མདུན་འགྲོ་བྱ། ༣༡

སློབ་དཔོན་གྱིས་ནི་མཐོང་མདུན་དུ།
བློ་དང་ལྡན་པས་ལུས་གཙུ་[1]དང་།
ཀ་བ་ལ་སོགས་བརྟེན་མི་བྱ།
སོར་མོའི་ཚིགས་ནི་དྲུད་མི་བྱ། ༣༢

རྐང་པ་བརྐྱང་དང་ལུས་བརྐྱང་དང་།
དྲིལ་དང་མཉེ་བ་ལ་སོགས་པ།
ཕྱག་ནི་སྦྱོན་དུ་འགྲོ་བས་བྱ།
དེ་བཞིན་མཐར་ནི་ཅི་བདེར་བྱ། ༣༣

དེ་ཡི་[2]མཚན་སློས་བརྗོད་ན་ནི།
མིང་མཐར་ཞལ་སྔར་ལྡན་པས་བྱ།
གཞན་དག་གུས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།
ཁྱད་པར་གྱི་ནི་ཚིག་ཀྱང་བརྗོད། ༣༤

བླ་མ་ལ་ནི་བཀའ་སྐྱལ་ཞུ།
བཀའ་བཞིན་བགྱིད་ཅེས་བརྗོད་བྱས་ལ།
ཐལ་མོ་སྦྱར་ཞིང་མ་ཡེངས་པར།
བླ་མས་བསྒྲོ་བ་མཉན་པར་བྱ། ༣༥

---

1. གསེར། བཙུ།
2. གསེར། ཡིས།

དགོད་[1]དང་ལུད་པ་ལ་སོགས་པ།
ལག་པས་ཁ་ནི་དགབ་པར་བྱ།
བྱ་བ་ཟིན་ནས་འཇམ་པ་ཡི།
ཚིག་དག་གིས་ནི་བརླས་[2]པར་བྱ། ༣༦

མདུན་དུ་དུལ་བར་འདུག་པ་དང་།
གོས་སོགས་ཚུལ་བཞིན་བསྡམས་པ་དང་།
པུས་བཙུགས་ཐལ་མོ་སྦྱར་བ་ཡིས།
མཆན་སོགས་འདོད་ལ་གསོལ་གསུམ་གདབ། ༣༧

བསྙེན་བཀུར་སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ལ།
ཡིད་ནི་ང་རྒྱལ་མེད་པར་བྱ།
ངོ་ཚ་འཛེམས་ཤིང་བསྡམས་པ་ཡིས།
བག་མ་གསར་པའི་ཚུལ་གནས་བྱ། ༣༨

སྙིག་པ་ལ་སོགས་བྱ་བ་ཀུན།
སྟོན་པའི་མདུན་དུ་སྤང་བར་བྱ།
གཞན་ཡང་དེ་འདྲའི་བྱ་བ་ནི།
རང་གིས་བརྟགས་ལ་དོར་བར་བྱ། ༣༩

1. གསེར། རྒོད།
2. གསེར། བརྡས།

རབ་གནས་དཀྱིལ་འཁོར་སྒྲིན་སྲེག་དང་། །
སློབ་མ་སྡུད་དང་འཆད་པ་རྣམས། །
ཡུལ་དེར་བླ་མ་གནས་པ་ན། །
རྗེས་མ་གནང་བར་མི་བྱའོ། ༥༠ །

སྦྱིན་འབྱེ་སོགས་ལས་ཅི་ཐོབ་པ། །
དེ་ཀུན་བླ་མ་རྣམས་ལ་དབུལ། །
དེ་ཡིས་བསྟབས་པ་བླངས་ནས་ནི། །
གཞན་དག་ལ་ནི་ཅི་བདེར་བྱ། ༥༡ །

བླ་མའི་སློབ་མ་སློབ་མར་མིན། །
སློབ་མའང་བླ་མའི་མདུན་དུ་མིན། །
བསྙེན་བཀུར་དག་དང་ལྡང་བ་དང་། །
ཕྱག་སོགས་བྱེད་པ་བཟློག་པར་བྱ། ༥༢ །

སློབ་དཔོན་ལ་ནི་གང་འབུལ་དང་། །
བླ་མས་ཀྱང་ནི་གང་སྩལ་པ། །
དེ་ལ་བཏུད་དེ་ལག་གཉིས་ཀྱིས། །
བློ་དང་ལྡན་པས་བླང་བར་བྱ། ༥༣ །

1. གསེར། དབྱེ།

དྲན་པ་བརྗེད་མེད་གྱུར་པ་དང་། |
རང་གི་ཀུན་སྤྱོད་ལ་བརྩོན་པས། |
སྨྱུན་གྱི་རང་སྤྱོད་ལས་འདས་པ། |
དགའ་བས་ཕན་ཚུན་བཟློག་པར་བྱ། ༤༤ |

ན་བས་བླ་མའི་བྱ་བ་ལ། |
བཏུད་དེ་རྗེས་མ་གནང་བར་ཡང་། |
བཀག་པ་རྣམས་ནི་སྤྱད་བྱས་ཀྱང་། |
དགེ་སེམས་ལྡན་ལ་སྡིག་མི་འགྱུར། ༤༥ |

འདིར་མང་སྨྲ་བ་ཅི་ཞིག་དགོས། |
བླ་མ་དགྱེས་བྱེད་གང་ཡིན་བྱ། |
མི་མཉེས་བྱེད་ཀུན་སྤང་བར་ནི། |
དེ་དང་དེ་ལ་འབད་དེ་སྤྱད། ༤༦ |

དངོས་གྲུབ་སློབ་དཔོན་རྗེས་འབྲང་ཞེས། |
རྡོ་རྗེ་འཛིན་པ་ཉིད་གསུང་བས། |
ཤེས་ནས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། |
བླ་མ་ཡོངས་སུ་མཉེས་པར་བྱ། ༤༧ |

བསམ་པ་དག་པའི་སློབ་མ་ནི།
དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སྐྱབས་སོང་ལ།
བླ་མའི་རྗེས་སུ་འཛུག་པ་ནི།
ཁ་ཏོན་[1]བྱ་བར་སྦྱིན་པར་བྱ། ༤༨

དེ་ནས་སྔགས་སོགས་སྦྱིན་པ་ཡིས།
དམ་ཆོས་སྣོད་དུ་བྱས་ནས་སུ།
རྩ་བའི་ལྟུང་བ་བཅུ་བཞི་ནི།
ཀླག་[2]ཧང་འཛིན་པ་ཉིད་དུ་བྱ། ༤༩

དེ་ལྟར་བླ་མའི་རྗེས་འཛུག་སློབ་མ་ནི།
མ་ལུས་ཕན་བསྐྱེད་སྐྱོན་མེད་འདི་བྱས་པའི།
དགེ་བ་མཐའ་ཡས་བདག་གིས་ཅི་བསགས་པ།
དེས་ནི་འགྲོ་ཀུན་སྐྱུར་དུ་རྒྱལ་གྱུར་ཅིག ༥༠

བླ་མ་ལྔ་བཅུ་པ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རྟ་དབྱངས་ཀྱིས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།།།
རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་པདྨ་[3]ཀ་ར་ཝརྨ་དང་། ཞུ་ཆེན་གྱི་ལོ་ཙྪ་བ་དགེ་སློང་རིན་ཆེན་བཟང་པོས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ།། ||

---

1. གསེར། ཐོན།
2. གསེར། བཀླག
3. གསེར། རྒྱ་གར་མཁན་པོ་པདྨ། སྣེ། རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་པདྨ།

सिद्धाचार्यश्रीशबरपादानाम्

गुह्यवज्रविलासिनीसाधनम् (योगिनीसर्वस्वम्)

GUHYAVAJRAVILĀSINĪSĀDHANAM 'YOGINĪSARVASVAM'

OF

SIDDHĀCĀRYA ŚRĪŚABARAPĀDA

गुह्यवज्रविलासिनीसाधनम्

(योगिनीसर्वस्वम्)

ॐ नमः श्रीवज्रविलासिन्यै ।

यस्मिन् सुरासुरसुरेन्द्रनरेन्द्रवृन्दा-
स्तत्पादपद्मपतिता भ्रमराः शिरोभिः ।
तं सिद्धिसाधनपयोधिमहानिधानं
श्रीलोकनाथचरणं शरणं व्रजामि ॥ १ ॥

या श्रीर्वज्रविलासिनी भगवती सम्भोगभक्त्याद्भुतं
नित्यानन्दमहोत्सवं वितनुते निर्वाकपीतांशुका ।
सत्त्वानां तथतैव विग्रहवती चातीव रागोज्ज्वला
तस्याः पादयुगं जगज्जयकरं वन्देऽभिवन्द्योत्तमम् ॥ २ ॥

न श्रुतं न पठितं किञ्चिच्छबरेणाद्रिचारिणा ।
लोकनाथाधिपत्येन वदेयं कियदक्षरम् ॥ ३ ॥

सर्वरत्नमये रम्ये गन्धमृगसुगन्धिनि ।
मनोभङ्गपदं दत्त्वा चित्तविश्रामपर्वते ॥ ४ ॥

तत्प्रदेशे महारम्ये सुगन्धिकुसुमाश्रये ।
लसत्कन्दरमाकन्दमन्दकूजितकोकिले ॥ ५ ॥

रक्ताशोकघनोद्याने ममाशोकाष्टमीतिथौ ।
गुरुणा करुणाङ्केन देशितेयं विलासिनी ॥ ६ ॥

यथाविधि समाचारैरेकचित्तसमाधिना ।
शबर्यां सहचर्यायां मया साऽभिमुखीकृता ॥ ७ ॥

वश्याकर्षणस्तम्भनमारणोच्चाटनानि च ।
अञ्जनं गुटिकासिद्धिस्तथान्यानि बहूनि च ॥ ८ ॥

महामुद्रापदं लब्ध्वा वाचा संयाचितं मया ।
विधिना भावयेद् यस्त्वां तस्मै दास्यसि तत्फलम् ॥ ९ ॥

भगवता यथोद्दिष्टं साधनं बोधिसाधनम् ।
तस्याः संक्षेपतः सारं लिखेल्लब्धनिमित्तकः ॥ १० ॥

लोभकाया(मा)दियुक्तानां तीर्थिकानां विशेषतः ।
हिंसाभिः क्रूरचित्तानां न देयं साधनोत्तमम् ॥ ११ ॥

बुद्धतीर्थिकसत्त्वानामपरिपाचितचेतसाम् ।
विगमदिव्योन्मत्तानां न देयं साधनोत्तमम् ॥ १२ ॥

खञ्जकुब्जादिघण्टा(षण्ढा)नां व्याधिदुःखितचेतसाम् ।
एतेषां नरनारीणां न देयं साधनोत्तमम् ॥ १३ ॥

लब्धाभिषेकशुद्धाय बहुज्ञाय कृपालवे ।
शान्तकान्तकृतज्ञाय प्रदेयं दिव्यसाधनम् ॥ १४ ॥

गुर्वाराधनतुष्टाय गुह्यविश्वासरक्षिणे ।
हीनोद्धरणचित्ताय । प्रदेयं दिव्यसाधनम् ॥ १५ ॥

सत्त्वार्थहितयुक्ताय कारुण्यबोधिकाङ्क्षिणे ।
नरनारीजनायेदं प्रदेयं दिव्यसाधनम् ॥ १६ ॥

आदौ सिद्धिविधिं ज्ञात्वा गुर्वाराधनपूर्वकम् ।
गुरुवाक्यामृतैस्तृप्तस्ततः साधनमारभेत् ॥ १७ ॥

पर्वतादिगुह्य(हा)मध्ये सुगन्धिकुसुमाश्रये ।
भावनीया सका(सुशा)न्तेन गुह्यवज्रविलासिनी ॥ १८ ॥
शून्यवेश्मनि स्वच्छन्दमुद्याने विजने वने ।
पूजनीया सदा देवी साधनीया यथाविधि ॥ १९ ॥

आदावुद्वर्तनं कुर्यात् सुगन्धकुसुमादिना ।
क्षालयेद् गुह्यवज्रं च मन्त्रविद्याविशेषतः ॥ २० ॥

नेत्रयोरञ्जनं कार्यं केशवेशं च शोभनम् ।
विद्यया तच्च कर्तव्यं निजलावण्यहेतवे ॥ २१ ॥

पद्मपाणितलं कुर्याद् बाहुमूलयुगं तथा ।
सुखस्पर्शं सदामोदि सुखसौभाग्यहेतवे ॥ २२ ॥

प्रवालकान्तमधरं [भालं] सिन्दूरराजितम् ।
ललाटे लाक्षकारेखां कर्णं वाऽशोकभूषितम् ॥ २३ ॥

त्यक्त्वाऽन्याभरणान्येषा मुक्ताहारप्रलम्बिनी ।
साधकोऽपि वरं रूपं पद्मनर्तेश्वरस्य च ॥ २४ ॥

कृष्टं मदनमासाद्य सुखाद्यं विद्यया सह ।
तावन्मात्रं तु कर्तव्यं न मनो विकलं यथा ॥ २५ ॥

द्वयोर्द्वयोश्चतुर्दश्यां तथाष्टम्यां विधानतः ।
रात्रावेवार्चयेद् देवीं मासे वारचतुष्टयम् ॥ २६ ॥

प्रदीपं ज्वालयेत् तत्र प्रभाकरसमप्रभम् ।
यथा प्रकाशते विश्वं(बिम्बं) प्रत्यङ्गं च विशेषतः ॥ २७ ॥

सिद्ध्यर्थमुपविश्याथ सत्त्वार्थकृतचेतसा ।
महामुद्रापदं गन्तुं सर्वबुद्धसमाहितः ॥ २८ ॥

लज्जादिकं परित्यज्य कोपलोभादिकं तथा ।
अणुमात्रां घृणां शङ्कां दूरतः परिवर्जयेत् ॥ २९ ॥

सुखासन[समा]सीनो विवासा मुक्तकुन्तलः ।
स्वजङ्घां [कि]ञ्चिदाकुञ्च्य दक्षिणाङ्गुलं प्रसारयेत् ॥ ३० ॥

तयोर्मध्यगतां विद्यां निवसनां मुक्तकुन्तलाम् ।
[तथा] लावण्यसम्पन्नां कुर्यात् तु सुपरिचिताम् ॥ ३१ ॥

मधो(ध्ये) मचूलकं दत्त्वा त्यक्तपद्मोत्कटासनाम् ।
देवीबाहुद्वय[मिव] तस्या बाहुद्वयं चरेत् ॥ ३२ ॥

तस्या धर्मोदयापत्रे कृत्वा वर्तुलमण्डलम् ।
वामकरामृताङ्गुल्या कुङ्कुमै रक्तचन्दनैः ॥ ३३ ॥

तदनु धर्मोदयाकारं तत्रैव मण्डलं चरेत् ।
एतन्मण्डलमन्त्रं तु मन्त्रोद्धारेऽस्ति भाषितम् ॥ ३४ ॥

एतन्मन्त्रं समुच्चार्य सीत्कारं च समुच्चरेत् ।
आद्यक्षरेण मन्त्रेण दद्यात् पुष्पं सुमध्यके ॥ ३५ ॥

शून्यतां भावयेद् योगी चतुर्ब्रह्मविहारिणः ।
ॐ शून्यतादिकं मन्त्रं मनसोच्चारयेत् ततः ॥ ३६ ॥

देव्याः पञ्चाक्षरं मन्त्रं पञ्चस्थानेषु विन्यसेत् ।
शिरोवदनचित्तेषु नाभौ वज्रे त्रिधा क्रमम् ॥ ३७ ॥

पञ्चस्थानेषु विद्याया यथारोपितमात्मनः ।
तथा मन्त्रार्चनं कुर्याद्धित्वा शून्यतादिमन्त्रकम् ॥ ३८ ॥

अथोदयमहारागं भावयेत् सूर्यमण्डलम् ।
विततं सुमनोरम्यं रक्ताकारं समुज्ज्वलम् ॥ ३९ ॥

तत्र धर्मोदयां ध्यात्वा रक्ताद्यक्षरसम्भवाम् ।
मनोह्लादकरीं पीतां क्षरल्लाक्षाद्रवोज्ज्वलाम् ॥ ४० ॥

सर्वकामसुखाधारां स्फुरदंश्वब्जविभ्रमाम् ।
धर्मसंभोगनिर्माणसर्वाकारविलक्षणम् ॥ ४१ ॥

अभिणयादयो (?) रक्तं जगच्चद्रार्कमिश्रितम् ।
भगगर्भस्थितं पश्येद् भ्रमन्तं चक्रसन्निभम् ॥ ४२ ॥

तस्योपरि महाबीजं तप्तकाञ्चनविग्रहम् ।
पञ्चाक्षरमहामन्त्रं ज्वलन्तं कल्पवह्निवत् ॥ ४३ ॥

रक्तं चानलमालाभिर्व्यापयन्तं जगत्त्रयम् ।
व्याप्ताकनिष्ठलोकाभिश्चिन्तयेद् बिम्बं विलक्षणम् ॥ ४४ ॥

द्रवीभूतं जगत्सर्वं विशन्तं तत्र मण्डले ।
द्रष्टव्यं वशगं विश्वं सत्त्वानां कृतचेतसाम् ॥ ४५ ॥

एतत्परिणतां देवीं बन्धूककुसुमप्रभाम् ।
रक्त(तप्त)हेमोज्ज्वलां गौरीं निजलावण्यभूषिताम् ॥ ४६ ॥

नवयौवनसम्पन्नां कर्णे चाशोकशोभिताम् ।
ललाटे लाक्षकारेखां मुक्ताहारविलम्बिनीम् ॥ ४७ ॥

सर्वलक्षणसम्पूर्णामन्यालङ्कारवर्जिताम् ।
अभिवाञ्छितसौभाग्यां नग्नां विमुक्तकुण्डलाम् ॥ ४८ ॥

पद्मनर्ते ध्वजोच्छ्रायसमारोपितपङ्कजाम् ।
उत्कटासननृत्यस्थां कटाक्षस्मितभङ्गुराम् ॥ ४९ ॥

वक्रीकृतोद्धृतभुजां वज्रकर्तिकरोद्यताम् ।
वामे पाशधरासारां लीलान्दोलितमेखलाम् ॥ ५० ॥

परिरम्भकराह्लादैः पद्मनर्तेश्वरात्मिकाम् ।
उल्लसद्भिर्दुरस्पर्शैः क्षरत्कमलविभ्रमाम् ॥ ५१ ॥

नितम्बजघनास्फालरणज्जृम्भितराजिताम् ।
स्फुरदाकुञ्चयोगेन वडवावच्चमत्कृताम् ॥ ५२ ॥

रक्तरश्मिघटाजालै रञ्जयन्तीं जगत्त्रयम् ।
तामेवाग्रस्थितां विद्यां ध्यायाद् वज्रविलासिनीम् ॥ ५३ ॥

एकदैव समुद्भूतं समबीजसुखाङ्कुरम् ।
पद्मनर्तेश्वरं बीजं पद्मरागरजोबलम् ॥ ५४ ॥

अभिव्यञ्जितरोमाग्रं सहजासक्तचेतसम् ।
सर्वलक्षणसम्पूर्णं द्विरष्टवर्षविग्रहम् ॥ ५५ ॥

नवयौवनसम्पन्नं कर्णे चाशोकशोभितम् ।
सुवर्णतिलकारेखं मुक्ताहारावलम्बितम् ॥ ५६ ॥

निजलावण्यसम्पन्नमन्यालङ्कारवर्जितम् ।
महारागरसाधारं मुक्तकेशं दिगम्बरम् ॥ ५७ ॥

वामकुञ्चितया किञ्चिद्विततं दक्षिणाङ्घ्र्या ।
जङ्घ्या सुरताचार्यं किञ्चिदुत्तानशायिनम् ॥ ५८ ॥

स्वकुर्या(कुचा)र्पितबाहुभ्यां भक्त्यालिङ्गनमुद्रकम् ।
सुव्यक्तं गुह्यवज्रेण नर्तयन्तं विलासिनीम् ॥ ५९ ॥

पीतपद्मधरं वामे दक्षिणे वज्रधारिणम् ।
आलिङ्गयन्तमाचुम्बं मुहुराबद्धलीलया ॥ ६० ॥

कुर्वन्तमतिरागेण सुरतं वाजिकूजितम् ।
सहजानन्दसुखास्वादैरर्धोन्मीलितलोचनम् ॥ ६१ ॥

इत्येवंभूतमात्मानं भावयेत् सुरतेश्वरम् ।
महासुखमिवाव्यक्तं पद्मनर्तेश्वरं विभुम् ॥ ६२ ॥

अतोऽस्या महादेव्यास्तप्तकाञ्चनरश्मिभिः ।
मिथः समरसीभूय त्रैलोक्यं रुधिराम्बुधिम् ॥ ६३ ॥

तन्मध्ये स्थितमात्मानं देव्या सह विनोदिनम् ।
महारागसुखायातं त्रैलोक्योदरवर्तिनम् ॥ ६४ ॥

तदनु चिन्तयेत् तूर्णमभिषिञ्चन्ति मां पुरः ।
तथागता लोकपालाः किन्नरासुरमानवाः ॥ ६५ ॥

रम्भा तिलोत्तमा चैव नाना चाप्सरसोगणाः ।
पुष्पधूपादिभिर्वाद्यैर्नानानृत्यमहोत्सवैः ॥ ६६ ॥

अथ मण्डलपूजां च कारयेत् त्रययोगतः ।
कायवाक्चित्तपूजाभिस्त्रयं कर्म विशोधयेत् ॥ ६७ ॥

मूलमन्त्रं समुच्चार्य देव्या नाम समुच्चरेत् ।
स इत्युच्चारणं कृत्वा पूजयेद् गुह्यमण्डलम् ॥ ६८ ॥

वामवृद्धामृताभ्यां तु धृत्वा पुष्पफलादिकम् ।
दातव्यं समरसं सर्वं वारत्रयमनाविलम् ॥ ६९ ॥

स्वकायं कुलिशं तद्वत् संपूज्य ललितोन्नतम् ।
तेनैव मन्त्रजापेन देव्या मन्त्रं प्रपूजयेत् ॥ ७० ॥

ललाटं लोचने कण्ठं घ्राणं गलद्वयं तथा ।
ओष्ठकण्ठौ हृदयं च स्तनौ कक्षौ विचक्षणः ॥ ७१ ॥

नाभिपदं च सम्पूज्य स्वकायं चार्पयेत् तथा ।
धूपं च चारयेत् तत्र यथाविधि सुगन्धितम् ॥ ७२ ॥

भगवत्याश्च कर्तव्या पद्मनर्तेश्वरस्य च ।
वज्रपीठादिपूजाऽऽदौ तेनैव क्रमयोगतः ॥ ७३ ॥

ताम्बूलं च प्रदातव्यं कर्पूरादिसुपूरितम् ।
अन्योन्यं भक्षणं कृत्वा गाथापाठं ततश्चरेत् ॥ ७४ ॥

महासुखप्रसन्नस्त्वमभिन्नोऽसि मया सह ।
रन्तुमालिङ्गनं देहि नर्तेश्वर नमोऽस्तु ते ॥ ७५ ॥

महासुखप्रसन्ना त्वमभिन्नासि मया सह ।
रन्तुमालिङ्गनं देहि विलासिनि नमोऽस्तु ते ॥ ७६ ॥

इति गाथां समुच्चार्य सम्पुटाञ्जलिकर्मणा ।
अन्योन्यवन्दनां कुर्यात् मधुराक्षरभाषणैः ॥ ७७ ॥

एकबीजसमुद्भूतं प्रज्ञोपायमयं जगत् ।
सर्वनारीमयी देवी सर्वोपायमयः प्रभुः ॥ ७८ ॥

अभिन्नोऽसि महाराज सहजार्थं समुद्यतः ।
एहि मेलापकं कर्तुं वज्रमुद्रामहर्द्धिकः ॥ ७९ ॥

गाथाद्वयं समुच्चार्य चित्तस्मरणपूर्वकम् ।
मिथ आलिङ्गनं कुर्यान्नवपुष्पिप्रयोगतः ॥ ८० ॥

आलिङ्गनं चुम्बनं तु स्तनयोर्मर्दनं शनैः ।
दर्शनं स्पर्शनं योनेर्विकाशं लिङ्गघर्षणम् ॥ ८१ ॥

प्रवेशोल्लासनं पद्मे प्रवेशस्त्रयभागतः ।
मणिमध्यसमूलैश्च नवपुष्पि प्रकीर्तितः ॥ ८२ ॥

चुम्बनं तु प्रदातव्यं यत्र पुष्पैः सुपूजितम् ।
मस्तकादिपादपर्यन्तं विंशत्यङ्गसमं गतौ ॥ ८३ ॥

नखक्षतं न दातव्यं पश्चात्तापनिवृत्तये ।
करजचुर्चुरास्पर्शैः प्रीणयेद् देवीविग्रहम् ॥ ८४ ।

वक्त्रासवं च पातव्यं वाजिकूजितपूर्वकम् ।
शुनीदन्तार्पणपातेन तद्वद् दंशनं शनैः ॥ ८५ ॥

किञ्चिदुत्तानको भूत्वा स्थातव्यं देवमुद्रया ।
आत्मीयमुद्रया देवी भिदुराग्रेण नृत्यते ॥ ८६ ॥

निश्चलात्तु सुखं बुद्धयेदति बा(चा)लनाच्चञ्चलं मनः ।
हेलया खेलया देवीसहजासक्तचेतसः ॥ ८७ ॥

रागाम्भोधिजलं तर्तुं सुना(नौ)केयमुपस्थिता ।
गुरुवाक्योदयं प्रासं वाहयेद् वाहकस्वरैः ॥ ८८ ॥

मत्वा स्थानत्रयं मर्मग्राहोत्सर्गगतागतम् ।
स्वस्वरेन्ते इयमायुर्प्पतं गिलेत खममक्षर (?) ॥ ८९ ॥

मन्थानस्थानं तु बोद्धव्यं विलक्षणक्षणोदितम् ।
वज्रेण क्षोभयेद् देवीं बोधिचित्तं न चोत्सृजेत् ॥ ९० ॥

उत्सृते बोधिचित्ते तु कुतस्तत्र महासुखम् ।
मन्थयेत् कमलाम्भोधिसहजामृतकाङ्क्षया ॥ ९१ ॥

वैराग्यकालकूटं च नोत्तिष्ठति यथा यथा ।
यथोक्तभावनापूर्वं देवदेव्या रसाश्मि(त्म)कम् ॥ ९२ ॥

तां भावनां भावयेद् धीमांस्त्रैलोक्यकारिणीम् ।
मन्थमन्थानयोगेन निःसृतं किमपि गा(गो)लकम् ॥ ९३ ॥

प्रोक्षणं तेन कुर्वीत बीजोच्चारणपूर्वकम् ।
ये ये (तत्तन्)मद्यादिद्रव्येषु प्रक्षिपेत् कमलगोलकम् ॥ ९४ ॥

तत्सन्तर्पणमात्रेण देवदेव्यौ प्रतुष्यतः ।
कमलमध्यगतं वज्रं किञ्चिदाकुञ्च्य पाणिना ॥ ९५ ॥

स्तब्धमुल्लालयेन्मन्त्री देवीतुष्टिः प्रजायते ।
करवृद्धाङ्गुलिभ्यां च पद्मपक्षद्वयं शनैः ॥ ९६ ॥

घटिताद्ध(तोद्घा)टितं कुर्यात् स्फरतश्च यथायथम् ।
कुर्यादान्दोलनाह्लादमाकुञ्चयेच्च पङ्कजम् ॥ ९७ ॥

किञ्चिन्नृत्यप्रभङ्गैश्च [स]कटाक्षस्मितैः करैः ।
युगयोस्तु प्रभाजालैस्त्रैलोक्यव्यापिमण्डले ॥ ९८ ॥

क्रीडमानं विलासिन्या भावयेदात्मविग्रहम् ।
गन्धर्वनगराकारं मृगतृष्णाम्बुचञ्चलम् ॥ ९९ ॥

तथेति भावनाभ्यासं सदा कुर्याद्विचक्षणः ।
भावनाखिन्नयोगस्तु जपे[च्च] वामपाणिना ॥ १०० ॥

पञ्चाक्षरं महाबीजं सर्वबुद्धैर्नमस्कृतम् ।
सप्तजन्मकृतोद्भूतं महाकिल्बिषनाशनम् ॥ १०१ ॥

देवीपद्मस्थितं मन्त्रं ज्वलन्तं रक्तषट्पदम् ।
स्वनाभिदूरं(भेरुरः)प्रविश्यादौ घ्राणरन्ध्रेण निःसृतम्॥ १०२ ॥

देवीघ्राणपुटं चैव प्रविश्य कमलवर्त्मना ।
पुनर्वज्रे समायातं पश्येदायातयातकम् ॥ १०३ ॥

दोलाजापोऽयमित्याहुः क्षिप्रसिद्धिकरो यतः ।
एतद्योगवरापेतो न सिद्धो भवति मुद्रया ॥ १०४ ॥

एकदैवं समुच्चार्य विद्यया सह सुस्वरम् ।
नादबिन्दुलयातीतमिदं जापस्य लक्षणम् ॥ १०५ ॥

शतमष्टोत्तरं जप्त्वा कुर्यादन्योन्यभूषणम् ।
वज्राब्जयोः समं तत्र मुहुर्गरुडमुद्रया ॥ १०६ ॥

दशधान्दोलनं देवान् दद्यादाह्लादचेतसा ।
पुनस्तेनैव योगेन जापमारभते सुधीः ॥ १०७ ॥

इत्यनेन क्रमेणैव सुजप्योऽयं यथाविधि ।
जापः पञ्चशतं यावत् समये तत्र मन्त्रिणा ॥ १०८ ॥

एतज्जापावसाने तु भावयेदात्ममेलकम् ।
बोधाम्भोधिं प्रवेश्यानुत्तरफलहेतवे ॥ १०९ ॥

युगनद्धमहारागोद्भूतापन्नं सप्रज्ञकम् ।
तप्तस्वर्णद्रवाकारं जगत् समरसोज्ज्वलम् ॥ ११० ॥

दक्षिणावर्तरूपेण भ्रमन्तं चक्रसन्निभम् ।
छेदयन्तं जगत्क्लेशं त्रैलोक्यस्यापि मण्डलम् ॥ १११ ॥

अशेषविषयकक्षाद् वासनामूलबृंहितात् ।
अपि भस्माणुदग्धा[च्च] शान्तिमेति द्रवानिलः ॥ ११२ ॥

शक्रचापक्रमेणैव तल्लीनं गगनाम्बुधौ ।
गगनं सहजे लीनं बोधाम्भोधौ महोदये ॥ ११३ ॥

अविद्यावासनाभ्यासादविद्यैव प्रहीयते ।
अतः प्रतीत्यजा भावाः स्वप्नजातमहोपमाः ॥ ११४ ॥

उत्पादस्थितिनाशस्तु विकल्पात् किल जायते ।
तदादौ कल्पना नास्ति तस्माद् बोधः प्रकाशते ॥ ११५ ॥

भावाभावो(वौ) निज(जे) लीन(नौ) परमार्थादिबोधतः ।
यथावत्ता परं नास्ति सत्यासत्यविवर्जिता ॥ ११६ ॥

इत्येवं हि समाधिस्थः सम्यगभ्यासनिश्चलः ।
तदा योगी भवेत् सिद्धो महामुद्रामहर्द्धिकः ॥ ११७ ॥

विद्योत्पन्नेऽशनौ पीठे कर्तव्यं मण्डलादिकम् ।
वज्रपीठोद्भवो देव आत्मना च विलासिनी ॥ ११८ ॥

तयोश्च पूर्ववत् सर्वं ध्यानजापादिकं तथा ।
कर्तव्यं विधिना योगं प्राप्याच्चैव यथोदितम् ॥ ११९ ॥

अथ यथा विहर्तव्यं समाधित्यक्तचेतसा ।
स्वयं नर्तेश्वरं ध्यात्वा विद्यया च विलासिनीम् ॥ १२० ॥

नित्यं च पूजयेन्मन्त्री रात्रेर्यामे चतुर्थके ।
पूर्ववद्विधिना मन्त्रं शतमष्टोत्तरं जपेत् ॥ १२१ ॥

विद्यायाः सर्वथा भावः स्वस्यैव वज्रपीठके ।
पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा नित्यपूजाविधिं चरेत् ॥ १२२ ॥

मुद्रापि पूर्ववत् सर्वं सूर्यधर्मोदयादिकम् ।
मेलकं तादृशा(शं) देव्या ध्यायन् मन्त्री रतोत्सवम् ॥ १२३ ॥

वज्रं करेण संगृह्य लालयेन्महामण्डयोगतः ।
मन्त्रजापादिकं तद्वद् बोधिचित्तं न चोत्सृजेत् ॥ १२४ ॥

उपायमेलकं भावे विद्यापि स्वाब्जमण्डले ।
पूर्ववन्मण्डलं कृत्वा नित्यपूजाविधिं चरेत् ॥ १२५ ॥

तर्जन्यङ्गुष्ठाङ्गुलिभ्यामेकीकृत्य सुयुग्मकम् ।
तद्वज्राब्जनियोगेन जापध्यानादिकं चरेत् ॥ १२६ ॥

य(त)दा [च] सुरताचार्यश्चतुर्योनिं चतुर्भुजाम् ।
चतुरान्दोलनं दिव्यं चतुर्मुद्राविशेषकम् ॥ १२७ ॥

गोपनीयं यथाचलं(चारं) मया तु खलु तस्करात् ।
स्फुटाक्षरपदैरेव बीजमन्त्रो न लिखितः ॥ १२८ ॥

आवादिदशान्तोऽयं लीकारो अनुमस्तकः ।
झान्तो वहति रीकारं रुकारं वश्च लीय(प)रः ॥ १२९ ॥

एष पञ्चाक्षरो मन्त्र इन्दुबिन्दुविभूषितः ।

एँ आँ रीँ रँ ब्रीँ ।

इति मन्त्रः सर्वकामफलदो जाप्यो यथाविधि ॥ १३० ॥

मन्त्रराजस्य सामर्थ्यं प्रत्यक्षं वा भविष्यति ।
सर्वसिद्धिमहाधेनोर्वत्सलो ह्यतिवत्सलः ॥ १३१ ॥

रते सुरते नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सुखेन सुखयोने सुबले विह्वले लिङ्गवज्रं ग्रस ग्रस ह ह ह अँ अँ अँ मम सर्वसत्त्वानां सर्वसिद्धिं देहि देहि सः ॥ १३२ ॥

ततः प्रथमाक्षरं दत्त्वा सुरतान्तं समुच्चरेत् ।
द्वितीयाक्षरमादाय द्रवान्तं च समुच्चरेत् ॥ १३३ ॥

तृतीयाक्षरमुद्गीर्य सुखयोन्यन्तं सुभण्यते ।
चतुर्थाक्षरमादाय विह्वलान्तं प्रगीयते ।
पञ्चमं च समुच्चार्य लिङ्गवज्रादिकं पठेत् ॥ १३४ ॥

[१]रते सुरते एँ नित्यक्लिन्ने मदद्रवे वीं सुखेन सुखयोने रीं सुबले विह्वले रँ लिङ्गवज्रं ब्रीँ ग्रस ग्रस ह ह ह अँ अँ अँ मम सर्वसत्त्वानां सर्वसिद्धिं देहि देहि सः ॥ १३५ ॥

मन्त्रोऽयं वलिदानेऽपि पठ्यते ।
निरंशुमालिका श्रेष्ठा मञ्जिष्ठादिसुरञ्जिता ।
प्रवालमालिका पुत्रजीविना ग्रथिता तथा ॥ १३६ ॥

रक्तचन्दनवृक्षस्य फलैर्वा रचिता प्रिया ।
शतमष्टोत्तरं कृत्वा रचेन्मालिकां विधानतः ॥ १३७ ॥

[अयं] योगवरेण्यस्य योगीन्द्रस्य तथा स्त्रियः ।
करणीयः सदाचारो ज्ञेयः सिद्धविधौ स्थितः ॥ १३८ ॥

स(स्व)कं शङ्केन्न वा भावं कर्तव्यो दिच (कर्तव्यं दिव्य)
लक्षणम् । सर्वसिद्धिविधौ ज्ञेयं सर्वज्ञेन यथोदितम् ॥ १३९ ॥

श्वासलाभो भवेन्मासे षण्मासे वाञ्छितं फलम् ।
ऋद्धिसिद्धिर्भवेदब्दे वश्याकृष्टिपुरःसरा ॥ १४० ॥

किङ्करीभूय सेवन्ते सदेवासुरमानुषाः ।
उर्वश्यादिमुखाः सर्वे मर्त्यस्थानां तु का कथा ॥ १४१ ॥

सदाऽभ्यासरतैः सम्यक् पूर्णे द्वादशवत्सरे ।
महामुद्रापदारूढः सिद्धो भवति साधकः ॥ १४२ ॥

स्मृत्वा यथोदितं पूर्वमभ्यसेत् तदनन्तरम् ।
अयथाकृत आरम्भो देवीक्षोभः पतिष्यति ॥ १४३ ॥

---

१ वस्तुतः मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिये—
एँ रते सुरते आँ नित्यक्लिन्ने मदद्रवे रीँ सुखेन सुखयोने रँ सुबले विह्वले ब्रीँ लिङ्गवज्र ग्रस ग्रस ह ह ह अँ अँ अँ मम सर्वसत्त्वानां सर्वसिद्धिं देहि देहि सः ।

अधिगम्यागमात् सर्वमगमद् रागसंकटम् ।
गुरुपादं विना वत्स मा गच्छ योगिनीनयम् ॥ १४४ ॥

यदि चन्द्रस्तथा सूर्यो भूमौ पतति शीर्यते ।
तथापि लोकनाथस्य नेदं वचो मृषा भवेत् ॥ १४५ ॥

गुह्योद्भूतनरो धर्मः सर्वसिद्धिनिधानकः ।
करुणाकरनाथेन कृपया देशितो मम ॥ १४६ ॥

यथैव मत्तमातङ्गो गुरुभिर्जालकादिभिः ।
प्रवशीक्रियते विज्ञैर्विज्ञानं च महोदयैः ॥ १४७ ॥

यथा महौषधं किञ्चित् सुस्वादं व्याधिघातकम् ।
प्रज्ञोपायसुखं तद्वद्धेलया क्लेशनाशनम् ॥ १४८ ॥

सर्वस्य रमणी रम्या रागिणां शुद्धरागिणाम् ।
एकस्य गलपाशः स्यादपरस्य बन्धकर्तिका ॥ १४९ ॥

अहो उपायसामर्थ्यं महायानानुयायिनाम् ।
कामिनीं गाढमालिङ्ग्य भुञ्जन्ति मकरध्वजम् ॥ १५० ॥

रसाश(रस)स्यांशो व्याधिर्विविधघनकामैकफलदः
सदा सत्त्वारामा रमणसहजानन्दमुदिता ।
तद्(तो) भूयो भूयो भुवनसुखसन्तुष्टमनसो
विनाक्लेशापाशो(यासं) जगदखिलमाप्नोति तथताम् ॥ १५१ ॥

इति गुह्यसमयतन्त्रे महायोगिनीजालतन्त्रे श्रीमल्लोकनाथपादेन देशितं योगिनीसर्वस्वं नाम गुह्यवज्रविलासिनीसाधनं समाप्तम् ॥

कृतिरियं सिद्धाचार्यशबरपादानाम् ॥



सिद्धाचार्यदउडीपादीया

गुह्यावली

GUHYĀVALĪ

OF

DAUḌĪPĀDA

गुह्यावली

ॐ नमः वज्रयोगिन्यै

ताम्रं काञ्चनतां न गच्छति महाक्लेशैरपि प्राणिनां
प्रज्ञापङ्कजसेवयापि सहजानन्दे(न्दो) न संभाव्यते ।
तस्माद् ये कृतपुण्यराशिवपुषः प्रादेशिकास्ते क्वचि-
न्मुद्राकुन्दुरुनिस्तरङ्गमनसः सिद्धास्तु तेभ्यो नमः ॥ १ ॥

या संवित् परिवर्णिता भगवता वज्राब्जयोगात् क्व सा
सत्त्वानामथ सम्प्रदायगमने रागाद् विरागः परम् ।
आनन्दद्वयमध्यवर्तिनि परिज्ञानोपदेशात्पुन-
स्तेषां सुरतसुखेन विहिता मुद्रादिमुक्तिस्थितिः ॥ २ ॥

तत्रादौ विरमस्य शेषपदवीरागस्य मध्यक्षणे
त्यक्त्वा स्त्रीसुखमन्यदक्षरसुखं गृह्णाति यस्तन्मयः ।
स श्रीमान् घनसारमुद्रणविधौ विज्ञो गुरोराज्ञया
स्वानन्दासवपानघूर्णितमना नाभ्येति मोहं सुधीः ॥ ३ ॥

गवां यूथन्यायक्रमगमनसंभावितधियां
कथा केयं तेषामशनिपदमेरौ विदधति ।
अधिष्ठानादस्माद् गुरुचरणसंजातरभसा
स्वयं प्रज्ञासङ्गो भवति कृतिनोऽनुत्तरपदम् ॥ ४ ॥

गुरुः स्वाधिष्ठानादपहरति चित्तं मतिमतां
स्वसंवेद्यं ज्ञानं झटिति कुरुते दुर्लभमपि ।
मिलत्तूलोपाधिर्ज्वलति सहसा भास्करमणिः
स्वभावो वस्तूनां कथमपि न यो[गे व्य]तिक्रमेत् ॥ ५ ॥

यदस्माभिः किञ्चिद्भिदुरधरमार्गेष्वधिगतं
तदुक्तं स्वज्ञानान्न किमपि बुधा दूषणमिह ।
अतः प्रज्ञायोगाद् यदि भवति समाधानमधिकं
गुरोः स्वाधिष्ठानादपि च न तृतीयोऽस्ति विषयः ॥ ६ ॥

रागान्ते विरमप्रवेशसमये चन्द्रे स्वभावस्थिते
यो वित्तिं मनसः प्रवृत्तिरपरो वायोर्निरुद्धा सृतिः ।
तत्काले यदनन्यसंभवसुखं साक्षात्परं तत्पदं
तत्र स्वानुभवो हि यस्य स पुनः सिद्धो महामुद्रया ॥ ७ ॥

विना प्रज्ञायोगं झटिति कुरुते वज्रपदवीं
सतां तद्योगाद्वा शिशिरकरसंबोधकरणात् ।
अधिष्ठानज्ञो यः स गुरुरिह नैवापर इति
प्रभावो यस्य द्राक् प्रभर्वति मनो दुर्जन इति ॥ ८ ॥

आनन्दद्वयमध्यजं क्षणमतिक्षुद्रं न संलक्ष्यते
तत्काले कथमाकरोति मनसा वज्राब्जयोगात्परम् ।
तस्मादक्षरसौख्यमेव सुजनैराश्रीयते यत्नतः
स्थित्वा तत्र चिरं समाहितजना गृह्णन्ति तत्त्वं पुनः ॥ ९ ॥

मृगाम्भः किं ग्राह्यं कमठनयनस्पन्दन इव
क्षणे साक्षात्कर्तुं पविजलजयोगश्रुतवताम् ।
चिरं चावस्थानादनुभवदशा संभवति सा
गते चन्द्रे वज्रात्पुनरिह हि सौख्यं न किमपि ॥ १० ।

प्रियासङ्गात्पूर्वं यदधिगतमात्यन्तिकसुखं
तदेवेदानीं चेत् किमधिवरमुद्राधिगमनम् ।
इहास्ते संविद्वाह्यसुखविषयादन्यदपरं
ततः कोऽप्येकोऽन्यः सहजसुखशम्भुः प्रभवति ॥ ११ ।

गुरोः स्वाधिष्ठानाद् भवति विदुषामिन्द्रियलयो
लयात् संविन्मात्रं स्फुरति निरपेक्षं त्रिजगति ।
असामान्यात्किं भूयादचिरमधिकं तत्त्वमपरं
प्रतिज्ञातं यैस्ते भिदुरधरसंवादिवपुषः ॥ १२ ।

अधिष्ठाने धन्ये जनितवरकर्मण्यपि सुरे
प्रभावः कोऽप्येष ध्वनयति तदन्तर्विनिहितम् ।
प्रभावस्याभावात् पशुसदृशयोगेश्वरनरः
सुरोऽप्यन्तःशून्यो मृदुगुरुशिलाकल्पितवपुः ॥ १३ ।

अनभ्यासादस्मादनधिगतमार्गादवचना-
दकस्मादक्लेशात् सततमपरोक्षात् सपदि च ।
गुरोराज्ञानन्दादुपरतपदे यस्तु क्रियते
न संविन्मात्रं यद्भवति तदधिष्ठानमिति च ॥ १४ ।

इह स्वाधिष्ठानक्रमजनितयोगैश्च यदयं
यदक्षा[णां भोगं न]त्यजति स्वनिर्मोकसदृशम् ।
गृहीतो रागाद्यैरविरतमनोवृत्तिरसिकः
स्वसंविद्देवीं न प्रविशति जलेऽन्तस्तलमिव ॥ १५ ।

एतत्पञ्चव्यसनरसिका यान्ति पापान्धकूपं
नो चेन्मोक्षं परिकृतपदाः स्वच्छभूमेर्विभेदात् ।
तत्सन्देहं प्रविशति कथं निर्विकल्पावलेपात्
संसाराब्धेर्विहरंति परः कः पुनस्तस्य पारम् ॥ १६ ।

एते पञ्च नयन्ति मोहतटिनीपारं परा नौरिव
व्याघातः परमस्ति कोऽपि विपदां हर्तुर्य एको महान् ।
अक्षाणामनुरागसुन्दरसुरापानप्रमत्तं मनः
स्फूर्जद्गन्धकरीन्द्र एष भुवने [१]धावन्निमां गां प्रति ॥ १७ ।

---

१. धावन् विषमां — मातृकापाठः ।

सुरा नारीसङ्गेऽप्युपनयति पुंसः पविपदं
गृहीतं न त्यक्तं तदिह भवधीमत्त्वविहितः ।
यदेकं पञ्चानामनुभव[दृशा वर्ण-]सुखदं ?
द्वितीयं तद्व्यापि स्थिरचलमशेषं जगदिति ॥ १८ ।

गुरोः पारम्पर्यक्रमजनितसंभावितधिया
तदेवाधिष्ठानं स्वपरवचनं क्षीयत इति ।
यतो दीपाद्दीपः प्रभवति ततोऽप्येवमपरे
प्रदीपा जायन्ते क्रमश इह को विस्मय इव ॥ १९ ।

ज्वलज्ज्वालो नीलज्वलनमनिशं शून्यभवने
जडो यस्तं यद्वद् भजति स सुखी तत्र भवति ।
गुरोः पादाम्भोजप्रणतिशतसंभूषितशिरो-
रजोरेखां लब्ध्वा सपदि कुरुते वज्रपदवीम् ॥ २० ।

अदूरे दूरे वा गुरुरिह कथा केयमसती
शिशोः संवित्सिद्धिर्भवति सहसा योजनशतैः ।
नभोभागे भानुर्वि(नौ वि)कसति सरोजं विकसति
प्रभावः शक्तानां भवति किमयं विस्मयकरः ॥ २१ ।

द्विधा तत्त्वज्ञानं सवचनमवाच्यं किमपि च
क्रमत्यङ्गादेकं यदपरमनङ्गात् क्रमति च ।
द्वयोरेकत्वे यः सततमवबोधात् प्रभवति
स्वतः सिद्धः सोऽयं भिदुरधरमार्गोत्तरपदम् ॥ २२ ।

प्राणी वज्रधरः कपालिवनितातुल्यो जगत्स्त्रीजनः
सोऽहं हेरुकमूर्तिरेष भगवान् यानप्रभिन्नो मयि ।
श्रीपद्मं मदनं च गोकुदहनं कुर्वन् यथा गौरवा-
देतत्सर्वमतीन्द्रियैकमनसा योगीश्वरः सिद्ध्यति ॥ २३ ।

क्वचित्प्रज्ञायोगात् क्वचिदपि च पञ्चेन्द्रियबलात्
क्वचित्स्वाधिष्ठानाद् गुरुवचनमार्गात् क्वचिदपि ।
रुचेर्भेदात् पुंसि प्रकटयति वज्राङ्कितकरो
न सिद्धं स्वासाध्यं किमपि यदवाग्गोचरपदम् ॥ २४ ।

[सच्छास्त्रसेवनमिहात्र][२] न मेऽस्तु ताव-
ज्ज्ञानं न मे पदपदार्थकथासु धीराः ।
चक्राङ्घ्रिपङ्कजरजःप्रणयादियं चेद्
गुह्यावली स्फुरति तत्किमहं करोमि ॥ २५ ।

इति दउडीपादीया गुह्यावली समाप्ता ॥

•

२. 'तत्रात्रश्रवनमत्र' इति मातृकापाठः ।

महापण्डित-वागीश्वरकीर्तिविरचितः

तत्त्वरत्नावलोकः

स्वोपज्ञविवरणसहितः

TATTVARATNĀVALOKAḤ

WITH

VIVARAṆA

OF

MAHĀPAṆḌITA-VĀGĪŚVARAKĪRTI

तत्त्वरत्नावलोकः[१]

ॐ नमः श्रीसद्गुरुपादेभ्यः[२] ।

अनुपमसुखरूपी श्रीनिवासोऽनिवासो
निरुपमदशदेवीरूपविद्यः सविद्यः ।
त्रिभुवनहितसौख्यप्राप्तिकारोऽविकारो
जयति कमलपाणिर्यावदाशाविकासाः ॥ १ ॥

[३]तत्त्वरत्नावलोकविवरणम्

[४]नमः समन्तकायवाक्चित्तवज्राय ।

[५]**अनुपमे**त्यादि । कमलं पद्मं पाणौ यस्य स **कमलपाणिर**-वलोकितेश्वरो भगवान्, **जयती**ति सम्बन्धः । किंविशिष्टः ? **अनुपम**-**मि**ति ।अतिप्रणीतत्वमहत्त्वासंसारस्थायि[६]स्वलक्षणैर्धर्मैर्युक्तस्यान्यस्याभावा-दुपमारहितं **सुखमेव रूपं** स्वभावो यस्य स तथोक्तः । पुनरपि किंवि-

---

१. भो॰ तत्त्वरत्नालोकः ।
२. भो॰ བཅོམ་ལྡན་འདས་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། (नमः भगवन्मञ्जुवज्राय) ।
३. भो॰ तत्त्वरत्नालोकव्याख्यानम्।
४. भो॰ བཅོམ་ལྡན་འདས་གསུང་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། (नमः भगवद्वागीश्वराय)।
५. भो॰ इतः पूर्वम्—

འོད་དཔག་མེད་པ་རིན་ཆེན་གྱིས། ।
འོད་ཀྱིས་སྤྱི་གཙུག་མཛེས་པ་ཡིས། ।
འཇིག་རྟེན་དབང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ।
བཞི་པའི་སྣང་བར་རབ་བཤད་བྱ། ।

६. भो॰ 'स्व' नास्ति ।

शिष्ट: ? **श्री:** पुण्यज्ञानसंभारलक्षणा, तस्या **निवास** आश्रयो य: स तथा, धर्मकायरूपित्वेन सर्वगतत्वात् । प्रतिनियतनिवासाभावा**दनिवास:** । पुन: कीदृश: ? **निरुपमा:** परमरूपयौवनशृङ्गारादिरसमहाकरुणादि-युक्तत्वेन [1]उपमातिक्रान्ता रूपवज्रादितारापर्यन्त**दशदेवीरूपा विद्या:** सपरिचारकत्वेन यस्य स तथा । सह स्वाभारूपया विद्यया वर्तत इति **सविद्य:** । **त्रिभुवनस्य** त्रिभुवनवर्तिनो जनस्य यद्धितमायति पथ्यं बुद्धत्वादिकं **सौख्यं** तद्वापयति पथ्यं चक्रवर्तित्वादिकम्, तस्य या **प्राप्ति:** साक्षात्क्रिया तस्या: करणं **कारो** यस्य स तथा । अपरिनिर्वाण-धर्मकत्वेनाप्रतिष्ठितनिर्वाणरूपत्वेनान्यथात्वलक्षणस्य विकारस्याभावा**दविकार:** । एवंविशिष्टो भगवान् जयति । कियन्तं कालम् ? इत्याह— **यावदाशाविकासा:** । आशा दशदिशो गगनस्वरूपा: । यद्वा आशा: सर्वसत्त्वानां भवभोगतृष्णास्तासां विकासा अवकाशा: प्रवर्तनानि, प्रादुर्भावा इति यावत् । ता यावत्तावद्भगवान् जयति । सर्वहरिहर-हिरण्यगर्भादिभ्य: प्रकृष्टो भवतीत्यर्थ: । [2]अत्रानुपमसुखरूपीत्यनेन स्वार्थसंपत्ति: कथिता । श्रीनिवास इत्यनेन तदुपाय:, पुण्यज्ञानसंभारयो: श्रीशब्देनाभिहितत्वात् । त्रिभुवनहितसौख्यप्राप्तिकार इत्यनेन परार्थ-संपत्तिरुक्ता । निरुपमदशदेवीरूपविद्य: सविद्य इत्यनेन तदुपाय: । तथाभूतदशदेवीद्वात्रिंशल्लक्षणाशीत्यनुव्यञ्जनकायाकारशून्येन सर्वाकारपरार्थसंपत्ते: कर्तुमशक्यत्वादिति ॥ १ ॥

श्रीमन्त्रनीतिगतचारुचतुर्थसेक-
रूपं विदन्ति नहि ये स्फुटशब्दशून्यम् ।
नानोपदेशगणसंकुलसम्भेदै-
स्तेषां स्फुटावगतये क्रियते प्रयत्न: ॥ २ ॥

---

१. भो० དཔེ་མེད་པ་སྟེ། (निरुपमा:) ।

२. भो० དེ་ལ་ (तत्र) ।

श्रीमन्त्रनीतिशब्देन सामान्ययोगतन्त्रवाचकेनापि श्रीसमाजः परिगृह्यते, चतुर्थार्थकस्यान्यत्रासंभवात् । शेषं सुबोधम् । [1]**नानाचार्योपदेशगणसंकुलैर्व्याकुलैः सप्तभिर्भेदैः** प्रकारैरतीतानागतवर्तमानाचार्यगतोपदेशराशिसंग्राहकैः । **स्फुटावगतये** सुखेन स्फुटप्रतीत्यर्थमिति ॥ २ ॥

संभ्रान्तबोधा निखिला हि तीर्थ्या-
स्तत्त्वस्य साध्यस्य च रूपवित्तौ ।
तेभ्यः प्रकृष्टः किल तत्त्ववेत्ता
वेदान्तवादीति [जन]प्रवादः ॥ ३ ॥

संभ्रान्तेत्यादि । संभ्रान्तो विभ्रान्तो **बोधः** प्रज्ञाविशेषो येषां तीर्थिकानां तथोक्ताः । सर्व एव **तीर्थ्या** आत्मात्मीयग्रहतिमिरोपहतबुद्धिनयनाः । तत्त्वमिदमिति साध्यं चेदमिति च **तत्त्वस्य साध्यस्य** तत् (यत्) स्व**रूपं** तस्य या **वित्तिः** प्रतीतिस्तस्यां भ्रान्ताः । शेषं सुबोधम् । ननु तत्त्वसाध्ययोरुपादेयत्वेनैकरूपत्वात् तत्त्वस्य साध्यस्य चेति [कथं] भेदेन निर्देश इति चेत्, असदेतत्, तत्त्वं ह्युपादेयत्वेनापि सुखदुःखोपेक्षादिसकलप्रतिभाससन्दोहव्यापकम् । साध्यं चानभिमतपरिहारेणेच्छालक्षणं फलम् । उपादेयत्वेऽपि सकलप्राणिभिरवश्यमेवासाध्यव्यावृत्त्या साधयितव्यत्वेनाभिमतमित्यदोषः ॥ ३ ॥

आनन्दरूपं स्वविदप्रकम्प्यं
वेदान्तिनः साध्यमुषन्ति सान्तम् ।
सश्रावकाखड्गजिनाश्च साध्य-
मिच्छन्ति रूपाद्युपधेर्विरामम् ॥ ४ ॥

---

१. भो० དུ་མའི་མན་ངག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་གྱི་སློབ་དཔོན་དུ་མའི་མན་ངག་གིས་ཚོགས་ཡང་དག་པར་འདུས་པའི་བདུན་གྱི་དབྱེ་བས་ཡོངས་སུ་དཀྲུགས་པ་ནི། རྣམ་པར་དཀྲུགས་པས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་རྣམ་པར་ཁྱབ་པ་སྟེ། ངེས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དཀྲུགས་པའོ། (नानोपदेश इत्यादि । नानाचार्योपदेशगणसंकुलैर्व्याकुलैः सप्तभिर्भेदैः ।)

तत्र तावद्वेदान्तवाद्यभिमतं साध्यमाह—**आनन्दरूपमित्यादि** । **आनन्दरूपमि**ति सदासुखमयत्वात् । **स्वविदि**ति ज्योतिरूपत्वेन स्वयं प्रकाशमाना(नत्वा)त्। **अप्रकम्प्यमि**ति नित्यतया कम्पयितुमशक्यत्वात् । **सान्तमि**ति क्लेशोपक्लेशशून्यत्वेन परिकल्पितत्वात् । एवंविधं **साध्यमुषन्ति** कामयन्ते। सह **श्रावकै**र्वर्तन्ते ये **खड्गजिनाः** खड्गविषाणकल्पाः । एकचारिणो वनचारिणश्च प्रत्येकबुद्धास्ते **साध्यमिच्छन्ति** । कीदृशम् ? **रूपाद्युपधेर्विरामं** रूपवेदनासंज्ञासंस्कारविज्ञानलक्षणानामुपधीनां स्कन्धानां विरामं विच्छेदम्, निरोधमिति यावत् । एतदुक्तं भवति—सर्वश्रावकप्रत्येकबुद्धाः सोपधिशेषनिरुपधिशेषभेदेन भिन्नेऽपि निर्वाणे निरुपधिशेषमेव निर्वाणं साक्षात्कर्तव्यत्वेन साध्यं प्रतिपन्नाः॥ ४ ॥

आकारशून्यं गगनेन्दुरूपं
प्रत्यात्मवेद्यं करुणारसं च ।
सल्लक्षणैर्भूषितमर्थकारि
दानादिनिष्यन्दमपेतसौख्यम् ॥ ५ ॥

इदानीं पारमितानयवादिनामभिमतं चतुर्विधं साध्यमाह—**आकारशून्यमित्यादि** ।**आकारै**र्नीलपीतसुखदुःखादिभिश्चित्ररूपैः **शून्यं** निराकारम् । अत एव गगनस्येव निराकारत्वेन, **इन्दो**रिव प्रभास्वरत्वेन रूपं स्वभावो यस्य तत्तथा। **प्रत्यात्मवेद्यमि**ति स्वसंवेद्य(द)नैकवेद्यं करुणादुःखादुःखहेतोर्वा सकलजगदत्युद्धरणकामता सैव **रसः** स्वभावो यस्य तत्तथोक्तम् । एतदुक्तं भवति—नीलपीतादिचित्राकारशून्यं निराभासनिरञ्जनं गगनोपमं स्वच्छं सकलजगदर्थकारि महाकरुणायुक्तं प्रत्यात्मवेद्यं पारमितोपदेशशब्दाभिधेयं साध्यमिति पारमितानये प्रथमं साध्यम् । शोभनानि च तानि **लक्षणानि** च द्वात्रिंशल्लक्षणसंज्ञकानि चेति । **तैर्भूषितम्** । अर्थं जनानां प्रयोजनं कर्तुं शीलं स्वभावो यस्य त**दर्थकारि** । **दानादी**नां दशपारमितानां **निष्यन्दं** तत्प्रकर्षप्रभवत्वेन सदृशं फलम् ।

दुःखस्य पूर्वमेव [१]प्रहीणत्वात् साक्षात्कृतावस्थायां सौख्यस्याप्यभावत्वात् । उपेक्षारूपत्वे**नापेतसौख्यम**पगतसौख्यम् । एतदुक्तं भवति—द्वात्रिंशल्लक्षणधराशीत्यनुव्यञ्जनविराजितशरीरं सकलजगदर्थकारि दानादिपारमिताभ्यासबलेनात्मानं सम्यक्संबुद्धरूपं सुखदुःखरहितत्वेनोपेक्षारूपं द्वितीयं साध्यम् ॥ ५ ॥

सानन्दसल्लक्षणमण्डिताङ्गं
संभुज्यमानं दशभूमिसंस्थैः ।
सत्त्वार्थकारि प्रवदन्ति साध्यं
दानादिषट्पारमितानयस्थाः ॥ ६ ॥

सानन्देत्यादि । सहानन्देन वर्तत इति **सानन्दम्,** सानन्दं च तत् **सल्लक्षणमण्डिताङ्गं संभुज्यमानं** धर्मदेशनाद्वारेणो[२]पजीव्यमानम् । कैः? **दशभूमीश्वरैः,** परिशिष्टभूमिस्थितानामगोचरत्वात् । दशभूमिप्राप्तैरवलोकितेश्वरमञ्जुश्रीप्रभृतिभिरुपभुज्यमानमिति यावत्[३] । एतदुक्तं भवति—शुद्धावासोपरि घनव्यूहसंज्ञको(कः) सम्यक्संबुद्धभुवने यथा भगवानानन्दरूपः संभोगकायात्मा निर्माणद्वारेण सकलजगदर्थसम्पादकः श्रावकप्रत्येकबुद्धनवभूमीश्वरैरप्यदृश्यशरीरो दशभूमीश्वरैरेव परं बोधिसत्त्वैर्धर्मश्रवणद्वारेणोपभुज्यमानमासंसारं चकास्ति । तथैव तत् साध्यमिति तृतीयम् ॥ ६ ॥

संपूर्य दानादिगुणानशेषान्
संबुद्ध्य कृत्यं सकलं च कृत्वा ।
यद्भूतकोटेः करणं च साक्षात्
साध्यं तदप्यस्ति निरोधरूपम् ॥ ७ ॥

---

१. भो० སྤངས་ (प्रहाण) ।

२. भो० ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་ (उपभुज्यमानं) ।

३. भो० ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། (शेषं सुबोधम्) इत्यधिकम् ।

संपूर्येत्यादि । **दानादि**पारमिता एव **गुणा** गुण्यन्तेऽभ्यस्यन्त इति कृत्वा, तान् **संपूर्य** परिपूर्णं कृत्वा यत् संबुद्धानां **सकलम**वश्यकर्तव्यं कृत्स्नं तदपि **कृत्वा भूतकोटेः** शून्यतालक्षणायाश्चित्तचैत्य(त्त)-निरोधात्मिकाया यत् **साक्षात्करणम्, तदपि साध्यमस्ती**ति पारमिता-नयस्था एवं ब्रुवते चतुर्थं साध्यमिति ॥ ७ ॥

स्वाभाङ्गणा(ना)श्लेषि तदर्थकारि
दुःखैः सुखैश्चैव विमुक्तिरूपम् ।
अशीत्यनुव्यञ्जनभूषिताङ्ग-
मपेतकल्पं प्रवदन्ति साध्यम् ॥ ८ ॥

इदानीं मन्त्रनयोपदिष्टं सप्तविधं साध्यं कथयितुमाह— **स्वाभाङ्गने**-त्यादि । स्वाभाङ्गणा(ना)माश्लेषितुं शीलं स्वभावो यस्य तत् **स्वाभाङ्ग-णा(ना)श्लेषि** । **अपेतकल्पं** व्यपगतकल्पं कल्पनारहितमिति यावत् । अन्यत् सुबोधम् । अयमर्थः— समालिङ्गितस्वाभाङ्गनाश्लेषजगदर्थकारि द्वात्रिंशल्लक्षणविभूषितशरीरमुपेक्षारूपं[१] प्रथमं साध्यम् ॥८ ॥

स्वदेवताकारविशेषशून्यं
प्रागेव संभाव्य सुखं स्फुटं सत् ।
महासुखाख्यं जगदर्थकारि
चिन्तामणिप्रख्यमुवाच कश्चित् ॥ ९ ॥

स्वदेवतेत्यादि । [२]**स्वदेवताकारविशेषेण** स्वेष्टदेवताकारेण **शून्यं** निराकारमिति यावत् । **प्रागेव** प्रथमतरोपदेशा[न]न्तरमेव देवताकार-निरपेक्षं **सुखं संभाव्य** भावनया साक्षात्कृत्वा स्फुटीकृतं **सन्महासुख-संज्ञकं** भवति । तच्च **जगदर्थकारि चिन्तामणि**समानरूपम् । एतदुक्तं

---

१. भो० འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་དུ་བཞུགས་པ་མངོན་དུ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། (यावत् संसारस्थायी साक्षात् क्रियते) इत्यधिकम् ।
२. भो० 'स्व' नास्ति ।

भवति— उपदेशानन्तरमेव मन्त्रमुद्रादेवताकाररहितं [1]भावनया स्फुटीकृतं महासुखसंज्ञकं चिन्तामणिवद् जगदर्थकारि मायोपमम् आसंसारस्थायि द्वितीयं साध्यम्॥ ९ ॥

कृत्वा साक्षात् स्वाधिपं सातरूपं
पश्चात् त्यक्त्वा सातमात्रं फलं स्यात् ।
शुद्धं साक्षाच्छक्यते नैव कर्तुं
तेनाकारो भावितः स्वाधिपस्य ॥ १० ॥

कृत्वेत्यादि । **स्वाधिपं** स्वेष्टदैवतं **साक्षात्कृत्वा**ऽऽमुखीकृत्य **सातरूपं** सुखैकस्वभावं **पश्चाद्** देवताकारं **परित्यज्य** सुखमात्र**फलं** साध्यं व्यवस्थितं **स्यात्** । ननु साक्षात्कृत्वापि देवताकारस्त्यक्तव्यः, तर्हि प्रथममेव कस्माद् विभावितः । सुखमात्रमेव द्वितीयसाध्यवत् किं [2]न विभावितः ? किं वृथाप्रयासेनेत्याह— **शुद्धमि**त्यादि । **शुद्धं** केवलं देवताकारविरहितं सुखमात्रं **नैव साक्षात्कर्तुं शक्यते,** आकाररहितस्य सुखस्यानुपलम्भात् । तस्मात् **तेन** कारणे**नाकारो भावितः** । **स्वाधिपस्ये**ति तृतीयः । अयमर्थः— देवताकारसंवलितमेव सुखं विभाव्य साक्षाद्भूते देवताकारं त्यक्त्वा सुखमात्रमेव साध्यमुक्तगुणम् ॥ १० ॥

गगणसमशरीरं लक्षणैर्भूषिताङ्गं
निरुपमसुखपूर्णं स्वाभया संगतं च ।
स्फुरदमितमुनीन्द्रः सर्वसत्त्वार्थकारि
प्रवदति पुनरन्यः साध्यमुच्छेदशून्यम् ॥ ११ ॥

गगणेत्यादि । **गगणसमं** मायोपमविचारासहं **शरीरं** यस्य **लक्षणै**र्द्वात्रिंशद्भिरशीतिभिश्चानुव्यञ्जनैर्मण्डितान्यङ्गानि यस्य । **निरुपमैः**

---

१. भो॰ བདེ་བ་འབའ་ཞིག་ཙམ་ (केवलसुखमात्रं) इत्यधिकम् ।
२. विभागतः — मातृकापाठः ।

स्थौल्यनैरुत्त(रन्त)र्यासंसारं प्रवाहित्वनिराश्र(स्र)वत्वादिभिरुपमाभावाद् उपमातिक्रान्तैः **सुखैः** पूर्णतां समा[१]श्रयन्तं **सम्पूर्णम्** । **स्वाभया** च तथाभूतया **संगतं** समालिङ्गितं स्फुरद्भिरनन्त[२]निर्मितै**र्मुनीन्द्रै**स्तथाभूतैरेव [३]**सर्वसत्त्वार्थकारि** । उच्छेदेनेति निरोधेन शून्यं [४]भूस्थं रिक्तम् । एतदुक्तं भवति—गगनमाया[५]मरीचिगन्धर्वनगरोदकचन्द्रप्रतिबिम्बस्वप्नोपमम्, एकानेकभावाभावग्राह्यग्राहकस्वभावरहितमनाद्यन्तमशेषवस्तुसंदोहस्वभावमनाभासं निरञ्जनं सर्वोपमातिक्रान्तं परमसूक्ष्मातिगम्भीरप्रज्ञारूपतया धर्मकायस्वभावम्, द्वात्रिंशल्लक्षणविभूषितशरीरमशीत्यनुव्यञ्जनविराजितगात्रम्, परमशृङ्गारयौवनाद्युपेतम्, स्वाभाङ्गनालिङ्गिताङ्गम्, रूपवज्रादितारापर्यन्तदेवीगणैरनन्तप्रभेदानिमित्तारतिस्वरूपपरमानन्दोपभोगद्वारेण प्रतिबिम्बवत् संभुज्यमानम्, करुणासंवलितोदाररूपतया संभोगकायरूपम्, नानाधिमुक्तिविनेयजनपरिपाव(च)नार्थमनेकविध[६]प्रातिहार्यद्वारेण निर्मिता-नन्तकुलान्तर्भूतसंबुद्धबोधि[७]स्फरणसंहारकारित्वेन निर्माणकाया[८]त्मकम्, शून्यताकरुणाभिन्नबोधिचित्तस्वभावामलप्रज्ञोपायसमाधिसंभूतसत्सुखापूर्णम्, आसंसारस्थितिधर्माणामप्रतिष्ठितनिर्वाणरूपम्, निर्मलनिवातनिश्चलप्रदीपशिखाप्रबन्धनित्यतया निरोधशून्यं चतुर्थं साध्यम् ॥ ११ ॥

कृत्वा साक्षात् स्वाधिपं सातरूपं
[९]भावोपेक्षाज्ञानमात्रं फलं स्यात् ।

---

१. भो० བ་སྤུ་རྩེ་མོའི་མཐར་ཐུག་པར་ (रोमाग्रपर्यन्तम्) ।
२. भो० 'निर्मित्त'–नास्ति ।
३. भो० 'सर्व'–नास्ति ।
४. भो० भूस्थं रिक्तं इत्यस्य स्थाने སྤངས་པའོ། (त्याज्या) ।
५. भो० མིག་འཕྲུལ་དང་ (इन्द्रजाल) इत्यधिकम् ।
६. भो० རྫུ་འཕྲུལ་དང་ (ऋद्धि) इत्यधिकम् ।
७. भो० སེམས་པ་ལ་སོགས་པའི་ (सत्त्वादि) इत्यधिकम् ।
८. भो० སྐུའི་མཚན་ཉིད་དང་ (कायलक्षणात्मकम्) ।
९. 'त्यज्योपेक्षा' मातृकापाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी ।

आसंसारस्थायि सत्त्वार्थकारि
चिन्तारत्नप्रख्यमेकान्तशान्तम् ॥ १२ ॥

कृत्वेत्यादि । साक्षात् स्वाधिपं कृत्वा पश्चात् त्यक्त्वा, **उपेक्षारूपं यज्ज्ञानं** तन्मात्रं साध्यं स्यात् । अन्यत् सुगमम् । एतदुक्तं भवति—मण्डलचक्ररूपं साक्षात्कृत्वा पश्चात्तन्निरोध्य उपेक्षाज्ञानमात्रं साध्यं स्यात् पञ्चमम् ॥ १२ ॥

कृत्वा साक्षान्मण्डलं सातरूपं
पश्चात्तस्य स्वेच्छया निर्वृतिं च ।
सत्त्वार्थस्याप्यस्त्यभावो न वास्मिन्
प्रादुर्भावो निर्वृतादस्ति यस्मात् ॥ १३ ॥

कृत्वेत्यादि । कृत्वा साक्षान्मण्डलं सातं संवलितं **तस्य स्वेच्छया निर्वृतिर्निरोधः** । ननु यदि साक्षात्कृत्वापि पश्चात् स्वेच्छया निरोधयितव्यः, तदा करुणाया अनेककालाभ्यस्ताया अभावः स्यात् ? तस्याश्चाभावात् सत्त्वार्थाभावः स्यादित्याशङ्क्याह— **सत्त्वार्थस्याप्यस्त्यभावो न वेत्यादि । अस्मिन्** पक्षे सत्त्वार्थाभावो नास्ति, यस्मान्निर्वृताच्चक्रात् करुणासंवलितात् सत्त्वार्थस्य **प्रादुर्भावोऽस्ति** । एतेनैतदेवाह—सातसंपूर्णचक्रं साक्षात्कृत्वा यावदिष्टं कालं व्यवस्थाप्य पश्चात्तस्य सर्वथैव प्रदीपवन्निरोधं कृत्वा स्थातव्यम् । यदा पुनः सत्त्वार्थाभिलाषो भवति तदा निरुद्धादेव चक्रान्तरमुत्पाद्य सत्त्वार्थः कर्तव्यः । चक्रान्तरोत्पादेऽपि [1]चित्तनिरुद्धादेव चक्राद्यथा भव्यतया विनेयानां यथाभिलषितप्राप्तिर्भवतीति षष्ठम्[2] ॥ १३ ॥

कृत्वा स्फुटं रूपमभीष्टमेषां
पश्चान्निरोधं फलमाह कश्चित् ।

---

१. भो० རིང་དུ་འགགས་པའི་ (चिरनिरुद्धा) ।

२. भो० བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ (साध्यम्) इत्यधिकम् ।

अभिन्नरूपश्च यतो निरोधो
न पक्षभेदेऽपि ततोऽस्ति भेदः ॥ १४ ॥

कृत्वेत्यादि । षण्णां पक्षाणा[१]मर्थफलस्य साध्यत्वाद्यद्यदे**वाभीष्टं** तदेव साक्षात्कृत्वा **पश्चात्** सर्वथैव प्रदीपव**न्निरोधः** । उत्तरकालं सत्त्वार्थादिशून्यः साक्षात्कर्तव्यः । ननु षट्पक्षभेदेन षडेव निरोधाः स्युः ? तत्कथमेक एव निरोध इत्याशङ्क्याह—**अभिन्ने**त्यादि । **अभिन्नं रूपं** यस्य तत्तथा । **नहि निरोधा**नां षट्**पक्ष**लक्षण**भेदेऽपि भेदोऽस्ति**, अभावैकरूपतया निरोधस्य समानत्वात् । अयमर्थः—अन्यतमपक्षं साक्षात्कृत्वा पश्चात्तस्य सन्तानोच्छेदरूपो निरोध इति सप्तमं साध्यम् ॥ १४ ॥

प्रज्ञाज्ञानादुत्तरं बोधिचित्ता-
स्वादस्तुर्यं सेष(क)माहावरं तत् ।
यस्मात् सर्वो भावनासु प्रयासो
व्यर्थः प्राप्तस्तत्फलस्य प्रसिद्धेः[२] ॥ १५ ॥

प्रज्ञाज्ञानेत्यादि । [३]**प्रज्ञाज्ञानो**पदेशा**दुत्तर**कालं यत्सं**बोधिचित्तस्या**-मृतरूपस्य रसनया ग्रहणम्, तत् **तुर्यं** चतुर्थं **सेकमाह** कश्चित्, तच्चा**वरं** हीनं विनिकृष्टमिति यावत् । कस्मादवरम्, **यस्मात् सर्वप्रयासो** मन्त्रमुद्रादेवताद्याकार**भावनासु** पुनः पुनरनुष्ठानलक्षणस्तथागतोक्तो **व्यर्थः प्राप्तः** । कु**तस्तत्फलस्य** भावनासाध्यस्य फलस्य बोधिचित्तास्वादकाल एव प्रसिद्धत्वात् प्राप्तत्वात् । अन्यस्य विशिष्टस्य फलस्याभावादिति यावत् ॥ १५ ॥

---

१. भो० ནང་ནས་ (मध्ये) ।

२. भो० རབ་ཏུ་མི་རུང་ཕྱིར་ (अप्रसिद्धेः)

३. भो० ཤེས་རབ་དང་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཏེ། དབང་བསྐུར་བའི་བྱེ་བྲག་གོ། ཕྱིས་ནི་འདས་པའི་འོག་ཏུའོ། (प्रज्ञा च ज्ञानं प्रज्ञाज्ञानम्, अभिषेकस्य विशेषः, उत्तरं पश्चात्) ।

प्रज्ञाज्ञानादुत्तरं प्राप्तरामा-
स्वादस्तुर्यं सेकमाहाधमं तत् ।
यस्मात् सर्वो भावनादौ प्रयत्नो
बुद्धोद्दिष्टो निष्फलः संप्रसक्तः ॥ १६ ॥

प्रज्ञेत्यादि । **प्रज्ञाज्ञानादुत्तर**कालं याः **प्राप्ता** यथामिलिता **रामाः** स्त्रियस्तासां [1]समापत्तिद्वारेण य **आस्वादः**, तत्तु**र्यं सेकं** तदप्य**धमम्** । शेषं गतार्थम् ।

अथ "चतुर्थं तत्पुनः [तथा]" (गु० त० १८.११२) इति व्याख्यायते । चतुर्थमिति प्रज्ञाज्ञानं तृतीयमपेक्ष्य चतुर्थमित्युच्यते । तदिति तच्छब्देन तदेव प्रज्ञाज्ञानं तद्रूपं परामृश्यते । पुनरिति पुनः शब्देन तस्माद्विशेषः । विशेषश्चात्र निरास्रव[2]निरन्तरात्यन्तस्फीताविच्छिन्नप्रबन्ध-प्रवाहित्वलक्षण। तथेति तथाशब्देन तादृशत्वमभिधीयते । तादृशत्वं च यादृश्या प्रज्ञादियुक्तया सामग्र्या यादृशं प्रज्ञाज्ञानमुत्पन्नं पश्चादपि तादृश्यैव सामग्र्या तथैव चोत्पद्यते, नान्यथेति तथाशब्दार्थः । अत्र च लक्ष्यलक्षण-भावेनार्थो बोद्धव्यः । [3]लक्ष्यतेऽनेनेति लक्षणम् अनुभूयमानं प्रज्ञाज्ञानम्, अप्रतीयमानस्य लक्षणत्वायोगात्, नागृहीतविशेषणा विशेष्यबुद्धिरिति न्यायात् । लक्ष्यते ज्ञायते प्रतिपाद्यतेऽनेनेति लक्ष्यं साक्षात्करिष्यमाणं चतुर्थम् ।

अत्र चतुर्थं नास्तीत्येके ।

ननु चतुर्थमित्येतदस्ति तत्पदं तत्कथं नास्तीत्युच्यते ? सत्यम्, उपदेशसंरक्षार्थं सत्त्वव्यामोहनाय च तृतीयमेव चतुर्थशब्देनोक्तं भगवता । अन्यथा तत्पुनरिति नोक्तं स्यात् । तदत्यन्तासंगतम्, चतुर्थस्य प्रमाण-

---

१. भो० རིག་པའི་སྒོ་ནས་ (विद्याद्वारेण) ।
२. मातृकायां 'निरुत्तराभ्यन्तर', गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी ।
३. भो० འདིར་གོ་བར་བྱེད་པས་ན་ (अत्र प्रतिपाद्यते) इत्यधिकम् ।

सिद्धस्य प्रतिपादितत्वात्, प्रतिपादयिष्यमाणत्वाच्चेति । अत्र लक्षणं प्रज्ञाज्ञानं प्रतीतमेव सर्वैः, लक्ष्या(क्ष्ये) परं व्यामोहः । तद् विचार्यते । लक्ष्यं हि [१]भगवदर्थरूपं वा स्यात्, ज्ञानरूपं वा ? न तावदर्थरूपम्, अर्थस्यैकस्याभावात्, एकानेकवियोगित्वेन प्रमाणेन तस्य निराकृतत्वात् । मन्त्रनये च विज्ञानवादमध्यमकमतयोरेव प्रधानत्वाद् ज्ञानरूपं वा स्यात् । ज्ञानं च साकारं वा निराकारं वा, साकारमपि चित्राद्वैतरूपं वा स्यादनेकरूपं वा स्यादिति विकल्पाः । तत्र साकारविज्ञानं सर्वथैव गगणकमलवन्नास्तीति निराकारवादिनो ब्रुवते ।

ननु नीलपीतशुक्लादिघटपटप्र(श)कटादिरूपेण वाऽऽकाराः प्रतिभासन्ते प्रत्यक्षतः । ते चार्थस्याभावाद् ज्ञानरूपा एव । तत् कथं साकारं नास्तीति ? सत्यम्, प्रतिभासन्त एवाकाराः, परमलीकरूपेण । अलीकरूपता च एकानेकवियोगित्वप्रमाणलक्षणेन प्रसिद्धा । तस्य च प्रमाणस्वरूपस्यान्यत्र कथितत्वान्नेह प्रतन्यते । अलीकत्वप्रसिद्धा च मायामया इवाकारा भ्रान्तिरूपाः प्रकाश्यन्ते । भ्रान्तिनिवृत्तौ च निराकारमेव शुद्धस्फटिकसंकाशं पार[मा]र्थिकं सिद्धं भवतीति । अतश्चित्राद्वैतरूपमनेकरूपं च साकारं विज्ञानमस्तीति विकल्पद्वयं निरस्तं भवतीति ।

ननु निराकारमपि विज्ञानमुपलब्धिलक्षणप्राप्तं स्वप्नेऽपि नोपलभ्यते, तत्कथं तदस्ति परमार्थमित्युच्यते ? उच्यते , [२]सुखाकारं विज्ञानमन्तःपरिस्फुरद्रूपं निराकारं संवेद्यत एव, नीलाद्याकाराः पुनरलीकाः प्रतिभासन्ते । अन्यथा तेषां सत्यत्वे सर्व एवाकाराः सत्याः स्युः । तथाहि ग्राह्यग्राहकभावादिकमपि सत्यं स्यात् । ततश्च सर्वेषामेव सत्यप्रतिभासत्वेन यु[मु]क्तिप्रसङ्गात्, केषाञ्चिदपि मिथ्याप्रतिभासस्य भ्रान्तिरूपस्याप्रतिभासनात् । तथा चोक्तम्— ‘‘द्रष्टव्यं भूततो भूतं भूतदर्शी

१. भो० ‘भगवत्’ नास्ति ।
२. भो० ཤེས་པ་རྣམས་ནི་བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ (ज्ञानं सुखाद्याकारम्) ।

विमुच्यते'' (अभि० अ० ५.२१) ।तस्मादकामकेनापि नीलाद्याकाराणामलीकत्वमे[1]वैष्टव्यम् । [2]सुखादिकं निराकारं सत्यमुपलभ्यते । तत्कथं नोपलभ्यत इति ।

ननु सुखाद्याकारमेव विज्ञानमुपलभ्यते, सुखादेराकारस्वभावत्वात् । न च सुखाद्याकारशून्यं ज्ञानं स्वप्नेऽपि संवेद्यते । सकलभ्रान्तिविगमादष्टम्यां भूमावुपलब्धिलक्षणप्राप्तिर्भवतीति । अत्रापि [3]शपथोल्लङ्घनं विना अन्यन्न प्रमाणमस्ति प्रसाधकमिति, [4]तदभिप्रायापरिज्ञानात्, सुखाद्याकारस्यैव नीलाद्याकाररहितस्य विज्ञानस्य निराकारत्वेनेष्टत्वात् । तच्चेदानीमेव स्वसंवेदनप्रमाणसिद्धं सकलप्राणभृतामस्तीति कथं नोपलब्धिः ।

ननु तदप्येकानेकस्वभाववियोगादलीकमेव भ्रान्तिमात्रम्, एकानेकस्वभावरहितस्य साकारनिराकारविज्ञानव्यापित्वात् ।

नन्वनेन न्यायेन सकलसाकारनिराकारविज्ञानस्यालीकत्वप्रसाधनान्न किञ्चिदपि पारमार्थिकं वस्तुतत्त्वमस्तीति ?तत्कथं लक्ष्यस्य स्वरूपं प्रमाणत उपलक्षयितव्यम् । नैष दोषः, मध्यमकमते प्रमाणतोऽलीकतासिद्धावपि मायोपमप्रतिभासमात्रस्यैकानेकस्वभावरहितस्य धर्मिरूपस्याप्रतिषेधात् । तत्रैव चालीके प्रतिभासमात्रे लक्ष्यलक्षणसंसारनिर्वाणमण्डलचक्रादिभावना सकलजगदर्थक्रियादीनामव्याहता व्यवस्था [च] सिध्यतीति । तथा चोक्तम्—

''बुद्धत्वं वज्रसत्त्वत्वं संवृत्यैव प्रसाधयेत्'' इति ।

---

१. भो० ལྟ་བར་བྱ་ (द्रष्टव्यम्) ।

२. भो० བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་ (सुखाद्याकारम्) ।

३. अत्र मातृकायां 'कोसपानं विना' इति पाठोऽस्ति, गृहीतपाठस्तु भोटानुसारी ।

४. भो० དེ་ནི་བདེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ་ (तदसत्यम्) ।

ननु सर्वमेव वस्तुजातमलीकरूपतया निःसारम्, तदा किमर्थं [१]मण्डलचक्रादिभावनाप्रयासः क्रियते ? असदेतत् । मिथ्याध्यारोपणार्थं यत्नोऽसत्योपि [२]मुक्तये इति वचनात् । यद्यपि विचार्यमाणं पारमार्थिकं वस्तुरूपं नास्ति, तथाप्यहं सुखी भवेयं [मा] दुःख्यभूवमिति तृष्णा सकलप्राणभृतामस्ति । यथा तुल्येऽपि मिथ्यात्वे शुभाशुभस्वप्नयोः शुभ-स्वप्नदर्शनात् सौमनस्यम्, अशुभस्वप्नदर्शनाच्च दौर्मनस्यम्, तदपनयनाय च सद्धर्मपाठमन्त्रजापादौ प्रवृत्तिर्भवति, तथा मिथ्यात्वाविशेषेऽपि दुःखादिप्राकृतविकल्पहानाय सम्यक्संबोधिलक्षण[३]प्राप्तये च प्रेक्षावता-मर्थिनां प्रवृत्तिर्भविष्यतीति ।

ननु यदर्थत्वादयमारम्भः सोऽर्थः प्रलयं गतः । तथाहि लक्ष्य-लक्षणचिन्ताऽत्र प्रस्तुता सा च विस्मृता, क्व गतेति न ज्ञायते ।

ननु कृतैव सा सप्तभिर्भेदैः । सत्यम्, किन्तु गुडगोरसन्यायेन । तथाहि न ज्ञायते, किं तत्सारमसारं वेति ? उच्यते, मन्त्र[४]नयविहित-क्रमाभावात्, [५]समापत्तिभावनावैयर्थ्याद् युक्ता(क्त्य)भावाच्च प्रथमस्य निःसारता । तथाहि— समग्रसामग्रीकं [६]यत्तदवश्यमेव भवति । अन्यथा समग्रसामग्रीकमेव तन्न भवेत् । साक्षात्करणावस्थायां समग्रसामग्रीकं तद्वर्तते, [७]तदवश्यं तेन भवितव्यम् । सति च भवने न प्रथमस्य हानिरिति । शरीराद्याकारशून्यस्य केवलसातरूपस्यानुप[ल]ब्धेर्न द्वितीयस्य सारता । तथाहि— प्रमाणनिश्चितं प्रेक्षावता भावनीयं न यथाकथञ्चित् । प्रमाणेन संवलितरूपमेव सर्वदोपलभ्यते । तदेव सर्वजनानां कमनीयतया

---

१. भो० བྲི་བའི་ (लेख्य) इत्यधिकम् ।

२. अत्र मातृकायां 'यत्नोऽसत्यपि भानोक्तरीति' इतिपाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी ।

३. भो० འབྲས་བུ་ (फल) इत्यधिकम् ।

४. भो० ཚུལ་ལ་ (नये) ।

५. भो० ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ (देवतायोगम्) इत्यधिकम् ।

६. भो० འབྲས་བུ་གང་ཡིན་པ་དེ་ (यत् फलं तद्) ।

७. भो० དེའི་འབྲས་བུ་ (तत् फलम्) ।

प्रतिभासते । तस्मात् केवलस्य [१]रुच्यभावा[२]च्चक्राकारसंवलितस्योपलब्धेः साक्षात्कर्तुमशक्यता(त्वा)च्च[३] द्वितीयस्य कल्पना[मा]त्रतेति, निरुपद्रव-भूतार्थस्वभावत्वेन सात्मीभूतस्य त्यक्तुमशक्यत्वात्। संवलितरूपस्य भेदाभावात् प्रयोजनाभावाच्च न तृतीयः [४]कल्पनाभावः। तथाहि सहोप-लम्भेन तादात्म्यसिद्धावेकस्य परित्यागेऽपरस्यावश्यं परित्यागो न वा कस्यचिदिति । प्रपञ्चत्वेन बहुप्रयासत्वाद्विचारासहत्वेन भ्रान्तिरूपतयाऽ-परमार्थरूपतया च न [५]तृतीयपक्षस्य कल्यान(ण)तेति । [६]अत्र केचिद्युक्तिं वर्णयन्ति— प्रपञ्चरूपत्वाभावेऽपि सूक्ष्मस्य बिन्द्वादेः पुनः पुनर्भावनया साक्षात्करणं यावत् प्रयासस्तावत् [७]सर्वत्रैव भाव्यवस्तुनि संभवति । तदत्र यदि प्रयासभयम्, न किञ्चिदपि भावनीयं प्रपञ्चरूपत्वादिति चेत्, प्रपञ्चा-प्रपञ्चयोर्भावनावस्थायां को विशेष इति चेत्, अप्रपञ्चं शीघ्रमेव स्थिरी-भवतीत्ययं विशेषः ।

ननु यत्रैवालम्बने चित्तं पुनः पुनः प्रेर्यते, निरुत्तरं (निरन्तरं) दीर्घकालं च तत्रैव स्थिरीभवतीत्यागमः, युक्तिश्चात्रास्ति । तथा चोक्तम्—

तस्माद् भूतमभूतं वा यद्यदेवाभिभाव्यते ।
भावनाबलनिष्पत्तौ तत्स्फुटाकल्पधीः फलम् ॥
(प्र० वा० २.२८५)

पुनश्चोक्तम्—

अहो कुसीदत्वमहो विमूढता
अहो जनस्यास्य सदर्थवक्रता ।

---

१. भो० མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་ (अनुपलब्धात्) । इत्यधिकम् ।
२. भो० འཁོར་ལོའི་རང་བཞིན་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་ (चक्रस्य स्वभावानुपलब्धात्) ।
३. भो० འབད་པ་ཉིད་མཚུང་པའི་ཕྱིར་ (तुल्ययत्नत्वात्) इत्यधिकम् ।
४. भो० དགེ་བ་མ་ཡིན་ཏེ་ (कल्याणाभावः) ।
५. 'तृतीयान्तः। लक्षस्य' इति मातृकापाठः, गृहीतस्तु भोटानुसारी ।
६. भो० དེ་ལ་ (तत्र) ।
७. भो० ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྒོམ་པའི་ཕྱིར་ (पुनः पुनर्भावनया) इत्यधिकम् ।

स्वचित्तमात्रप्रतिबुद्धबुद्धता
अदूरवर्तिन्यपि यन्न सेव्यते ॥ इति ।

तस्मान्नायं विशेषः । [१]भ्रान्तिरूपत्वेनापरमार्थत्वमपि सर्वत्रैव भावनाविशेषे वस्तुनि [२]संभवतीति न किञ्चिदपि भावनीयं स्यात् । ततश्च सर्वत्रैव मोक्षमार्गे भावनाया वैयर्थ्यं स्यात् । मायोपमाकारानुप्रवेशेन भ्रान्तिरूपमप्यप्रपञ्चाद् भाव्यमानमदुष्टं भवतीति चेत्, न त्वयं मायाकारानुप्रवेशः प्रपञ्चेऽपि समान इति । तत्रापि को दोषस्यावकाशः । तस्मात् [३]प्रपञ्चमप्रपञ्चं वा यदेव रोचते प्रमाणसंगतमितरद्वा तदेवालस्यं विहाय [४]महापुरुषार्थिभिर्भावयितव्यमित्यलमतिप्रसङ्गेनेति। अत्र च सारेतरविभागः पर्युपासितगुरुभिरेव ज्ञातव्यः ।

तृतीयपक्षे कुतो दोषा नीरसत्वेन ते प्रयोजनाभावान्मन्त्रनयक्रमाभावाच्च न पञ्चमः परिक्षीणदोषः ।

ननु साक्षात्करणात् पूर्वं मन्त्रनयप्रयोगोऽस्ति, तत्कथं तस्याभावः ? सत्यम्, साक्षात्फलावस्था साध्या । तस्यां च नास्त्यसौ क्रमः । साक्षात्परित्यागे च न प्रयोजनमुत्पश्याम इति । स्वेच्छया निर्वापयितुमशक्यत्वात् प्रयोजनाभावात् सत्त्वार्थाभावाच्च न [५]प्रपञ्चान्तरप्रभेदकल्पना कलङ्काशून्या । तथाहि कस्यचिद् निवृत्तिः कारणनिवृत्त्या व्यापकनिवृत्त्या वा भवति । न चात्र साक्षात्कृतमण्डलचक्रस्य निवर्तकं कारणं व्यापकं वा [६]इच्छाकाले दृश्यते ।

---

१. भो० སྤྲོས་པ་ལ་དམིགས་པ་ནི་ (प्रपञ्चालम्बनस्तु) इत्यधिकम् ।

२. भो० མི་འཁྲུལ་བས་ (अभ्रान्ते) ।

३. भो० དོན་དུ་གཉེར་བས་ (अर्थिभिः) इत्यधिकम् ।

४. भो० ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ (महामुद्रा) ।

५. भो० ལྔ་པའི་མཐའི་ (पञ्चमस्यान्ते) ।

६. भो० རང་གི་འདོད་པས་འགོག་པ་ཡང་མི་ནུས་ཏེ་མི་མཐུན་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྤྱག་བསྔལ་ལ་སོགས་པ་
འགོག་པར་འདོད་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པ་ལ་འཇུག་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། इत्यधिकम् ।

ननु शून्यतैव निवर्तिकास्ति । यथा दारुसंघाते प्रज्वलितो वह्निर्नि:शेषमिन्धनं भस्मीकृत्य पश्चात् स्वरसत एव निवर्तते, तथा मण्डलचक्र-प्रज्वलितः शून्यताज्ञानाग्निः साक्षान्मण्डलचक्रं निवर्तयिष्यतीति चेत्; तदसत्, विषमत्वाद् दृष्टान्तस्य । तथाहि तत्रेन्धनं न कारणं वह्नेः । कार्यमिन्धनलक्षणनिवृत्तौ युक्तैव वह्निलक्षणस्य कार्यस्य निवृत्तिः। इह तु न शून्यता कारणं मण्डलचक्रस्य तत् कथं तन्निवृत्तौ निवृत्तिः । अथवा न च शून्यताया निवृत्तिरस्ति ।

ननु सा [न] भवतु कारणं शून्यता व्यापकं तु भविष्यति । व्यापकस्य वृक्षस्य निवृत्तौ शिंशपात्वस्य व्याप्यस्य निवृत्तिवन्निवृत्तिर्भविष्यतीति चेत्, एतदप्यसारम् । तथाहि शून्यता सर्वदा सर्वज्ञेयमण्डल-व्यापिका तत्त्वरूपा । न च तस्या निवृत्तिः कदाचिदप्यस्ति । यदि स्यात् सम्यक्संबोधिसाक्षात्करणात् पूर्वमनन्तरमेव वा निवृत्तिः स्यात् । न च भवति । सम्यक्संबुद्धीभूयापि कतिपयकालावस्थानस्य स्वयमेव स्वीकृत-त्वात् । किन्तु शून्यतापि ज्ञानरूपा, चक्रमपि ज्ञानरूपम् । शून्यता-ज्ञानोत्पत्त्या चक्रज्ञानस्यानिवृत्तौ शून्यताज्ञानं केन निवर्तनीयम् । तेन निवृत्तिश्च विरोधिनोऽभावात्कारणव्यापकयोश्चाभावान्नास्ति तस्माच्छून्यता-ज्ञानस्य निवृत्तिः । नापि मण्डलचक्रस्य शून्यतातो निवृत्तिरिति । शून्यता न निवर्तिका । को ब्रूते शून्यता निवर्तिका ? किं तर्हि यन्निवर्त-कास्तद्गुरूपदेशतो ज्ञेयमित्यप्यसारम्। गुरूपदेशतोऽपि न शून्यता-व्यतिरिक्तः प्रमाणतोऽस्तीति । यत्किञ्चिदेतत् । प्रतिक्षणनिवृत्तिश्च क्षण-भङ्गरूपा सर्वपदार्थव्यापिनी। न सा सन्ताननिवर्तिका । तस्मान्न स्वेच्छया निवृत्तिः । न च निवर्त्या(वृत्त्या) नीरसरूपया प्रयोजनमस्ति प्रेक्षावताम् । तथा चोक्तम्—

मुच्यमानेषु सत्त्वेषु ये ते प्रामोद्यसागराः ।
तैरेव ननु पर्याप्तं मोक्षेणारसिकेन किम् ॥ इति ।

(बो० च० ८.१०८)

सत्त्वार्थोऽपि निवृत्तौ नास्ति। नहि गगने गगनकमले वा काचिदर्थक्रिया संभवति। चिरनिरुद्धादप्यतीतादवस्तुरूपाच्चक्रात् सत्त्वार्थो भविष्यतीत्यप्यसारम्, विरुतस्यापि कुक्कुटस्य कण्ठध्वनिप्रसङ्गात् ।

ननु योग्यधिष्ठानाद् गगनादप्यर्थक्रियाः संभवन्ति ? न संभवन्ति, योग्यधिष्ठानादेव चित्तरूपादर्थक्रिया न गगनात्, नीरूपत्वात्तस्य ।

ननु निरोध्य मण्डलचक्रं सत्त्वार्थकाले पुनरुत्पाद्यते, ततोऽर्थक्रिया भवति, ततः पुनरेव निरोध्यते, पुनरेवोत्पद्यत इति चेत्, असदेतत् । यथा सत्त्वार्थक्रियायास्तत्त्वतो नास्ति प्रादुर्भावः, तथा चक्रस्यापि । ततो नार्थक्रियायाःसम्भवः । न च निरोध्य पुनरुत्पादे किञ्चित् प्रयोजन-मस्तीत्यलमतिप्रपञ्चेनेति । षष्ठपक्षोक्तसन्दोहस्याष्टमेऽपि भावान्न पिष्टपेषणं क्रियते ।

ननु षष्ठेन सप्तमस्य समानत्वात् कथं सप्तमस्य ततो विशेषः ? अस्ति विशेषः । पूर्वावस्थायां नियतचक्राकारता, पुनः स्वेच्छया स्वेच्छोत्पादनं चेति । सप्तमे पुनरेतन्नास्ति । ततो न समानता भिन्नश्च निर्दिष्ट इति ॥ १६ ॥

दम्भोलिबीजश्रुतिधौतशुद्ध-
पाथोज्ज(ज)भूताङ्कुरभूतपुष्टि ।
तुरीयशस्यं परिपाकमेत(ति)
स्फुटं चतुर्थं विदुषोऽपि गूढम् ॥ १७ ॥

दम्भोलीत्यादि । एतत्सद्गुरूपदेशतो ज्ञेयम् ॥ १७ ॥

पञ्चप्रदीपामृतबिन्दुचन्द्र-
भ्रूमध्यबिन्दूद्भवमण्डलानि ।
वायोः स्वरूपं गलशुण्डिकाद्य-
मतत्त्वरूपं स्वयमूहनीयम् ॥ १८ ॥

पञ्चप्रदीपेत्यादि । **पञ्चप्रदीप**शब्देन गोकुदहनलक्षणस्य, **अमृत**-शब्देन विमुमारशुलक्षणस्य सततानुष्ठानमेव साध्यं मन्यन्ते । **बिन्दुरि**ति

हृच्चन्द्रस्थं बिन्दुं देदीप्यमानं तत्त्वं साध्यं चेति कृत्वा केचिद्भावयन्ति । **चन्द्र** इति हृदिस्थं कलारूपम् अर्द्धचन्द्रं वा हृत्कमलस्थं केचिद्भावयन्ति । **भ्रूमध्यबिन्दूद्भवमण्डलानी**ति भ्रुवोर्मध्ये ऊर्णायां बिन्दुं विभाव्य तद्बिन्दूद्भवानि मण्डलानि वायुवारुणमाहेन्द्राग्नेयलक्षणानि। एतदुक्तं भवति— मुखश्रवणनासिकाचक्षुर्घ्राणरसनानि हस्ताङ्गुलीभिः पिधाय भ्रूमध्यबिन्दुर्द्रष्टव्यः। तस्य स्फुटावस्थायां शुभाशुभनिमित्तसंसूचकानि माहेन्द्रादिमण्डलान्युपजायन्ते। तं च बिन्दुं तत्त्वमिति मन्यन्ते। **वायोः स्वरूपमि**। पूरककुम्भकरेचक[1]प्रशान्तक[2]लक्षणम् आनापानादिलक्षणं चेति। [ए]तदुक्तं भवति— सै(शै)वसं(सां)ख्यादिनिर्दिष्टं वायुस्वरूपं ज्ञात्वा तं वायुं निरोधभावनया स्थिरीकृत्याकाशेनोत्प्लुत्य गमनं परपुरप्रवेशं यावन्मुक्तिं च साक्षात्कुर्वन्ति वायुवादिनः । **गलशुण्डिके**ति । गलप्रदेशे जिह्वामूलोपरि हस्तिशुण्डिकाकारा अधःप्रलम्बमाना उपजिह्वासंज्ञिका गलशुण्डिकाऽस्ति । सा च शक्तिरूपा, तदधः[3]शिवरूपमस्ति तत्त्वम् । सा च जिह्वाग्रेण स्पृश्यमाना निरन्तरामृतं स्रवति । तेन च घर्घरामृतवर्षणेन सन्तर्प्यमानमात्मानं ध्यायादिति गलशुण्डिकातत्त्वम्। आदिशब्देन हृन्मध्यषोडशनाडिकाचक्रमध्य[4]स्थज्ञानस्वरूपं शिवरूपं तत्त्वं भावयितव्यमित्यादीनां परिग्रहः। [5]तत्सर्वं तीर्थिकादिभिस्तत्त्वरूपेणाभिमतम्। **अतत्त्वमि**ति। **स्वयमेवोहनीयं** विचारणीयमिति यावत् ॥ १८ ॥

---

१. भो० शान्तक ।
२. भो० लक्षणं- नास्ति ।
३. भो० སྡིག་པའི་རང་བཞིན་ (पापस्वरूपम् ?) ।
४. भो० 'हूँ' इत्यधिकम् ।
५. भो० अत्र श्लोकद्वयमधिकं वर्तते । ཡང་སྨྲས་པ་ –

བཅུ་ལས་དྲུག་ལྷག་རྩ་དང་ལྡན་པའི་འཁོར་ལོ་ཡི། |
དཀྱིལ་ན་གནས་པའི་སྙིང་གར་རྣམ་པར་གནས་པའི་བདག |
དེས་ནི་དེ་ཡི་ཁྱད་པར་ལྷ་བུའི་གྲུབ་པ་སྟེར། |
དེས་ནི་མངོན་པར་མི་གཡོ་བ་ཡི་ཡིད་དག་གིས། |
རྒྱལ་འགྱུར་པ་ཡི་སེམས་དེ་དེ་ལྟར་མངོན་པར་བསམ། |

स्वप्नेन्द्रजालप्रतिबिम्बमाया-
मरीचिगन्धर्वपुराम्बुचन्द्रैः ।
अन्यैश्च सर्वैरुपमाभिधेयै-
र्नैवाऽस्ति साध्यं कथितादिहान्यत् ॥ १९ ॥

स्वप्नेन्द्रजालेत्यादि । **स्वप्नेन्द्रजालोपमं प्रतिबिम्बमायामरीचिगन्धर्वनगरोदकचन्द्रोपममिति** शब्दैरन्यैश्च गगणप्रतिश्रुत्कफेनोपममित्यादिशब्दै**रुपमाभिधेयैरु**पमावाचकै**र्नैवास्ति साध्यं** कथितात् साध्यादन्यत् । परं कथित एव साध्ये एते शब्दाः प्रवर्तन्त इति स्वयं बोद्धव्यम् ॥ १९ ॥

गम्भीरशून्यप्रतिभासमात्र-
शान्तातिसूक्ष्मानभिलाप्यशब्दैः ।
निर्लेपनी[रू]पनिरञ्जनाद्यै-
र्भ्रान्तिर्न कार्याऽपरसाध्यसत्त्वे ॥ २० ॥

गम्भीरशून्यं प्रतिभासमात्रं शान्तातिसूक्ष्ममनभिलाप्यं निर्लेपं निरुपमं (नीरूपम्) निरञ्जनम्। आदिशब्दात् शिवं निराकारं निष्प्रपञ्चमनाद्यन्तनिधनमित्यादिशब्दै**र्भ्रान्तिर्न** कर्तव्या । **अपरसाध्यसत्त्वे** । अपरस्य साध्यस्य सत्त्वे सत्तायाम् । एभिः सर्वैरेव परमपि किञ्चित् साध्यं कथितादस्तीति भ्रान्तिर्न कर्तव्या । अथ नातिकथितमेव साध्यम् एभिः सर्वैरभिधीयत इति निश्चयः ॥ २० ॥

अखिलगगणगर्भव्यापिसप्तप्रकार-
ग्रथितवचनरूपाद्यन्मयासादि पुण्यम् ।
अनुपमसुखविद्यासक्तसद्देहनिर्मि-
ज्जिनजनितजनार्थस्तेन लोकोऽयमस्तु ॥

॥ तत्त्वरत्नावलोकः समाप्तः ॥

རྒྱབ་པར་སྒྱུར་བའི་མགོན་པོ་རྒྱལ་བར་སྒྱུར་དེ་ནི། ।
རྒྱས་པ་དག་གིས་དེ་ནི་ཡོངས་སུ་བསྒྱུར་དང་བཅས། ।

कृतिरियं पण्डितवागीश्वरकीर्तिपादानाम् ॥

श्रीसमाजे परा यस्य भक्तिर्निष्ठा च निर्मला ।
तस्य वागीश्वरस्येयं कृतिर्विमतिनाशिनी ॥

विकचकुमुदक्षीरतारकुन्दानुकारि
प्रचितमपि च पुण्यं यन्मया ग्रन्थितोऽस्मात् ।
अनुपमसुखपूर्णः स्वाभविद्योपगूढो
भवतु निखिललोकस्तेन वागीश्वरश्रीः ॥

॥ तत्त्वरत्नावलोकविवरणं समाप्तम् ॥

कृतिरियं पण्डिताचार्यवागीश्वरकीर्तिपादानाम् ॥

•

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཏཏྭརཏྣཱལོཀ བོད་སྐད་དུ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བ། བཅོམ་ལྡན་འདས་འཇམ་པའི་རྡོ་རྗེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

དཔེ་མེད་བདེ་བའི་ངོ་བོ་དཔལ་གྱི་གནས་གྱུར་གནས་འདྲེན་པ། །
དཔེ་མེད་ལྷ་མོ་བཅུ་ཡི་ངོ་བོ་རིག་དང་རིག་པར་བཅས། །
སྲིད་པ་གསུམ་ཕན་བདེ་བ་ཐོབ་མཛད་འགྱུར་མིན་[1]འགྱུར་བ་མེད།།
ཇི་སྲིད་རེ་བ་སྣང་བར་ཕྱག་ན་པདྨ་རྒྱལ་གྱུར་ཅིག ༡ །

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་བཤད་པ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཏཏྭརཏྣཱལོཀབྱཱཁྱཱན། བོད་སྐད་དུ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་བཤད་པ། བཅོམ་ལྡན་འདས་གསུང་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

འོད་དཔག་མེད་པ་རིན་ཆེན་གྱིས།[2] །
འོད་ཀྱིས་སྤྱི་གཙུག་མཛེས་པ་ཡི།[3] །

---

1. གསེར། འགྱུར་མིན། མི་འདུག
2. གསེར། གྱི།
3. གསེར། ཡིས།

འཇིག་རྟེན་དབང་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །
བཞི་པའི་སྣང་བར་རབ[1]བཤད་བྱ། །

དཔེ་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་གང་གི་ཕྱག་ན་པདྨ་བསྣམས་པ་དེ་ནི་ཕྱག་ན་པདྨ་སྟེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ཡིན་ལ། དེ་རྒྱལ་བར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བྱ་བར་སྦྱར་རོ། ཁྱད་པར་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་དང་ལྡན་ཞེ་ན། དཔེ་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། དཔེ་མེད་པ་ནི་ཤིན་ཏུ་གྱ་ནོམ་པ་ཉིད་དང་། རྒྱ་ཆེ་བ་ཉིད་དང་། འཁོར་བའི་མཐའི་བར་དུ་གནས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་དང་ལྡན་པ་སྟེ། གཞན་དག་ལ་དེ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གིས་[2] རང་བཞིན་བདེ་བ་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་དཔེ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ།། གཞན་ཡང་ཁྱད་པར་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་དང་ལྡན་ཞེ་ན། དཔལ་དེ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ལ། དེའི་གནས་ནི་གཞིར་གྱུར་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཀུན་དུ་འགྲོ་བ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར། སོ་སོར་ངེས་པའི་གནས་མེད་པས་ན་གནས་མེད་པའོ། །ཡང་ཁྱད་པར་ཅི་འདྲ་ཞེ་ན། དཔེ་མེད་རྣམས་ཏེ། གཟུགས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་བ་དང་། ན་ཚོད་དང་། སྨིག་པ་ལ་སོགས་པའི་ཉམས་དང་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ན་དཔེ་མེད་པ་སྟེ། དཔེ་ལས་འདས་པའི་གཟུགས་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་ནས། སྒྲོལ་མའི་མཐར་ཐུག་པའི་ལྷ་མོ་བཅུའི་ངོ་བོ་རིག་མའི་[3]འཁོར་གྱིས་

1. ཅོ། རིམ།
2. གསེར། གི།
3. གསེར། པའི།

བསྐོར་བ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ནི་རང་གི་འོད་ཀྱིས་རིག་པ་སྟེ། ཤེས་རབ་དང་ལྡན་ཅིག་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རིག་པ་དང་བཅས་པའོ།། སྲིད་པ་གསུམ་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་གནས་པའི་སྐྱེ་བོའོ། །གང་ལ་ཕན་པ་ནི་མ་འོངས་པའི་ཕན་པ་སྟེ། སངས་རྒྱས་ཉིད་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལ་བདེ་བ་ནི་འཕྲུལ་གྱི་ཕན་པ་སྟེ། འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ཉིད་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ཐོབ་པ་ནི་རྙེད་པ་སྟེ་མངོན་དུ་བྱས་པའོ། །དེ་དག་སྒྲུབ་པར་མཛད་པོ[1]གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱིས་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ངོ་བོ་རྙེད་པས་རྣམ་པ་གཞན་དུ་མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་འགྱུར་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ་དེ་ལྟ་བུའི་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱལ་བར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བྱ་བའོ། །དུས་ཇི་སྲིད་དུ་ཞེ་ན། ཇི་སྲིད་རི་བ་སྣང་བར་ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། རི་བའི་ངོ་བོའི་སྒྲས་ནི་ཕྱོགས་བཅུ་ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་པའམ། ཡང་ན་རི་བ་སྟེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྲིད་པའི་ལོངས་སྤྱོད་ལ་སྲིད་པའོ། །རི་བ་དེ་སྣང་བ་ནི[2] གསལ་བ་དང་། རབ་ཏུ་འཇུག་པ་དང་། རབ་ཏུ་སྐྱེ་བའི་བར་དུ་སྟེ། དེ་སྲིད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱལ་བར་གྱུར་[3]པ་ནི་ཁྱབ་འཇུག་དང་། ལྷ་ཆེན་པོ་དང་། ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལ་དཔེ་མེད་བདེ་བའི་ངོ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་རང་གི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་བསྟན་ཏོ། །དཔལ་གྱི་གནས་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་ཐབས་ཡིན་ཏེ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་དག་ནི་དཔལ་གྱི་སྒྲས་

---

1. གཞིར། པ།
2. གཞིར། ནི།
3. ཅོ། འགྱུར།

མངོན་པར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྲིད་པ་གསུམ་ན་ཕན་དང་བདེ་བ་སྟོབ་པར་། མཛད། །ཅེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་བསྟན་ཏོ། །དཔེ་མེད་ལྷ་མོ་བཅུ་ཡི་ངོ་བོ་རིག་དང་རིག་མར་བཅས། །ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་དེའི་ཐབས་ཡིན་ཏེ། ལྷ་མོ་བཅུ་དང་དམ་པའི་སྐུ་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་དང་། དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུའི་རྣམ་པས་སྟོང་ན། གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་མཛད་པའི་མཐུ་མི་མངའ་བའི་ཕྱིར་རོ། [1]།

དཔལ་ལྡན་སྡོར་ཀྱི་གཞུང་ལུར་མཛེས་པའི་དབང་བཞིའི་ངོ་བོ་དག །
རབ་ཏུ་གསལ་བའི་སྐབས་སྟོང་གྱུར་པས་གང་གིས་མི་ཤེས་ཤིང་། །
དུ་མའི་མན་ངག་བདུན་གྱི་དབྱེ་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་ཡོངས་འཕྲུར་པ། །
དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་གསལ་བར་རྟོར་པར་བྱ་ཕྱིར་འབད་པས་བྱ།[3] །

དཔལ་ལྡན་སྡོགས་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ཤེས། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སྡོགས་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ཞེས་བྱ་བའི་སྐབས་ནི། རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་ཀྱིར་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཤུགས་ཀྱིས་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ཡོངས་སུ་གཟུང་བར་བྱ་སྟེ། གཞན་དག་ལ་བཞི་པའི་དོན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ།། དུ་མའི་མན་ངག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདུས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་། དཔྱར་གྱི་སློབ་དཔོན་དུ་མའི་མན་ངག་གི་ཚོགས་ཡང་དག་པར་བསྡུས་པའི་བདུན་[2] གྱི་དབྱེ་བས་ཡོངས་སུ་དཀྲུགས་པ་ནི། རྣམ་པར་དཀྲུགས་པས་རྣམ་པ་ཐམས་

1. གསེར། པར་མི་སྣང་།
2. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་མདུན་ཞེས་གསལ་ནའང་འདིར་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

བསྐོར་བ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །དེ་ཉིད་ནི་རང་གི་འོད་ཀྱིས་རིག་པ་སྟེ། ཤེས་རབ་དང་ལྡན་ཅིག་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རིག་པ་དང་བཅས་པའོ།། སྲིད་པ་གསུམ་ནི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་གནས་པའི་སྐྱེ་བོའོ། །གང་ལ་ཕན་པ་ནི་མ་འོངས་པའི་ཕན་པ་སྟེ། སངས་རྒྱས་ཉིད་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལ་བདེ་བ་ནི་འཕྲལ་གྱི་ཕན་པ་སྟེ། འཁོར་ལོས་སྒྱུར་བ་ཉིད་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ཐོབ་པ་ནི་རྙེད་པ་སྟེ་མངོན་དུ་བྱས་པའོ། །དེ་དག་སྒྲུབ་པར་མཛད་པོ[1]གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་མི་འདའ་བའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱིས་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ངོ་བོ་རྙེད་པས་རྣམ་པ་གཞན་དུ་མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་འགྱུར་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ་དེ་ལྟ་བུའི་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱལ་བར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བྱ་བའོ། །དུས་ཇི་སྲིད་དུ་ཞེ་ན། ཇི་སྲིད་རི་བ་སྣང་བར་ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། རི་བའི་ངོ་བོའི་སྒྲས་ནི་ཕྱོགས་བཅུ་ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་པའམ། ཡང་ན་རི་བ་སྟེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྲིད་པའི་ལོངས་སྤྱོད་ལ་སྲིད་པའོ། །རི་བ་དེ་སྣང་བ་ནི[2] གསལ་བ་དང་། རབ་ཏུ་འཇུག་པ་དང་། རབ་ཏུ་སྐྱེ་བའི་བར་དུ་སྟེ། དེ་སྲིད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྒྱལ་བར་གྱུར་[3]པ་ནི་ཁྱབ་འཇུག་དང་། ལྷ་ཆེན་པོ་དང་། ཚངས་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པར་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ཏོ། །དེ་ལ་དཔེ་མེད་བདེ་བའི་ངོ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་རང་གི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་བསྟན་ཏོ། །དཔལ་གྱི་གནས་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་ཐབས་ཡིན་ཏེ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་དག་ནི་དཔལ་གྱི་སྒྲས་

---

1. གསེར། པ།
2. གསེར། ན།
3. ཅོ། འགྱུར།

མངོན་པར་བརྗོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྲིད་པ་གསུམ་ན་ཕན་དང་བདེ་བ་ཐོབ་པར་། མཛད། །ཅེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་བསྟན་ཏོ། །དཔེ་མེད་ལྷ་མོ་བཅུ་ཡི་ངོ་བོ་རིག་དང་་རིག་མར་བཅས། །ཞེས་བྱ་བ་འདིས་ནི་དེའི་ཐབས་ཡིན་ཏེ། ལྷ་མོ་བཅུ་དང་དམ་པའི་སྐུ་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་དང་། དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུའི་རྣམ་པས་སྟོང་ན། གཞན་གྱི་དོན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་མཛད་པའི་མཐུ་མི་མངའ་བའི་ཕྱིར་རོ། ༡ །

དཔལ་ལྡན་སྦྱོར་གྱི་གཞུང་ལུགས་མཛེས་པའི་དབང་བཞིའི་ངོ་བོ་དག །
རབ་ཏུ་གསལ་བའི་སྐབས་སྟོང་གྱུར་པས་གང་གིས་མི་ཤེས་ཤིང་། །
དུ་མའི་མན་ངག་བདུན་གྱི་དབྱེ་བའི་ཚོགས་ཀྱིས་ཡོངས་འཁྱུད་པ། །
དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་གསལ་བར་རྟོགས་པར་བྱ་ཕྱིར་འབད་པས་བྱ།༢ །

དཔལ་ལྡན་སྦྱོགས་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ཤེས། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སྦྱོགས་ཀྱི་གཞུང་ལུགས་ཞེས་བྱ་བའི་སྐབས་ནི། རྣལ་འབྱོར་གྱི་རྒྱུད་སྤྱིར་རྗོད་པར་བྱེད་པ་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཤུགས་ཀྱིས་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ཡོངས་སུ་གཟུང་བར་བྱ་སྟེ། གཞན་དག་ལ་བཞི་པའི་དོན་མི་སྲིད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ།། དུ་མའི་མན་ངག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདུས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་གྱི་སློབ་དཔོན་དུ་མའི་མན་ངག་གི་ཚོགས་ཡང་དག་པར་བསྡུས་པའི་བདུན[2] གྱི་དབྱེ་བས་ཡོངས་སུ་དཀྲུགས་པ་ནི། རྣམ་པར་དཀྲུགས་པས་རྣམ་པ་ཐམས་

1. གསེར། པར་མི་སྣང་།
2. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་མདུན་ཞེས་གསལ་ནའང་འདིར་རྩ་བ་དང་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བཞག་པ་ཡིན།

ཅན་ལ་རྣམ་པར་ཁྲབ་པ་སྟེ། དེས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དཀྲུགས་པའོ། །གསལ་བར་རྟོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདེ་བར་གནས་[1]པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ ३ །

དེ་ཉིད་བསྒྲུབ་བྱའི་ངོ་བོར་རིག་པ་ལ། །
མུ་སྟེགས་མ་ལུས་བློ་རྣམས་རྣམ་པར་འཁྲུལ། །
དེ་ལས་རིག་བྱེད་མཐར་ནི་སླ་བ་ཡི། །
སྐྱེ་བོ་རྣམས་ནི་དེ་ཉིད་མཆོག་ཅེས་སྨྲ། ३ །

དེ་ཉིད་བསྒྲུབ་བྱའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། མུ་སྟེགས་ཅན་གང་ལ་ཀུན་ནས་འཁྲུལ་པ་སྟེ། རྣམ་པར་འཁྲུལ་པའི་བློ་ཤེས་རབ་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །མུ་སྟེགས་ཅན་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བདག་དང་བདག་གིར་འཛིན་པའི་ལིང་ཏོག་གིས་བློའི་མིག་ཁེབས་པར་གྱུར་པས། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་འདི་ཞེས་སམ།[2] བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ནི་འདི[3]ཞེས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དེའི་རང་གི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་རིག་ཅིང་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བ་དེ་དག་ལ་འཁྲུལ་པའོ། །ལྐུག་མ་ནི་གོ་སླའོ། །དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དག་ནི་སྣང་བར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་ངོ་བོ་གཅིག་པ་མ་ཡིན་ནམ། ཅིའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དང་། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཞེས་དབྱེ་བ་བསྟན་ཞེ་ན། དེ་ནི་བདེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ནི་སྣང་བར་བྱ་བ་

1. གཞིར། གསལ།
2. གཞིར། བསམ།
3. གཞིར། འདིའི།

ཉིད་ཡིན་ཡང་བདེ་བ་དང་སྡུག་བསྔལ་དང་། བཏང་སྙོམས་ལ་སོགས་པ་སོ་སོར་སྣང་བའི་ཚོགས་[1]མ་ལུས་པ་ལ་ཞེས་བྱ་ཙམ་དུ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ལ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡང་མངོན་པར་འདོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ལས་བཟློག་པར་འདོད་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྣང་བར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་ཀྱང་།[2] སྔོག་ཆགས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་གདོན་མི་ཟ་བར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པ་ལས་བཟློག་པ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་འབྲས་བུ་ཉིད་དུ་མངོན་པར་འདོད་པའི་ཕྱིར་ཉེས་པ་མེད་དོ། ༣ །

དགའ་བའི་ངོ་བོ་རང་རིག་མི་གཡོ་ཞིང་། །
བསྒྲུབ་བྱར་འདོད་པ་རིག་བྱེད་མཐའ་ཅན་པའོ། །
ཉན་ཐོས་རང་རྒྱལ་བཅས་པ་གཟུགས་ལ་སོགས། །
ཕུང་པོ་དག་དང་བྲལ་བ་བསྒྲུབ་བྱར་འདོད། ༨ །

དེ་ལ་རེ་ཞིག་རིག་བྱེད་ཀྱི་མཐར་སྨྲ་བའི་མངོན་པར་འདོད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ནི་དགའ་བའི་ངོ་བོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ་དགའ་བའི་ངོ་བོ་ནི་རྟག་ཏུ་བདེ་བའི་རང་བཞིན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་རིག་པ་ནི་གསལ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་གྱིས་བདག་ཉིད་རབ་ཏུ་སྣང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །མི་གཡོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་རྟག་པ་ཉིད་ཀྱིས་བསྐྱོད་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཞི་བ་ནི་ཉོན་མོངས་པ་དང་། ཉེ་བའི་ཉོན་མོངས་པས[3]སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྣམ་པ་དེ་

1. གསེར། ཚིགས།
2. གསེར། ཡང་།
3. གསེར། པས་དང་།

ལྷ་བུ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལ་འདུན་[1]པ་ལ་[2]ནི་འདོད་པར་གྱུར་པའོ། །གང་ཉན་ཐོས་དང་བཅས་པ་འཇུག་པའི་[3] རང་རྒྱལ་བ་ནི་བསེ་རུ་ལྟ་བུ་སྟེ། གཅིག་པུ་རྒྱུ་བ་དང་། ཚོགས་ཀྱིས་སྤྱོད་པའི་རང་སངས་རྒྱས་དག་བསྒྲུབ་བྱར་འདོད་དོ། །ཅི་འདྲ་བ་ཞིག་ཅེ་ན། གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ཕུང་པོ་དང་བྲལ་བའོ། །གཟུགས་དང་། ཚོར་བ་དང་། འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་མཚན་ཉིད་དག་གི་ཕུང་པོ་རྣམས་ནི་སྦྱངས་པ་སྟེ[4]བྲལ་པ་དང་རྣམ་པར་ཆད་པ་དང་འགག་པར་གྱུར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །འདི་སྐད་བསྟན་པར་འགྱུར་ཏེ། ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ནི་ཕུང་པོ་ལྷག་མ་དང་བཅས་པ་དང་།ཕུང་པོ་ལྷག་མ་མེད་པའི་དབྱེ་བས་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཐ་དད་ཀྱང་ཕུང་པོ་ལྷག་མ་མེད་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་པར་བྱ་ བར་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། ༨ །

རྣམ་པས་སྟོང་པ་ནམ་མཁའ་ལྟ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད། །
སོ་སོར་རང་རིག་སྙིང་རྗེའི་རང་བཞིན་ཅན། །
མཛེས་པའི་མཚན་རྣམས་ཀྱིས་བརྒྱན་དོན་མཛད་པ། །
སྤྲིན་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུ་མཐུན་བདེ་བྲལ་བ། ༥ །

1. བོད་འགྱུར་པར་མར་བདུན་ཞེས་པ་འདི་གསལ།
2. གསེར། ལ་མི་གསལ།
3. གསེར། པའི་མི་གསལ།
4. གསེར། སྦྱངས་ཏེ།

ད་ནི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་དུ་སླ་བ་དག་ལ་མངོན་པར་འདོད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་རྣམ་པ་བཞི་བསྟན་པའི་ཕྱིར། རྣམ་པ་སྟོང་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། རྣམ་པ་ནི་སྔོན་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། བདེ་བ་དང་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པ་སྣ་ཚོགས་པའི་རྣམ་པའོ། །དེས་སྟོང་པ་སྟེ་རྣམ་པ་མེད་པའོ།། རྣམ་པ་མེད་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུའོ། །གང་གི་རང་བཞིན་ཀླ་བ་དང་འདྲ་བར་འོད་གསལ་བའི་ངོ་བོ་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །སོ་སོར་རང་རིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི[1]རང་རིག་པ་གཅིག་པུའི་ངོ་བོ་རིག་པའོ། །འདིར་སྡུག་བསྔལ་དང་སྡུག་བསྔལ་གྱི་རྒྱུ་དག་ལས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ་གདོན་པར་འདོད་པའི་སྙིང་རྗེའི་རང་བཞིན་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །འདི་སྐད་དུ་བཤད་པར་འགྱུར་ཏེ། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཉེ་བར་སྟོན་པའི་སྒྲས་བརྗོད་པར་བྱ།[2] སྔོན་པོ་དང་། སེར་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་པས་སྟོང་ཞིང་སྣང་བ་མེད་ལ། དྲི་མ་མེད་པ་ནམ་མཁའ་ལྟ་བུར་དག་པ་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་བྱེད་པའི་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་སོ་སོར་རང་གིས་རིག་པའི་[3]བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ། ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་གྱིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་པོའོ། །མཛེས་པ་ཡང་དེ་ཉིད་ཡིན་ལ། མཚན་ཡང་དེ་ཉིད་ཡིན་པས་ན་མཛེས་པའི་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེས་བརྒྱན་པའོ། །དོན་ནི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་དགོས་[4]པ་སྟེ། དེ་མཛད་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན་གྱི་རང་བཞིན་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ནི་དོན་མཛད་པའོ། །སྤྲིན་པ་ལ་སོགས་[5]ཕ་རོལ་

1. སྡེ། ཅོ། 'རང་རིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་' མི་གསལ།
2. གསེར། བྱ་བ་དང་།
3. གསེར། རིག་པ་ནི།
4. སྡེ། ཅོ། དགོངས།
5. གསེར། སོགས་པ།

དུ་ཕྱིན་པ་བཅུའི་རྒྱུ་མཐུན་པ་དེ་ནི། རང་གི་མཐའི་སྟོབས་ཀྱིས་འདྲ་བའི་འབྲས་བུའོ། །སྡུག་བསྔལ་ སྤང་སྤངས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།[1] །བདེ་བ་ཡང་སྔོན་དུ་བྱས་པའི་གནས་སྐབས་ན་མེད་པའི་ཕྱིར་བདང་སྟོམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་བདེ་བ་ཉིད་མེད་པ་ནི་བདེ་བྲལ་བའོ། །འདི་སྐད་དུ་བསྟན་པར་འགྱུར་དེ། མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་འཛིན་ཅིང་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུས་རྣམ་པར་སྤྲས་པའི་སྐུས། འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་མཛད་པ། སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཕ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་གོམས་པར་མཛད་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་བདག་ཉིད་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་བདེ་བ་དང་། སྡུག་བསྔལ་སྤངས་པའི་བདང་སྟོམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་གཉིས་པ་ཡིན་ནོ། ༥ །

སྦྱིན་སོགས་ཕ་རོལ་ཕྱིན་དྲུག་རྒྱལ་གནས་པ། །
དགའ་[2]བཅས་སྐུ་ནི་མཛེས་པའི་མཚན་གྱིས་བརྒྱན། །
ས་བཅུར་བཞུགས་པས་ཡང་དག་ལོངས་སྤྱོད་པ། །
འགྲོ་དོན་མཛད་པ་བསྒྲུབ་བྱར་རབ་ཏུ་སྨྲ། ༦ །

དགའ་བཅས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དགའ་བ་དང་ལྡན་ཅིག་འཇུག་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་དགའ་བ་དང་བཅས་པ་ཡིན་ལ། མཛེས་པའི་མཚན་[3]རྣམས་ཀྱིས་བརྒྱན་པའི་སྐུ་ཡང་ཡིན་པས་སོ། །ཡང་དག་ལོངས་སྤྱོད་པ་ནི། ཆོས་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་པར་གྱུར་པའོ། །སུ་ཞིག་གིས་ཤེ་ན། ས་བཅུའི་

1. གསེར། ཕྱིར་དང་།
2. སྡེ། དགའ།
3. གསེར། མཚན་ཉིད།

དབང་ཕྱུག་རྣམས་ཀྱིས་ཏེ། ས་ལྷག་མ་རྣམས་ན་གནས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར། ས་བཅུ་བརྙེས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དང་འཇམ་དཔལ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལོངས་སྤྱོད་པར་བྱ་བ་མ་[1]ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །ལྷག་མ་ནི་གོ་སླའོ། །འདི་སྐད་དུ་[2]བཤད་པར་འགྱུར་ཏེ། གནས་བཙང་མའི་སྟེང་ན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཕོ་བྲང་སྟུག་པོ་བཀོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ན་ཇི་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་དགའ་བའི་ངོ་བོ་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུའི་བདག་ཉིད་ཅན། སྤྲུལ་པའི་སྐུའི་སྒོ་ནས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་ཡང་དག་པར་སྒྲུབ་པར་མཛད་པ་ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་། ས་དགུའི་དབང་ཕྱུག་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་མི་མཐོང་བའི་སྐུ་ཅན། ས་བཅུའི་དབང་ཕྱུག་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཁོ་ནས་ཆོས་གསན་པའི་སྒོ་ནས་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱད[3]པར་བྱ་བ་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་ནས་བཞུགས་ཏེ། དེ་ལྟ་བུའི་[4]བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་གསུམ་པ་ཡིན་ནོ། ༦ །

སྤྲིན་སོགས་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་ཡོངས་རྫོགས་པ། །
རྫོགས་སངས་མཛད་པ་མ་ལུས་མཛད་ནས་ནི། །
གང་ཞིག་ཡང་དག་མཐའ་ནི་མངོན་མཛད་པ། །
འགོག་པའི་ངོ་བོ་བསྒྲུབ་བྱ་ཡང་དག་ཡོད། ༧ །

---

1. གསེར། མ་ མི་གསལ།
2. གསེར། ཅེས།
3. ཅོ། སྤྱོད།
4. གསེར། ལྷ་བུ་ནི།

སྦྱིན་སོགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡོན་ཏན་འདུ་བྱེད་གོམས་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར། སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཉིད་ཡོན་ཏན་ཡིན་ལ་དེ་དག་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པ་སྟེ།ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱས་ནས་གང་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་ངེས་པར་མཛད་པར་བྱ་བ་མ་ལུས་པ་དེ་ཡང་མཛད་ནས། ཡང་དག་པའི་མཐའ་སྟེ་གང་སེམས་དང་སེམས་ལས་བྱུང་བ་འགོག་པའི་བདག་ཉིད་སྟོང་པའི་མཚན་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་མཛད་པའོ། །དེ་ཡང་བསྒྲུབ་བྱར་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་ཚུལ་ལ་གནས་པ་དག་དེ་སྐད་སྨྲ་བ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་བཞི་པ་ཡིན་ནོ། ༧ ।

ཉིད་མཚུངས་ལྷ་མོས་འཁྲུད་ཅིང་འགྲོ་བ་ཡི། ।
དོན་མཛད་བདེ་སྡུག་ཉིད་བྲལ་ངོ་བོ་ཉིད། ।
སྐུ་ནི་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུས་བརྒྱན། ।
རྟོག་པ་དང་བྲལ་བསྒྲུབ་བྱར་རབ་ཏུ་འཆད། ༨ ।

ད་ནི་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཤད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་རྣམ་པ་བདུན་བསྟན་པའི་ཕྱིར། ཉིད་མཚུངས་ལྷ་མོས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། ཉིད་དང་མཚུངས་པའི་ལྷ་མོས་འཁྲུད་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན་གྱི་རང་བཞིན་གང་ལ་མངའ་བ་དེ་ནི། ཉིད་མཚུངས་ལྷ་མོས་འཁྲུད་པ་ཅན་ནོ། །རྟོག་པ་དང་བྲལ་བ་ནི་རྟོག་པ་མེད་ཅིང་སྤངས་པ་སྟེ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །གཞན་ནི་གོ་སླའོ།། འདིའི་དོན་དི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཡང་དག་པར་འཁྲུད་པ་སྟེ། ཉིད་དང་མཚུངས་པའི་ལྷ་མོས་འཁྲུད་པ་ཅན། འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་མཛད་པའི་སྐུ་མཚན་སུམ་ཅུ་ཙ་

གཉིས་ལ་སོགས་པས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་བདང་སྟོམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་དུ་བཞུགས་པ་མངོན་དུ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དང་པོའོ། ༧།

དང་པོ་ཉིད་ནས་ལྷ་ཡི་རྣམ་པ་དག །
ཁྲིད་པར་གྱིས་སྟོང་བདེ་བ་ཡང་དག་བསྒོམ། །
གསལ་འགྱུར་བདེ་ཆེན་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་པ། །
ཡིད་བཞིན་ནོར་བུར་གྲགས་པ་ཁ་ཅིག་སྨྲ། ༨ །

དང་པོ་ཉིད་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ལྷའི་རྣམ་པའི་ཁྲིད་པར་དེ། བདག་ཉིད་ཀྱིས་འདོད་པའི་ལྷའི་རྣམ་པས་སྟོང་པ་དང་། རྣམ་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །དང་པོ་ཉིད་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཐོག་མ་ཉིད་ནས་བཤད་མ་ཐག་པའི་ལྷའི་[1]རྣམ་པ་ཉིད་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པར་བདེ་བ་ཡང་དག་པར་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་རྣམ་པར་བསྒོམས་པས་མངོན་སུམ་དུ་བྱ་བ་གསལ་བ་མ་ཡིན་པ་གསལ་བར་བྱས་པར་གྱུར་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ཡང་འགྲོ་དོན་མཛད་པ་ནི་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་དང་མཚུངས་པའི་ཚུལ་དུའོ། །འདི་སྐད་བཤད་པར་འགྱུར་ཏེ། བཤད་མ་ཐག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཐུགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་དང་ལྷའི་རྣམ་པ་ཉིད་སྤངས་ཏེ། བདེ་བ་འབའ་ཞིག་ཙམ་བསྒོམས་པས་གསལ་བར་བྱས་[2]ལ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ། ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་བཞིན་དུ་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་མཛད་པ་སྒྲུ་མ་ལྟ་བུའི་འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་པར་བཞུགས་པ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་གཉིས་པའོ། ༨།

1. གསེར། ལྷའི། མི་གསལ།
2. གསེར། བྱས་པ།

རང་བདག་བདེ་བའི་ངོ་བོ་མངོན་བྱས་ནས། །
ཕྱིས་བཏང་བདེ་བ་ཙམ་ཞིག་འབྲས་འགྱུར་བའོ། །
དག་པ་མངོན་སུམ་བྱེད་པར་ནུས་མེད་ནས། །
དེ་ཕྱིར་བདག་པོའི་རྣམ་པ་བསྒོམ་པ་ཡིན། ༡༠ །

རང་བདག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་པ་ལ་རང་གི་བདག་པོ་ནི་རང་གི་འདོད་པའི་ལྷ་ཉིད་དོ། །བདེ་བའི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་བདེ་བ་གཅིག་པུའི་རང་བཞིན་ནོ།། མངོན་བྱས་པ་ནི་ཀུན་ནས་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་པ་ཡིན་នོ། །ཕྱིས་ལྷའི་རྣམ་པ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཏང་ནས་སྒྲུབ་པའི་འབྲས་བུ་བདེ་བ་ཙམ་ལ་གནས་པར་གྱུར་པའོ།། གལ་ཏེ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་ལྷའི་རྣམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཏང་བར་བྱ་བ་ཡིན་པ་དེ་ལྟ་ན་ནི། དང་པོ་ཉིད་ཅིའི་ཕྱིར་རྣམ་པར་སྒོམ་པར་བྱེད་དེ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་གཉིས་པ་བཞིན་དུ་བདེ་བ་ཙམ་ཉིད་ཅི་སྟེ་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནམ་ངལ་བ་དོན་མེད་པས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེ་ན། དག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། དག་པ་འབའ་ཞིག་ལྷའི་རྣམ་པ་དང་། རྣམ་པར་བྲལ་བའི་བདེ་བ་ཙམ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དུ[1] བྱེད་མི་ནུས་ཏེ། རྣམ་པ་དང་བྲལ་བའི་བདེ་བ་འབའ་ཞིག་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱུ་དེའི་ཕྱིར་རང་གི་[2]བདག་པོའི་རྣམ་པ་སྒོམ་པར་བྱེད་པ་སྟེ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་གསུམ་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ལྷ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་པ་དང་ལྡན་པའི་བདེ་བ་ཁོ་ན་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་ལྷའི་རྣམ་པ་ཉིད་བཏང་སྟེ། བདེ་བ་ཙམ་ཁོ་ན་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡོན་ཏན་དུ་འཆད་དོ།༡༠།

1. གསེར། བྱས་ནས་ལྷའི་ཞེས་པའི་ཚིག་ལྷག་གསལ།
2. གསེར། རང་གི་ཞེས་པ་མི་གསལ།

སྐུ་ནི་ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་ཡན་ལག་མཚན་གྱིས་བརྒྱན། །
དཔེ་མེད་བདེ་བས་གང་བ་ཉིད་དང་མཚུངས་པར་འདུས་པ་དང་། །
ཐུབ་པའི་དབང་པོ་འཕྲོ་བས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དོན་མཛད་པ། །
ཚད་པས་སྟོང་པ་བསྒྲུབ་བྱ་ཉིད་དུ་གཞན་དག་རབ་ཏུ་སྨྲ། ༡༡ །

སྐུ་ནི་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་གང་གི་སྐུ་ནམ་མཁའ་དང་མཚུངས་པའི་སྒྱུ་མ་དང་འདྲ་བར་དཔྱད་མི་བཟོད་པའོ། །གང་གིས་ཡན་ལག་མཚན་གྱིས[1]སྟེ། མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་དང་། དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུས་སྤྲས་པར་གྱུར་པའོ།། དཔེ་མེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གྱ་ནོམ་པ་ཉིད་དང་། རྒྱ་ཆེ་བ་ཉིད་དང་། བར་མེད་པ་ཉིད་དང་། འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་པར་རབ་ཏུ་འཇུག་པ་ཉིད་དང་ཟག་པ་མེད་པ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དཔེ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དཔེ་ལས་འདས་པའི་བདེ་བས་གང་བ་ནི། བ་སྒྱུའི་རྩེ་མོའི་མཐར་ཐུག་པར་གྱུར་པའོ།[2] །ཉིད་དང་མཚུངས་པ་ཡང་དེ་ལྟ་[3]བུར་གྱུར་པས་འདུས་པ་སྟེ། ཀུན་ནས་འབྱུང་པར་གྱུར་པའོ། །ཐུབ་པའི་དབང་པོའི་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འཕྲོ་བར་གྱུར་པ་དེ་ཡང་དེ་ལྟ་བུ་ཁོ་ནས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་པའོ། །ཚད་པས་ཞེས་བྱ་བ་ནི། འགོག་པ་[4]སྟོང་པ་སྟེ་སྤངས་པའོ། །འདི་སྐད་བཤད་པར་འགྱུར་ཏེ། ནམ་མཁའ་དང་། སྒྱུ་མ་དང་། མིག་འཕྲུལ་དང་། སྨིག་རྒྱུ་དང་། དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་དང་། ཆུ་ཟླ་དང་།

1. གསེར། གྱི།
2. སྡེ། པའི།
3. གསེར། ལྟར།
4. གསེར། འགོག་པས།

གཟུགས་བརྙན་དང་། རྨི་ལམ་དང་འདྲ་བས་གཅིག་དང་། དུ་མ་དང་། དངོས་པོ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པ་དང་། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་ལ། ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་དངོས་པོ་མ་ལུས་པའི་རང་བཞིན་སྣང་བ་མེད་པས།[1] དྲི་མ་མེད་པ་དཔེ་ཐམས་ཅད་ལས་ཤིན་ཏུ་འདས་པ། མཆོག་ཏུ་ཕྲ་ཞིང་ཤིན་ཏུ་ཟབ་པ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་ཆོས་ཀྱི་སྐུའི་རང་བཞིན་ཡིན་པ་དང་། སྐུ་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་ཀྱིས་བརྒྱན་ཅིང་།[2] དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་བརྒྱད་ཅུས་རྣམ་པར་སྤྲས་པ། ཤིན་ཏུ་སྙིག་ཅིང་ན་ཆོད་ལ་སོགས་པ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་དང་། ཉིད་དང་མཚུངས་པའི་ལྷ་མོས་སྐུ་ལ་འཁྱུད་ཅིང་། གཟུགས་རྡོ་རྗེ་ལ་སོགས་པ་ནས། སྤྲུལ་མའི་མཐར་ཐུག་པའི་ལྷ་མོའི་ཚོགས་ཀྱིས་མཚན་མ་མེད་པའི་དགའ་བའི་རང་གི་ངོ་བོའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་དཔག་ཏུ་མེད་པས་མཆོག་ཏུ་དགའ་བ་ལ་ཉེ་བར་ལོངས་སྤྱོད་པའི་སྒོ་ནས། གཟུགས་བརྙན་དང་འདྲ་བས་ཡང་དག་པར་ལོངས་སྤྱོད་པ་ནི་སྙིང་རྗེའི་རང་བཞིན་རྒྱ་ཆེ་བ་ཉིད་ཀྱིས་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུའི་[3]ངོ་བོ་ཉིད་དང་། གདུལ་བྱའི་སྐྱེ་བོ་མོས་པ་སྣ་ཚོགས་པ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ། རྫུ་འཕྲུལ་དང་ཆོ་འཕྲུལ་རྣམ་པ་དུ་མའི་སྒོ་ནས་རིགས་ཀྱི་ནང་དུ་ཆུད་པའི་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ལ་སོགས་པའི་སྤྲུལ་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་སྤྲོ་བ་དང་། བསྒྱུ་བ་མཛད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི་སྤྲུལ་པའི་སྐུའི་མཚན་ཉིད་དང་། སྟོང་པ་ཉིད་དང་། སྙིང་རྗེ་ཐ་མི་དད་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་དྲི་མ་མེད་པ་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་ཡང་དག་པར་འབྱུང་བའི་བདེ་བ

1. གསེར། མེད་པ།
2. སྡེ། ཅོ། ཞིང་།
3. གསེར། སྐུའི་ མི་འདུག

དམ་པས་གང་བ། འཁོར་བ་ཇི་སྲིད་པར་བཞུགས་པའི་ཆོས་ཅན་མི་གནས་པའི་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ངོ་བོ་མར་མེ་ལྟར་གསལ་མ་བསྒྲིབ་པའི་རྩེ་མོ་བཞིན་དུ་དྲི་མ་མེད་པའི་རྒྱུན་གྱི་རྟག་པ་ཉིད་ཀྱིས་འགོག་པས་སྟོང་པ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་བཞི་པའོ། ༧༧ །

རང་བདག་བདེ་བའི་ངོ་བོ་མངོན་བྱས་ནས། །
བདང་སྟོམས་ངོ་བོ་ཡེ་ཤེས་ཙམ་འབྲས་བུ། །
འཁོར་བ་སྲིད་ཞུགས་སེམས་ཅན་དོན་མཛད་པ། །
ཡིད་བཞིན་ནོར་གྲགས་གཅིག་ཏུ་ཞི་གྱུར་པའོ།༧༣ །

རང་བདག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་རང་གི་བདག་པོ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་ཕྱིས་བདང་སྙེ། བདང་སྟོམས་ཀྱི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཙམ་ཞིག་བསྒྲུབ་བྱར་འགྱུར་རོ། །གཞན་ནི་རྟོགས་པར་སླའོ། །འདི་སྐད་བཤད་པར་འགྱུར་ཏེ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོའི་ངོ་བོ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས། ཕྱིས་དེ་བཀག་ཅིང་བདང་སྟོམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཙམ་དུ་གྱུར་པ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལྔ་པའོ། ༧༣ །

དཀྱིལ་འཁོར་བདེ་གང་མངོན་སུམ་བྱས་ནས་ནི། །
ཕྱིས་ནི་དེ་རང་འདོད་པས་ངེས་ལྡོག་པ། །
སེམས་ཅན་དོན་ཡང་ཡོད་དེ་འདིར་མེད་མིན། །
གང་ཕྱིར་ངེས་པར་ལྡོག་ལས་རབ་ཏུ་བྱུང་། ༧༣ །

དཀྱིལ་འཁོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དཀྱིལ་འཁོར་བདེ་བའི་རང་བཞིན་ཅན་མངོན་དུ་བྱས་ནས། དེའི་རང་གི་འདོད་པ་ངེས་པར་ལྡོག་པ་ནི་འགོག

པའོ། །གལ་ཏེ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་། ཕྱིས་རང་གི་འདོད་པས་འགོག་པར་བྱ་བ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཚེ་ཡུན་རིང་པོར་གོམས་པར་བྱས་པའི་སྙིང་རྗེ་མེད་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནམ། དེ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་དོགས་པ་ལ། སེམས་ཅན་དོན་ཡང་ཡོད་དེ་འདིར་མེད་[1]མིན།། ཞེས་བྱ་བ་སྨོས་ཏེ། ཕྱོགས་འདི་ལ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་པ་མེད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། གང་གི་ཕྱིར་འགོག་པའི་འཁོར་ལོ་ལས་སྙིང་རྗེའི་རང་བཞིན་ཅན་[2]གྱི་དོན་རབ་ཏུ་འབྱུང་བ་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ནི་འདི་སྐད་དུ་བསྟན་ཏེ། བདེ་བས་ཡང་དག་པར་གང་བའི་འཁོར་ལོ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས[3]ནས། དུས་ཇི་སྲིད་དུ་འདོད་པར་རྣམ་པར་གནས་པ་སྟེ། ཕྱིས་དེ་རྣམས་ཐམས་ཅད་དུ་མར་མི་བཞིན་དུ་འགོག་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་གང་གི་ཚེ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མངོན་པར་འདོད་པར་གྱུར་ན། དེའི་འགགས་པ་ཉིད་ལས་འཁོར་ལོའི་ཁྱད་པར་འབྱུང་ཞིང་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་དོ། །འཁོར་ལོའི་ཁྱད་པར་འབྱུང་བ་ཡང་རིང་དུ་འགགས་པའི་འཁོར་ལོའི་[4]གོ་ན་ལས་སྐལ་[5]པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་གདུལ་བྱ་རྣམས་ཀྱིས་མངོན་པར་འདོད་པ་ཉིད་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་དྲུག་པའོ། ༡༣ །

དེ་རྣམས་ལས་འདོད་ངོ་བོ་གསལ་བྱས་ལ། །
ཕྱིར་ནི་འགོག་པས་འབྲས་བུ་ཁ་ཅིག་སླ། །

1. གསེར། མེད་པ།
2. གསེར། སེམས་ཅན།
3. གསེར། འཁོར་ལོ་མཛད།
4. གསེར། ལོ།
5. གསེར། བསྐལ།

གང་ཕྱིར་འགོག་པའི་ངོ་བོ་ཐ་དད་མིན། །
དེ་ཕྱིར་ཐ་དད་ཕྱོགས་ཀྱིའམ་ཐ་དད་མེད། ༡༨ །

དེ་རྣམས་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་པ་ཡིན་[1]ཏེ། ཕྱོགས་དྲུག་པོ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ནས་འབྲས་བུ་བསྒྲུབ་བྱ་གང་ཁོ་ན་མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ཉིད་[2]མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ཤིང་དེའི་འོག་ཏུ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་མར་མེ[3] བཞིན་དུ་འགོག་པ་དུས་གཞན་ན་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ལ་སོགས་པས་སྟོང་པ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་པ་ཡིན་ནོ། །ཕྱོགས་དྲུག་གི་དབྱེ་བས་འགོག་པ་ཡང་དྲུག་ཁོ་ནར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནམ། འགོག་པ་དེ་ཇི་ལྟར་ན་གཅིག་ཁོ་ནར་འགྱུར་ཞེས་དོགས་པ་ལ། གང་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་སྨོས་ཏེ། ཐ་མི་དད་པའི་ངོ་བོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་བྱ་སྟེ། ཕྱོགས་དྲུག་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དབྱེ་བས་ཀྱང་འགོག་པ་རྣམས་ལ་ཐ་དད་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། འགོག་པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གཅིག་ཅིང་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་ནི་འདི་ཡིན་ཏེ། ཕྱོགས་གཞན་ཞིག་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས། དེའི་འོག་ཏུ་དེའི་རྒྱུད་རྒྱུན་ཆད་པའི་ངོ་བོ་འགོག་པ་ནི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་བདུན་པའོ། ༡༨ །

ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཕྱིས་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས། །
རོ་མྱང་དབང་བཞིར་འཆད་པ་དེ་མཆོག་མིན། །

1. གསེར། ཡིན་ཞེས་པ་མི་སྣང་།
2. མངོན་པར་འདོད་པ་དེ་ཉིད། སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་པར་གཉིས་སུ་མི་སྣང་།
3. གསེར། མར་མེའི།

གང་ཕྱིར་བསྒོམ་སོགས་ཀུན་སྐྱོལ་དོན་མེད་པ། །
ཐོབ་འགྱུར་དེ་འབྲས་རབ་ཏུ་མི་རུང་ཕྱིར། ༧༥ །

ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཤེས་རབ་དང་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཏེ། དབང་བསྐུར་བའི་བྱེ་བྲག་གོ །ཕྱིས་ནི་འདས་པའི་[1] འོག་ཏུའོ། །གང་ཞི་ན། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཏེ་བདུད་རྩིའི་ངོ་བོ་ལྷེས་བཀུག་ནས་བླངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་བཞི་པ་སྟེ། དབང་བསྐུར་བཞི་པ་ཡིན་པར་སླ་བ་དེ་ནི་མཆོག་མ་ཡིན་པ་དང་། དམན་པ་དང་། ཤིན་ཏུ་སྨད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་མཆོག་མིན་ཞི་ན། གང་གི་ཕྱིར་སྔགས་དང་ཕྱག་རྒྱ་དང་། ལྷ་[2]ཉིད་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་བསྒོམ་པ་ལ་ཡང་དང་ཡང་དུ་འབད་པ་དང་། གཞན་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས་པའི་སྒྲུབ་པའི་མཚན་ཉིད་དོན་མེད་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །གང་ལས་ཤེ་ན། དེ་འབྲས་ཏེ་བསྒོམས་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་འབྲས་བུ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རོ་མྱང་བའི་དུས་ཉིད་ན་རབ་ཏུ་གྲུབ་པ་ཉིད་དང་། འབྲས་བུ་ཁྱད་པར་ཅན་[3]གཞན་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། ༧༥ །

ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཕྱིར་ནི་དགའ་བའི་རོ། །
མྱོང་ཉིད་དབང་བསྐུར་བཞིར་སླ་དེ་དམན་ཏེ། །

---

1. གསེར། གྱི།
2. གསེར། ལྷའི།
3. གསེར། ཅན། མི་སྣང་།

གང་ཕྱིར་བསྒོམ་སོགས་ཀུན་ལ་རབ་ཏུ་སྟོལ། |
སངས་རྒྱས་ཀྱིས་གསུངས་འབྲས་མེད་རབ་ཐལ་འགྱུར།།༧༨།

ཤེས་རབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ལ་[1]དུས་ཕྱིས་ཇི་ལྟ་བ་[2]བཞིན་དུ་རྟེན་པའི་དགའ་བ་སྟེ། བུད་མེད་གང་ཡིན་པ་དེ་དང་། རིག་[3]པའི་སྒོ་ནས་རོ་མྱང་བའི་དབང་བསྐུར་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་དམན་པའོ།། ལྷག་མའི་དོན་ནི་རྟོགས་པར་ཟད་དོ། །དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་བཞི་པ་ཡང་། །ཞེས་བྱ་བ་བཤད་པར་བྱ་བ་ལ་བཞི་པ་ནི་གསུམ་པ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ལས་ལྡོས་ནས་བཞི་པ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་དེ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་དེ་མཚོན་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཡང་གི་སྒྲས་ནི་དེ་ལས་ཁྱད་པར་དུ་གྱུར་པ་ཡིན་ལ། ཁྱད་པར་ཡང་ཟག་པ་མེད་པ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་ཉིད་དང་། བར་ཆད་མེད་པ་ཉིད་དང་། རྒྱུན་མི་འཆད་པར་སྐྱེ་བ་ཉིད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དོ།། དེ་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲས་དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་དུ་བསྟན་པ་ཡིན་ལ། དེ་དང་འདྲ་བ་ཉིད་ཀྱང་ཅི་འདྲ་བའི་ཤེས་རབ་དང་ལྡན་པའི་ཚོགས་པ་ལས། ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཅི་འདྲ་བ་སྐྱེ་བ་བཞིན་དུ་ཕྱིས་ཀྱང་དེ་དང་འདྲ་བའི་ཚོགས་པ་ལས་ཀྱང་དེ་དང་འདྲ་བ་བསྐྱེད་ཀྱི་གཞན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་སྟེ། དེ་བཞིན་གྱི་སྒྲའི་དོན་ཡིན་ནོ། །འདིར་ཡང་མཚོན་པར་བྱ་བའི་དོན་མཚོན་པར་བྱེད་པའི་དངོས་པོ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ། འདིར་གོ་བར་བྱེད་པས་ན། མཚོན་བྱེད་དེ་ཉམས་

1. གསེར། ལས།
2. གསེར། ལྟར།
3. སྡེ། རིག

སུ་སྨྲོང་བར་གྱུར་པའི་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་སོ། །ཁྱད་པར་མ་གཟུང་བའི་ཁྱད་པར་ཅན་རྟོགས་པར་མི་འགྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རིག[1]པ་འདིས་ཉམས་སུ་མ་མྱོང་ས་བར་མཚོན་བྱེད་ཉིད་དུ་མི་འཐད་དོ། །མཚོན་པར་བྱ་ཞིང་ཤེས་པར་བྱ[2]ལ་གོ་བར་བྱ་ཞིང་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བས་ན་མཚོན་བྱ་སྟེ་མངོན་དུ་གྱུར་པའི་བཞི་པའོ།།

འདིར་འགའ་ཞིག དབང་ནི་རྣམ་པ་གསུམ་དག་ཏུ། །རྒྱུད་འདི་ལས་ནི་རབ་ཏུ་གྲགས། །ཞེས་གསུངས་པས་ན། བཞི་པ་ནི་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་བཞི་པ་ཡང་། །ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་གསུངས་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནམ། ཇི་ལྟར་མེད་ཅེ[3]ན། བདེན་ཏེ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས[4]མན་ངག་བསྲུང་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། སེམས་ཅན་མགོ་སྐོར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གསུམ་པ་ཁོ་ན་ལ་བཞི་པའི་སྒྲར་གསུངས་པ་ཡིན་གྱི། གཞན་དུ་ན་དེ་ལྟར་དེ་བཞིན་གཞི་པ་ཡང་ཞེས་གསུངས་པར་མི་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་ཤིན་ཏུ་འབྲེལ་བ་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། བཞི་པ་ཚད་མས་གྲུབ་པར་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང།[5] བསྟན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །གཞན་དག་སྒྲུབ་པ་ཆེན་པོ་བཞི་པ་སྟེ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བཞི་པ་ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་ཡོད་པ་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་འདིར་རྣམ་པར་འབྲེལ་བའི་ཕྱིར་བཞི་པའི་སྒྲ[6] གསུངས་པ་ཡིན་གྱི། བཞི་པ

1. གསེར། རིགས།
2. གསེར། བྱས།
3. གསེར། ཅེས།
4. གསེར། ཀྱི།
5. སེམས་ཅན་མགོ་སྐོར་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར······དང་། སྣེ་པར་ནང་ཆད་འདུག
6. གསེར། སྒྲས།

ཞེས་བྱ་བའི་དབང་བསྒྱུར་བའི་ཁྱད་པར་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེའི་འདོད་པ་ཉིད་ལྟར་ན་འདི་ལ་མངོན་དུ་བྱ་བ་འབད་པའི་ཕྱིར་དེ་བསྒོམ་པ་དོན་མེད་པའི་ཉེས་པར་འགྱུར་རོ། །འབྲས་བུ་དང་བཅས་པར་ཁས་ལེན་པ་ཡང་བཞི་པ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་མཆོན་པར་བྱེད་པ་ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ནི་ཁོང་དུ་ཆུད་ལ་མཆོན་པར་བྱ་བ་ལ་ཐམས་ཅད་རྫོངས་པར་གྱུར་པས་དེ་རྣམ་པར་དཔྱད་པར་བྱ་སྟེ་མཆོན་པར་བྱ་བ་ཡང་སྲིད་ན་དོན་གྱི་ངོ་བོ་ཞིག་གམ། ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་ན། དེ་ལ་དོན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དོན་ཉིད་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བའི་ཚད་མས་དེ་བསལ་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྨྲ་བ་དང་། དབུ་མ་པའི་འདོད་གཞུང་གཙོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་ན། ཤེས་པ་ཡང་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཞིག་གམ། རྣམ་པ་མེད་པ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་གྲང་། རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ལ་ཡང་ཤེས་པ་གཉིས་མེད་པའི་ངོ་བོའམ། དུ་མའི་ངོ་བོ་ཞིག་ཏུ་འགྱུར་ཞེས་རྣམ་པར་བརྟག་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་རྣམ་པ་མེད་པར་སྨྲ་བ་དག་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ནམ་མཁའི་མེ་ཏོག་དང་འདྲའོ། །ཞེས་སྨྲའོ། མངོན་སུམ་ལ་སྔོན་པོ་དང་། སེར་པོ་དང་། དཀར་པོ་ལ་སོགས་པ་དང་། བུམ་པ་དང་། སྣམ་བུ་དང་། ཤིང་ཏ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོར་རྣམ་པ་རྣམས་སྣང་བ་མ་ཡིན་ནམ། དོན་དེ་དག་ལ་མེད་པའི་ཕྱིར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ན། དེ་ཇི་ལྟར་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་མ་ཡིན་ཞེ་ན། བདེན་ཏེ། རྣམ་པ་རྣམས་སྣང་བ་

1. གསེར། རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ནི། ཚད་པར་སྣང་།

ཉིད་ནི་ཡིན་མོད་ཀྱི་འོན་ཀྱང་བརྟུན[1]པ་ཡིན་ནོ། །བརྟུན་[2]པ་ཉིད་ཀྱང་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བའི་མཚན་ཉིད་[3]ཀྱིས་རབ་ཏུ་གྲུབ་པའོ།[4] །ཚད་མའི་ངོ་བོ་དེ་ཡང་གཞན་དག་ཏུ་བཤད་པ་ཉིད་ཀྱིས་འདིར་མ་སྤྲོས་སོ། །བརྟུན་[5]པ་ཉིད་གྲུབ་པས་ཀྱང་སྒྱུ་མའི་རང་བཞིན་དང་འདྲ་བར་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་རང་བཞིན་རབ་ཏུ་སྟོན་ལ། འཕྲུལ་པ་ལྡོག་[6]པས་ཀྱང་ཤེལ་སྒོང་དག་པ་ལྟ་བུ་རྣམ་པ་མེད་པ་དེ་ཁོ་ན་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་རྣམ་པ་དང་བཅས་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི། ཤེས་པ་གཉིས་མེད་པའི་ངོ་བོའམ། དུ་མའི་ངོ་བོར་ཡོད་དོ་ཞེས་པའི་རྟོག་པ་གཉིས་ཀ་བསལ་བ་ཡིན་ནོ། །རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ཡང་དམིགས་པའི་རིག་བྱུར་གྱུར་པ་རྨི་ལམ་ན་ཡང་མ་དམིགས་པ་མ་ཡིན་ནམ། དེ་ཇི་ལྟར་ན་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པར་ཡོད་པ་ཞེས་བྱ་ཞེ་ན། ཤེས་པ་རྣམས་ནི་བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ཡོངས་སུ་གསལ་བའི་ངོ་བོ་རྣམ་པ་མེད་པར་རིག་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་ཡང་བརྟུན་པར་སྣང་བ་ཡིན་ནོ། །གཞན་དུ་ན་དེ་དག་བདེན་པ་ཉིད་ཡིན་ན་ནི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་བདེན་པར་འགྱུར་ལ། དེ་ལྟ་ན་ཡང་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་དངོས་པོ་བདེན་པར་འགྱུར་རོ། །སྣང་བ་བདེན་པ་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་དེ་བས་ན། དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་གྲོལ་བ་ཉིད་དུ་ཐལ་

1. གསེར། རྟུན།
2. གསེར། རྟུན།
3. གསེར། ཚད་མའི་མཚན་ཉིད།
4. གསེར། གྲུབ་པོ།
5. གསེར། རྟུན།
6. གསེར། ལྡོག

བར་འགྱུར་དེ། ཅུང་ཞིག་ཀྱང་ལོག་པའི་རྣམ་པར་ངོ་བོ་མི་སྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། ། དེ་སྐད་དུ་ཡང་།

ཡང་དག་ཉིད་ལ་ཡང་དག་ལྟ། །ཡང་དག་མཐོང་ན་རྣམ་པར་གྲོལ།། ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར། དེའི་ཕྱིར་མི་འདོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་བརྫུན[1]པ་ཉིད་དུ་བལྟ་བར་བྱའོ། །བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་རྣམ་པ་བདེན་པར་དམིགས་པ་ཡིན་ན་དེ་ཇི་ལྟར་ན་དམིགས་པ་མ་ཡིན་ཞེ་ན། བདེ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པའི་ཤེས[2]པ་ཡང་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་ཁོ་ན་ལ་དམིགས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་དེ། བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་རྣམ་པའི་རང་བཞིན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།། བདེ་བ[3]ལ་སོགས་པའི[4]རྣམ་པས་སྟོང་པའི་རྣམ་པར[5]ཤེས་པ་ནི། སྐྱེ་ལམ་ན་ཡང་རིག་པ་མེད་པ་མ་ཡིན་ནམ། འཁྲུལ་པ་མ་ལུས་པ་དང་བྲལ་བའི་ས་བརྒྱད་པ་ལ་དམིགས་པའི་རིག་བྱར་འགྱུར་རོ། 6 །འདི་ལ་ཡང་མནའ་འདོར་བ་མ་ཡིན་པ་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་བདེན་པ་མ་ཡིན་དེ། བསམ་པ་ཡོངས་སུ་མ་ཤེས་པའི་ཕྱིར་དང་། བདེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཉིད་སྔོན་པོ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་དང་བྲལ་བའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་མེད་པ་ཉིད་དུ་འདོད་པའི་ཕྱིར་དེ། དེ་ཡང་ད་ལྟ་ཉིད་ན། རང་རིག་པའི་ཚད་མས་གྲུབ་པ་

---

1. གསེར། རྫུན།
2. གསེར། ཡེ་ཤེས།
3. གསེར། བའི།
4. ཅོ། སོགས་པ།
5. གསེར། རྣམ་པར། མི་འདུག
6. གསེར། ཞེས་ན།

 སྒྲོག་ཆགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡོད་པ་ཡིན་ན། ཇི་ལྟར་ན་དམིགས་པར་མ་གྱུར། དེ་ཡང་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་བརྟན་པ་ཉིད་དང་འབྲུལ་པ་ཙམ་ཡིན་ཏེ། གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ་ཉིད་ཀྱིས། རྣམ་པ་དང་བཅས་པའི་ཤེས་པ་དང་། རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་ཁྲབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །རིག་པ་འདིས་རྣམ་པ་དང་བཅས་པ་དང་། རྣམ་པ་མེད་པའི་ཤེས་པ་མ་ལུས་པར་བརྟན[2] པར་རབ་ཏུ་བསྒྲུབས་པས་ཅུང་ཞིག་ཀྱང་དོན་དམ་པའི་དངོས་པོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་མེད་པ་མ་ཡིན་ནམ། ཇི་ལྟར་ན་མཆོན་པར་བྱ་བའི་རང་བཞིན་ཚད་མས་ཉེ་བར་མཆོན་པར་བྱ་ཞེ་ན། ཉེས་པ་དེ་ནི་མེད་དེ། དབུ་མ་པ་འདོད་པའི་ཚད་མས་བརྟན[3] པ་ཉིད་དུ་གྲུབ་པ་ཡང་། གཅིག་དང་དུ་མའི་རང་བཞིན་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཅན་གྱི་ངོ་བོ་སྣང་བ་ཙམ་དང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་མ་བཀག་པའི་ཕྱིར་རོ། །བརྟན[4] དུ་སྣང་བ་དེ་ཉིད་ལ་ཡང་མཆོན་པར་བྱ་བ་དང་། མཆོན་པར་བྱེད་པ་དང་། འཁོར་བ་དང་། མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་དང་། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པ་བསྒོམས་པས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་མཛད་པ་ལ་སོགས་པ་གནོད་པ་མེད་པར་རྣམ་པར་གཞག་པ་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་།

སངས་རྒྱས་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཉིད། །
ཀུན་རྫོབ་ཉིད་དུ་རབ་ཏུ་གྲུབ། །

---

1. གསེར། རྫུན་པ།
2. གསེར། རྫུན།
3. གསེར། རྫུན།
4. གསེར། རྫུན།

ཅེས་གསུངས་སོ། །དངོས་པོ་སྐྱེས་པ་ཐམས་ཅད་བརྟན[1]པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྙིང་པོ་མེད་པ་མ་ཡིན་ནམ། དེའི་ཚེ་ཅིའི་ཕྱིར་བྲི་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ་སོགས་པ་བསྒོམས[2]པའི་འབད་པ་བྱེད་ཅེ་ན། དེ་ནི་བདེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ལོག་པར་སྒྲོ་འདོགས་གཅོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲོལ་བྱེད་བརྟན[3]ཡང་འབད་པར་བྱ། །ཞེས་བྱ་བའི་ཚིག་གིས་ཇི་ལྟར་ཡང་རྣམ་པར་དཔྱད་ན། ཡང་དག་པའི་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་དེ་ལྟར་ན་ཡང་བདག་བདེ་བར་གྱུར་ཅིག བདག་སྡུག་བསྔལ་བར་མ་གྱུར་ཅིག་ཅེས་བྱ་བ[4]ནི། སྲིད་པ་སྒྲོག་ཆགས་མ་ལུས་པ་ལ་ཡོད་དོ། །འདི་ལྟར་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་རྒྱུ་ལམ་ལོག་པ་ཉིད་དུ་མཚུངས་ཀྱང་དགེ་བའི་རྒྱུ་ལམ་མཐོང་བས་ནི། ཡིད་བདེ་བར་གྱུར་ལ། མི་དགེ་བའི་རྒྱུ་ལམ་གྱིས་ནི་ཡིད་མི་བདེ་བར་འགྱུར་ཏེ། དེ་བསལ་བའི་ཕྱིར་དམ་པའི་ཆོས་ཀློག་པ་དང་། ཐུགས་བློས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་བརྟན[5]པ་བཞིན་དུ་ཁྱད་མེད་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པ་རང་བཞིན་གྱི་རྣམ་པར་རྟོག་པ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་དང་། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་དོན་དུ་གཉེར་བ་རྣམས་རབ་ཏུ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །རྟོམ་པ་འདིའི་དོན་གང་ཡིན་པ་དེའི་དོན་ཉམས་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནམ། འདི་ལྟར་མཚན་གཞི་དང་། མཚན་ཉིད་དཔྱད་པ་ན་སྐབས་ལ་བབ་པ་དེ་ཡང་གདམ་གཞན་དུ་ཐལ་བས་བརྗོད་པའི་ཕྱིར། གང་དུ

1. གསེར། རྟེན།
2. ཅོ། བསྒོམ།
3. གསེར། རྟེན།
4. གསེར། བྱ་བའི།
5. གསེར། རྟེན།

སོང་བ་མི་ཤེས་སོ་ཞེ་ན། དེ་རྣམ་པ་བདུན་དུ་དཔྱེ་བ་བྱས་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ནམ་ཞེ་ན། བདེན་ཏེ་བུ་རམ་དང་མངར་བ་ཉིད་ཀྱི་ཚུལ་གྱིས་དེ་ལྟར་ནི་མི་ཤེས་ཏེ། དེ་ལས་སྙིང་པོ་དང་སྙིང་པོ་མ་ཡིན་པ་གང་ཞེ་ན། སྨྲས་པ། རྟོགས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་བརྗོད་པའི་རིམ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། ལྟའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་[1]སྒོམས་པར་འཇུག་པའི་སྒོམ་པ་དོན་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། རིགས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་ན། དང་པོ་སྙིང་པོ་མེད་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་ཚོགས་པ་ཅན་རྣམས་ཚོགས་པར་གྱུར་ན། འབྲས་བུ་གང་ཡིན་པ་དེ་གདོན་མི་ཟ་བ་ཉིད་ཡིན་ནོ། [2] །གཞན་དུ་ན་དེའི་ཚོགས་པ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་ཏེ། དེ་བས་མངོན་དུ་བྱས་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཚོགས་པ་ཅན་རྣམས་ཚོགས་པས་ན། དེའི་འབྲས་བུ་གདོན་མི་ཟ་བར་ཡོད་པར་འགྱུར་རོ།། དེ་ལྟར་གྱུར་པས་དང་པོ་ཉམས་པ་ཡིན་ནོ། །སྐྱུ་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པས་སྟོང་པའི་བདེ་བའི་ངོ་བོ་འབའ་ཞིག་མི་དམིགས་པའི་གཉིས་པ་བདེན་པ་ཉིད་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་མཚན་མས་རྣམ་པར་ངེས་པ་ཉིད་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པས་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་ཉིད་ཡིན་གྱི། གང་ཡང་རུང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཚད་མས་གྲུབ་པ་ཁོ་ན་དམིགས་པ་ཉིད་ཡིན་ལ། དེ་ཉིད་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འདོད་པར་བྱ་བ་ཉིད་དུ་སྣང་ངོ་། །དེ་བས་ན་གཅིག་པུ་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་དང་། འདོད་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། འཁོར་ལོའི་རང་བཞིན་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་དང་། མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པར་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་དང་། འབད་པ་ཉིད་མཚུངས་པའི་ཕྱིར་གཉིས་པ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་ཙམ་ཡིན་ནོ། །གསོད་པར་བྱེད་པ་མེད་པའི་ཡང་དག་པའི་དོན་གྱི་རང་བཞིན་ཉིད་ཀྱིས་རང་དབང་དུ་གྱུར་པ་དོར་བར་མི་ནུས་པ་ཉིད་ཀྱི་

---

1. གསེར། གྱིས།
2. གསེར། ཉིད་དོ།

ཕྱིར་དང་ལྡན་པའི་ངོ་བོ་ལ་བྱེ་བྲག་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་། དགོས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་གསུམ་པ་དགེ་བ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ལྷན་ཅིག་དམིགས་ནས། དེའི་བདག་ཉིད་གྲུབ་པ་ལས་གཅིག་ཡོངས་སུ་དོར་ན་གཞན་ཡང་གདོན་མི་ཟ་བར་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའམ། ཡང་ན་འགའ་ལ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །སྒྲིབ་པ་ཉིད་ཀྱིས་འབད་པ་ཉིད་མངས་པའི་ཕྱིར་དང་། རྣམ་པར་དཔྱད་མི་བཟོད་པ་ཉིད་ཀྱིས་འཁྲུལ་པའི་ངོ་བོ་ཡིན་པས་དོན་དམ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར། གསུམ་པའི་ཐ་མའི་ཕྱོགས་ཀྱང་ལེགས་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། དེ་ལ་འགའ་ཞིག་ལས་རིགས་པ་ཙུང་ཞིག་[1]ཅིག་བརྗོད་པར་མི་བྱ་སྟེ། སྒྲིབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་ཀྱང་། ཕྲ་མོ་དང་། ཐིག་ལེ་ལ་སོགས་པ་ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྒོམས་པ་ནི་ཇི་སྲིད་དུ་མངོན་སུམ་དུ་གྱུར་པ་དེ་སྲིད་དུ་འབད་པས་ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྒོམས་པའི་ཕྱིར་དང[2] ཐམས་ཅད་དུ་བསྒོམས་པར་བྱ་བ་དངོས་པོ་ཉིད་དུ་ཡོད་ལ། དེ་ལ་འདིར་གལ་ཏེ་འབད་པས་འཇིག་ན་ནི། ཙུང་ཞིག་ཀྱང་བསྒོམ་པར་མི་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །སྒྲིབ་པ་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་དེ་ལྟ་[3]ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། སྒྲིབ་པ་དང་སྒྲིབ་པ་མེད་པ་དག་བསྒོམ་པའི་གནས་སྐབས་ན་ཁྱད་པར་ཅི་ཞིག་ཡོད། འོན་ཏེ་སྒྲིབ་པ་མེད་པར་སྒྱུར་དུ་བརྟན་པོར་གྱུར་པ་འདི་ཁྱད་པར་ཡིན་ཏེ། དམིགས་པ་གང་ཁོ་ན་ལ་སེམས་ཡུན་རིང་པོར་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་ཡང་དང་ཡང་དུ་གཏད་པས་དེ་ཉིད་ལ་བརྟན་པོར་[4] འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིགས་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལ་ལུང་ཡང་ཡོད་དེ། དེ་སྐད་དུ་ཡང་།

1. གསེར། ཙུང་ཟད།
2. གསེར། དང་ མི་གསལ།
3. གསེར། ལྟར།
4. གསེར། པར།

དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་ཡང་དག་མིན། །
གང་གང་ཞིན་དུ་གོམས་པ་ལས། །
བསྒོམ་པའི་སྟོབས་ནི་རྫོགས་པ་ན། །
དེ་གསལ་མི་རྟོག་བློ་འབྲས་ཅན། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་། འདིར་ཐག་མི་རིང་བ་ན། གནས་པ་ཡིན་པར་ཡང་གསུངས་ཏེ།

ཨེ་མའོ་སྔོངས་ཉིད་ཨེ་མའོ་སྐྱོམ་ལས་ཅན། །
ཨེ་མའོ་དོན་དམ་རྒྱལ་ཀྱིས་ཕྱོགས་འགྲོ་འདི། །
རང་སེམས་ཅམ་དང་འབྲེལ་པའི་སངས་རྒྱས་ཉིད། །
རིང་མི་གནས་ཀྱང་མི་འབད་ངོ་མཚར་ཆེ། །

ཞེས་པ་མ་ཡིན་ནམ། དེ་བས་འདི་ལ་ཁྱད་པར་མེད་དོ། །སྒྲིབ་པ་ལ་དམིགས་པ་ནི་འཕྲུལ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དོན་དམ་པ་མ་ཡིན་པ་ཉིད་དོ་ཞེ་ན། ཐམས་ཅད་དུ་བསྒོམ་པའི་ཡུལ་གྱིས་དངོས་པོ་མི་འཕྲུལ་པས་ཅུང་ཞིག་ཀྱང་བསྒོམ་པར་བྱ་བ་མེད་པར་འགྱུར་ལ། དེ་བས་ན་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐར་པའི་ལམ་བསྒོམ་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་འཁྲུལ་ཡང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་རྣམ་པར་ཞུགས་པས་སྒྲིབ་པ་མེད་པར་བསྒོམ་པར་འགྱུར་བ་སྐྱོན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེ་ན། སྒྲིབ་པ་དེ་[1]ཡང་སྒྱུ་མའི་རྣམ་པར་ཞུགས[2]པས་དེ་ལ་ཡང་སྐྱོན་གྱི་སྐབས་ཅི་ཞིག་ཡོད། དེ་བས་ན་དོན་དུ་གཉེར་བས་སྒྲིབ་པའམ། སྒྲིབ་པ་མེད་པ་ཡང་རུང་།

---

1. གསེར། དེ་ལ།
2. གསེར། ཞུགས་པ་མཚུངས།

གང་ཁོ་ན་འདོད་པའི་ཚད་མ་དང་ལྡན་པའམ། ཅིག་ཤོས་དེ་ཉིད་ལེ་ལོ་སྤྲངས་ནས་ཕྱུག་རྒྱ་ཆེན་པོ་དོན་དུ་གཉེར་བས་བསྒོམ་པར་བྱ་སྟེ་ཤིན་ཏུ་ཐལ་ཆེས་པས་ཆོག་གོ །དེ་ལ་སྙིང་པོ་དང་ཅིག་ཤོས་ཀྱི་རྣམ་པར་དབྱེ་བ་ཡང་བླ་མ་མཉེས་པར་བྱེད་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཤེས་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དགོས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུམ་པའི་ཕྱོགས་ལ་བཤད་པའི་ཉེས་པ་དང་། གསང་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་གྱི་རིམ་པ་མེད་པའི་ཕྱིར། ལྟ་པ་སྐྱོན་དང་བྲལ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །སྔར་སྟོན་དུ་བྱས་པའི་ཕྱིར། སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་རབ་ཏུ་སྦྱོར་བ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནམ། ཅིའི་ཕྱིར་དེ་ལ་མེད་ཅེ་ན། བདེན་ཏེ། བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་འབྲས་བུ་མངོན་དུ་གྱུར་པའི་གནས་སྐབས་དེ་ཡང་རིམ་པ་འདི་ལ་མེད་པ་དང་། མངོན་དུ་གྱུར་པ་ཡོངས་སུ་བཏང་བ་དང་། དགོས་པ་མ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །རང་གི་འདོད་པས་བཟློག་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་དང་།[1] དགོས་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་།[2] སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མེད་པའི་ཕྱིར། ལྟ་པའི་མཐའི་རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་རྟོག་པའི་དྲི་མས་སྟོང་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཇི་ལྟར་བཟློག་མི་ནུས་ཤེ་ན། ཇི་ལྟར་འགའ་ཞིག་ལྡོག་པ་ནི་རྒྱུ་ལྡོག་པའམ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་བཟློག་[3]པ་ལས་འགྱུར་ན། དེ་ལ་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ཡང་ལྡོག་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུའམ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ལྡོག་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །རང་གི་འདོད་པས་འགོག་པ་ཡང་མི་ནུས་ཏེ་མི་མཐུན་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པ་འགོག་པ་འདོད་ཀྱང་སྡུག་བསྔལ་ལ་སོགས་པ་ལ་འཇུག་པ་མཐོང་བའི་ཕྱིར་རོ། །སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནམ།

1. གསེར། དང་། མི་འདུག
2. གསེར། དང་ མི་འདུག
3. གསར། ལྡོག

འདི་ལྟར་ཤིང་གི་ཕྱུང་པོ་ལ་མི་རབ་ཏུ་འབར་བས་ཤིང་མ་ལུས་པ་ཐལ་བར་བྱས་ནས་དེའི་འོག་ཏུ་བདག་ཉིད་ཀྱང་རང་གི་ངང་ཁོ་ནས་ལྡོག་པར་འགྱུར་བ་དེ་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མི་རབ་ཏུ་འབར་བས་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་ནས་ཀྱང་། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་མ་ལུས་པར་ལྡོག་པར་བྱེད་ལ། དེ་ཡང་རང་གི་ལྡོག་པར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་བདེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། དཔེ་དང་མཐུན་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལ་འདི་ལྟར་ཤིང་འགྱུར་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུར་གྱུར་པའི་མེ་ནི་ཤིང་གི་འགྱུར་བ་ཡང་དག་པར་སྐྱེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཤིང་འགྱུར་བར་བྱེད་པ་ནི་མི་ཡིན་ནོ་[1]ཞིས་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་སེམས་ལ་འདིར་ན་[2] སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་འཁོར་ལོས་སྐྲུར་བར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་མ་ཡིན་ན་དེའི་ཕྱིར་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྟོང་པ་ཉིད་ལ་རང་གི་ངང་གིས་ལྡོག་གོ་ཞེས་ཀྱང་སྨྲ་བར་བྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ། །རྒྱུར་མི་འགྱུར་དུ་ཆུག་ན་ཡང་སྟོང་པ་ཉིད་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ནི་[3]འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནམ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་ཤིང་ལོག་པས་ཁྱབ་པར་[4]ཤིང་ཤ་པ་ལྡོག་པ་བཞིན་དུ་ལྡོག་པ་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་སྙིང་པོ་མ་ཡིན་ཏེ། འདི་ལྟར་ཐམས་ཅད་དུ་ཤེས་བྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་སྟོང་པ་ཉིད་དེ་ལ་ལྡོག་པ་ནམ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། ། གལ་ཏེ་ལྡོག་པར་འགྱུར་ན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པ་ལས་དུས་སུ་མཐའ། དེ་མ་ཐག་ཏུ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལྡོག་པར་འགྱུར་ན་མ་ཡིན་ཏེ། ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་

---

1. གསེར། ཏོ།
2. གསེར། ནི།
3. གསེར། ན།
4. གསེར། ཁྱབ་པར་བྱ་བ།

རྒྱས་སུ་གྱུར་ནས་ཀྱང་ ཐུགས་རྗེས་དུས་ཇི་སྲིད་ཅིག་གི་བར་[1]དུ་གནས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཞལ་གྱིས་བཞེས་པའི་ཕྱིར་འགྱུར་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ། འཁོར་ལོ་ཡང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་ནོ། །ཅི་སྟེ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སྐྱེས་པས་འཁོར་ལོའི་ཡེ་ཤེས་ལོག་ན་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལས་གང་གི་[2] ལྡོག་པར་བྱེད། དེ་ཉིད་ཀྱིས་ལྡོག་པ་ནི་འགལ་བའི་ཕྱིར་ལ། རྒྱུའམ་ཁྱད་པར་བྱེད་པ་མེད་པ་དེ་བས་ན་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལ་ལྡོག་པ་མེད་དོ། །དེ་བས་ན་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ཡང་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལྡོག་གོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། སྟོང་པ་ཉིད་ལ་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་པ། ལོག་པ་དང་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱིས་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སུ་ཞིག་སླ། འོན་ཀྱང་ལྡོག་པར་བྱེད་པ་[3]དེ་ནི་བླ་མའི་མན་ངག་ལས་ཤེས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ཡང་སྙིང་པོ་མ་ཡིན་ཏེ། བླ་མའི་མན་ངག་ལས་ཀྱང་སྟོང་པ་ཉིད་དང་། དེ་ལྡོག་པ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་ལྡོག་པར་བྱེད་པའི་ཚད་མ་གཞན་ཅུང་ཟད་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །སོ་སོར་སྐད་ཅིག་མའི་འཇིག་པ་དང་། སྐད་ཅིག་གིས་ཉམས་པའི་ངོ་བོས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་མོད་ཀྱི། རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱུན་ལྡོག་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་གི་བདོག་པ་བརྟག་པར་མི་བྱ་སྟེ་ལྡོག་པའི་སྙིང་པོ་མེད་པ་ལ་རྟོག་པ་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ཀྱིས་བརྟགས་པ་དགོས་པ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་སྐད་དུ་ཡང་།

སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་གྲོལ་གྱུར་པ། །
རབ་དགའ་རྒྱ་མཚོ་གང་ཡིན་དེ།[4] །

---

1. གསེར། བར་འགྱུར་ན་ཡང་དག་བར།
2. གསེར། གིས།
3. གསེར། བྱེད་པ་གང་ཡིན་པ།
4. གསེར། ཏེ།

དེ་ཉིད་ཀྱིས་རྫོགས་མ་ཡིན་ནམ། །
ཐར་པ་ར་ཐྲལ་ཅི་ཞིག་དགོས། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ཡང་ལྡོག་པ་ལ་མེད་དེ། ནམ་མཁའི་མི་རྟོག་ལ་ནམ་ཡང་དོན་གྱི་བྱ་བ་ཅུང་ཞིག་ཀྱང་མི་སྲིད་དེ། ཡུན་རིང་པོར་འགགས་ཀྱང་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་འདས་པའི་འཁོར་ལོ་ལས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་སྙིང་པོ་མ་ཡིན་ཏེ། ཡུན་རིང་པོར་ཁྲིམ་བྱ་ཤི་བ་ཡང་སླ་སྐྲོགས་པར་ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྣལ་འབྱོར་པའི་བྱིན་གྱི[1]་རླབས་ཀྱིས་ནམ་མཁའ་ལས་ཀྱང་དོན་བྱེད་རྐྱང་པ་སྲིད་པ་མ་ཡིན་ནམ། རྣལ་འབྱོར་པའི་བྱིན་གྱི་བརླབས་ཉིད་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས[2]དོན་བྱེད་པ་ཡིན་ལ། ནམ་མཁའ་ནི་མ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དཀྱིལ་འཁོར་[3]འཁོར་ལོ་འགགས་པ་ལས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་པའི་དུས་ན་ཡང་འབྱུང་ཡང་དེ་ལས་དོན་བྱེད་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནམ།དེ་བས་ན་འགགས་ཤིང་ཡང་སྐྱེ་བར་འགྱུར་རོ་ཞེ་ན། དེ་ནི་བདེན་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཇི་ལྟར་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་པ་དེ་ལས་བྱུང་བ་མེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་དོན་བྱེད་པའི་འཁོར་ལོ་ཡང་དེ་ལ་མི་སྲིད་དོ། །འགགས་པ་ལས་ཀྱང་འབྱུང་བ་ལ་དགོས་པ་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཤིན་ཏུ་སྦྲོས་པས་ཚིག་གོ །ཕྱུག་པའི་ཕྱོགས་ལ་བཤད་པའི་སྐྱོན་གྱིས་ཚོགས་བདུན་པ་ལ་ཡང་ཡོད་པས་བརྟག་པ་ལ་ཡང་བརྟག་པར་མི་བྱའོ། །ཕྱུག་པ་དང་བདུན་པ་མཚུངས་

1. གསེར། གྱིས།
2. སྣ། ཅོ། ནམ་མཁའ་ལས་ཀྱང་དངོས་པོའི་ངོ་བོ་འདས་པའི་འཁོར་ལོ་ལས་སེམས་ཅན་གྱི་ ཞེས་གསལ། །
3. གསེར། གྱི།

པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་ལ་ [1]ཁྱད་པར་ཅི་ཡོད་ཅེ་ན། ཁྱད་པར་ཡོད་དེ། སྔ་མའི་གནས་སྐབས་འཁོར་ལོའི་རྣམ་པ་ཉིད་ངེས་པར་བྱས་ནས་ཡང་དང་ཡང་དུ་རང་གི་འདོད་པས་སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ལ། བདུན་པ་ལ་ནི་དེ་མེད་པ་དེ་བས་ན་མཚུངས་པ་དང་ཐ་མི་དད་པ་མ་ཡིན་པར་བསྟན་ཏོ། ༡༦ |

ཪྡོ་རྗེའི་ས་བོན་དྲི་མེད་དགའ་འབབ་པ། |
དག་པའི་ཆུ་སྐྱེས་ཡང་དག་སྨུ་གུ་འབྱུང་རྒྱས་ཤིང་། |
བཞི་པའི་འབྲུ་ནི་ཡོངས་གསལ་སྨིན་འགྱུར་བའི། |
བཞི་པ་དག་ནི་མཁས་པ་རྣམས་ལ་སྤྲས། ༡༧ |

ཪྡོ་རྗེའི་ས་བོན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་དག་ནི་བླ་མའི་མན་ངག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ། ༡༧ |

གསལ་བྱེད་བདུད་རྩི་ལྔ་དང་ཐིག་ལེ་ཟླ་བ་དང་། |
སྨིན་དབུས་ཐིག་ལེ་ལས་བྱུང་དཀྱིལ་འཁོར་དང་། |
རླུང་གི་རང་བཞིན་ལྷེའུ་ཚུང་སོགས་དེ་ཉིད། |
ངོ་བོ་མིན་པ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་རྟག་ཏུ། ༡༨ |

གསལ་བྱེད་ལྔ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། གསལ་བྱེད་ལྔ་ཞེས་བྱ་བའི་སྒྲ་ལ། བ་ལང་དང་། ཁྱི་དང་། གླང་པོ་དང་། རྟ་དང་། མིའི་མཚན་

1. གསེར། ལས།

ཉིད་དོ། །བདུད་རྩི་ལྔའི་[1]སྣ་ནི། ཤི་དང་། ཀུ་དང་། མ་དང་། ར་དང་། ཤུའི་མཚན་ཉིད་དོ། །དེ་དག་ཏག་ཏུ་བརྟེན་པ་ཁོ་ནས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བར་སེམས་སོ། །ཐིག་ལེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། སྙིང་གར་ཟླ་བ་ལ་གནས་པའི་ཐིག་ལེ་འོད་འཕྲོ་བར་གྱུར་པ་ལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སེམས་ནས་རྣམ་པར་སྒོམ་པར་བྱེད་དོ། །ཟླ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྙིང་གའི་གནས་སུ་ཟླ་བ་ཕྱེད་པའམ། ཟླ་བ་རྒྱས་པས་སྙིང་གར་པདྨ་ལ་གནས་པ་[2]འགའ་ཞིག་རྣམ་པར་སྒོམ་པར་བྱེད་དོ།།

སྨིན་དབུས་ཐིག་ལེ་ལས་བྱུང་དཀྱིལ་འཁོར་དང་། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྨིན་མའི་དབུས་ཏེ་མཛོད་[3]སྤྱིའི་གནས་སུ་ཐིག་ལེ་རྣམ་པར་བསྒོམ་པར་བྱའོ། །ཐིག་ལེ་དེ་ལས་བྱུང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ནི། རླུང་དང་། ཆུ་དང་། དབང་ཆེན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་དང་མེའི་མཚན་ཉིད་དོ། །འདི་སྐད་དུ་བསྟན་པར་འགྱུར་ཏེ། ཁ་དང་། རྣ་བ་དང་། སྣ་དང་། མིག་ལག་པའི་སོར་མོས་བཀབ་ལ། སྨིན་མའི་དབུས་སུ་ཐིག་ལེ་བལྟ་བར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཡང་གསལ་པོར་གྱུར་པའི་གནས་སྐབས་སུ་དགེ་བ་དང་མི་དགེ་བའི་ལྟས་ཡང་དག་པར་སྟོན་པར་བྱེད་པ། དབང་ཆེན་ལ་སོགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་རབ་ཏུ་བསྐྱེད་པའི་ཐིག་ལེ་དེ་ལ་ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སེམས་སོ། །རླུང་གི་རང་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་པུ་ར་ཀ་དང་། ཀུམ་བ་ཀ་དང་། རེ་ཙ་ཀ་དང་། ཤཱནྟ་ཀ་སྟེ། དབུགས་འབྱུང་རྔུབ་ལ་སོགས་པའི་མཚན་ཉིད་དོ།།

འདི་སྐད་དུ་བཤད་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་འདི་ལྟར་གྲངས་ཅན་ལ་སོགས་པས་བསྟན་པའི་རླུང་གི་རང་བཞིན་ཤེས་པར་བྱས་ནས། དབུགས་བསྣགས་པ་ལས་བརྟན་

1. གསེར། ལྔའི། མི་སྣང་།

2. གསེར། པའམ།

3. གསེར། འཛོད།

པོར་བྱས་ནས། ནམ་མཁའ་ལ་རྒྱུ་བས་འོང་བ་དང་། གཞན་གྱི་གྲོང་དུ་འཇུག་པ་དང་། གྲོལ་བའི་བར་དུ་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པར་འགྱུར་བའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྟུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་སླ་བ་རྣམས་ཀྱིའོ། །ལྷེའུ་ཆུང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མེད་པའི་ཕྱོགས་ལྷེའི་ཕྱུགས་ཀྱི་རང་གི་སྟེང་ན་སྣང་པོ་ཆེའི་སྐའི་[1]རྣམ་པ་ལྔ་བུ་ཁ་འོག་[2]ཏུ་བལྟས་པ་ལྷེའི་མིང་ཅན་དུ་ལྷེའུ་ཆུང་ཡོད་དེ། དེ་ཡང་ནུས་པའི་ངོ་བོ་སྡིག་པའི་[3]རང་བཞིན་དུ་ཡོད་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ལྷེའི་རྩེ་མོས་རེག་པར་གྱུར་ཙམ་ན་བདུད་རྩི་རྒྱུན་མི་འཆད་པར་འཇིག་[4] པར་འགྱུར་རོ། །བདུད་རྩི་རྒྱུན་བབས་པ་དེས་ཀྱང་དོན་དམ་པའི་བདག་ཉིད་ཆེམ་པར་འགྱུར་བ་བསྒོམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷེའུ་ཆུང་གི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །སོགས་པའི་སྒྲས་ནི་སྙིང་གའི་དབུས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་རྩིབས་བཅུ་དྲུག་པའི་དབུས་ན་ཧཱུྃ་གནས་པ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་བཞི་པའི་ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྒོམ་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཟུང་སྟེ། ཡང་སྨྲས་པ།

[5]བཅུ་ལས་དྲུག་ལྷག་རྩ་དང་ལྡན་པའི་འཁོར་ལོ་ཡི། །
དཀྱིལ་ན་[6]གནས་པའི་སྙིང་གར་རྣམ་པར་གནས་པའི་བདག །
དེས་ནི་དེ་ཡི་ཁྱད་པར་ལྟ་བུའི་གྲུབ་པ་སྟེར།[7] །
དེ་ནི་མངོན་པར་མི་གཡོ་བ་ཡི་ཡིད་དག་གིས། །

---

1. གསེར། སྐའི། མི་འདུག
2. གསེར། ཁ་དོག
3. གསེར། རྒྱ་དཔེར། སྡིག་པ་ཞི་བའི།
4. གསེར། རྒྱ་དཔེ། འཇིག
5. རྒྱ་དཔེར་ཚིགས་བཅད་འདི་གཉིས་མི་འདུག
6. གསེར། དཀྱིལ་འཁོར།
7. གསེར། སྟེ།

རྣལ་འབྱོར་པ་ཡི་སེམས་དེ་དེ་ལྟར་མངོན་པར་བསམ། །
ནུབ་པར་གྱུར་པའི་མགོན་པོ་རྒྱལ་བར་གྱུར་དེ་ནི། །
ནུས་པ་དག་གིས་དེ་ནི་ཡོངས་སུ་བསྐོར་དང་བཅས། །

ཞེས་བྱ་བ་དེ་ལྟ་བུ་སྨྲ་སྐྱེགས་བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དུ་འདོད་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བདག་ཉིད་ཀྱིས་བརྟག་པར་བྱ། དཔྱད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུའོ། ༡༨ །

རྨི་ལམ་མིག་འཕྲུལ་གཟུགས་བརྙན་སྒྱུ་མ་དང་། །
སྨིག་རྒྱུ་དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་ཆུ་ཟླ་དང་། །
གཞན་གྱི་སྒྲ་ཡིས་མངོན་པར་བརྗོད་པ་ཡིས། །
འདིར་བཤད་བསྒྲུབ་བྱ་གཞན་ལ་ཡོད་མ་ཡིན། ༡༩ །

རྨི་ལམ་མིག་འཕྲུལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། རྨི་ལམ་དང་། མིག་འཕྲུལ་ལྟ་བུ་དང་། གཟུགས་བརྙན་དང་། སྒྱུ་མ་དང་། སྨིག་རྒྱུ་དང་། དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་དང་། ཆུ་ཟླ་ལྟ་བུའོ། །གཞན་གྱི་སྒྲས་ནི། ནམ་མཁའ་དང་། བྲག་ཅ་དང་། དཔེ་བ་ལྟ་བུའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲས་སོ། །དེ་ལྟ་བུའི་མངོན་པར་བརྗོད་པ་ནི་སྒྲ་བ་པོས་དེ་ལྟ་བུའི་བསྟན་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལས་གཞན་མེད་པ་ཉིད་དེ། གཞན་ཡང་འདིར་བཤད་པ་ཁོ་ན་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་སྒྲ་དེ་དེ་ལ་འཇུག་པར་རང་ཉིད་ཀྱིས་ཤེས་པར་བྱའོ། ༡༩ །

ཟབ་མོ་སྟོང་ཉིད་སོ་སོར་སྣང་བ་ཙམ། །
ཞི་བ་ཤིན་ཏུ་ཕྲ་བ་སྒྲས་བརྗོད་མིན། །

གོས་མེད་དངོས་བྲལ་དྲི་མེད་ལ་སོགས་དང་། །
གཞན་སྒྲུབ་ཡོད་པ་འཁྲུལ་པར་མི་བྱ་འོ། ༣༠ །

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་སྒྲས་ཞི་བ་དང་། རྣམ་པ་མེད་པ་དང་།[1] སྤྲོས་པ་མེད་པ་དང་། ཐོག་མ་མེད་པ་དང་། འགག་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལསོགས་པའི་སྒྲ་ཡིས་ཀྱང་འཁྲུལ་པར་མི་བྱ་ཞིང་། གཞན་[2]སྒྲུབ་ཏུ་ཡོད་པ་ནི་གཞན་གྱིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡོད་པ་ནི[3]འདིར་ཡོད་པའི་སྒྲ་དེས་བཤད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ལས་མཆོག་འགའ་ཞིག་ཡོད་དོ་ཞེས་འཁྲུལ་པར་མི་བྱ་སྟེ། བཤད་པའི་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཁོ་ན་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡིན་ཞེས་ངེས་པར་བྱའོ། ༣༠ །

རྣམ་པ་བདུན་པོ་བཀོད་པའི་ངོ་བོ་དག་ལས་ནམ་མཁའ་མ་ལུས་པའི།།
སློབ་དབྱིངས་ཁྱབ་པར་བྱེད་པའི་བསོད་ནམས་གང་ཞིག་བདག་གིས་ཐོབ་གྱུར་པ། །
དེས་ནི་འཇིག་རྟེན་འདི་དག་དཔེ་མེད་པ་ཡི་རིག་མས་འཁྲུད་པར་འགྱུར་བ་ཡི། །
མཛེས་པའི་སྐུ་ལས་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་པ་དག་གིས་འགྲོ་བའི་དོན་བྱེད་ཤོག།

---

1. གསེར། མེད་པ་དང་ མི་གསལ།
2. གསེར། གཞན་དུ།
3. གཞན་གྱིས་བསྒྲུབ་པར་བྱ་བ་ཡོད་པ་ནི།གསེར་བྲིས་ནང་ལྷག་པོར་གསལ།

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བ་སློབ་དཔོན་ངག་གི་དབང་ཕྱུག་གྲགས་པས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

དཔལ་ལྡན་གསང་བ་འདུས་པ་ལས། །
དྲི་མེད་དག་མཆོག་མཐར་ཕྱིན་པའི། །
ངག་གི་དབང་ཕྱུག་དེ་ཡིས་འདི། །
བྱས་པས་སློ་ངན་འཛིག་གྱུར་ཅིག །
བདག་གིས་འདི་བཤད་བྱས་པ་ལས། །
པད་དཀར་ཀུན་ད་[1]ཁ་བྱེ་ལྟ་བུ་དང་།[2] །
འོ་མ་སྐར་མ་ལྟ་བུའི་བསོད་ནམས་གང་བསགས་པ། །
དེ་ཡིས་འགྲོ་བ་བདག་ཉིད་དང་མཚུངས་རིག་མས་ཉེར་འཕྲུད་པའི།།
དཔེ་མེད་བདེ་ཆེན་གང་བའི་དབང་ཕྱུག་དཔལ་གྱུར་ཤོག །

དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེ་སྣང་བའི་རྣམ་པར་བཤད་པ། སློབ་དཔོན་ངག་གི་དབང་ཕྱུག་གྲགས་པས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

ལོ་ཙྪ་བ་འགོས་ལྷས་བཙས་ཀྱིས་རྒྱ་གར་ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་དཔེ་ལས་ཞུ་གཏུགས་གཡར་ཁྲལ་འཚལ་བ་ལགས་སོ། །

1. གསེར། ཀུནྡ་
2. བདག་གིས······ལྟ་བུ་དང་།ཞེས་འདིར་གསལ་བའི་ཚིག་རྐང་གཉིས་པོ་གསེར་བྲིས་ནང་ཚིག་རྐང་གཅིག་ཏུ་བཀོད་འདུག

नानासिद्धोपदेशः

NĀNĀSIDDHOPADEŚAḤ

नानासिद्धोपदेशः

पद्माङ्कुरस्य—

प्रज्ञोपाययोर्महासुखचक्रस्थमोङ्कारहकारादवतीर्णौ(र्णो) ज्ञानचेत-मणिसूत्रवदेकीकृत्य दोलया महामुद्रोपदेशः ।

प्रज्ञारक्षितस्य—

कमलकुलिशानुभवित्वसद्बिन्दुरनक्षरशिखाग्रतो महामुद्रोपदेश-स्तत्त्वपारगो महासुखचक्रावतीर्णो ज्ञानतन्तुं समरसीकृत्य दोलया सहजयोगः ।

नेलीपादस्य—

कुलिशमणिनिविष्टो ज्ञानबिन्दुरनक्षरः ।
आशुसिद्धिकरः प्रोक्तो **नेलीपादेन** धीमता ॥

रविगुप्तस्य—

ज्ञानदीपशिखाकारो निर्माणाब्जेन्दुमध्यगः ।
हंकारं द्रावयत्याशु **रविगुप्तेन** भाषितम् ॥

कृष्णाचार्याणाम्—

कृष्णाचार्यैः समाख्याता चण्डाली नाभिमध्यगा ।
आदिस्वरस्वभावाऽसौ दहत्यनाहतं मुखात् ॥

निर्माणे तिलका ख्याता वसन्तो धर्मचक्रगः ।
द्वयोरेकस्वभावस्तु **कृष्णाचार्येण** ख्यापितम् ॥

सरहपादानाम्—

निर्माणचक्रद्वये नाभौ पञ्चाक्षरविभावना ।
कर्तव्या योगयुक्तेन ख्यापितं **सरहेण** तु ॥

महीधरस्य—

निर्माणचक्रे शून्यस्वभावा चण्डाली अनाहतप्रियेति **महीधरः** ।

भूरिपादानाम्—

निर्माणचक्राद्याकारकमलवरटकेऽकारहकारौ मृणालतन्त्वाकारेणैकीभूयाऽनाहतद्राविणाविति **भूरिपादाः** ।

वीणापादस्य—

निर्माणचक्रे रविसोमसम्पुटज्ञानबिन्दुसमुत्थितौ रेखया आलिकालिसम्पुटस्वरूपया त्रिभिर्वेष्ट्य पुनरुत्थितौ रेखाद्वयप्रज्ञोपायस्वभावौ । एका शुक्ला धर्मचक्रात् प्रतिनिवृत्य पश्येत्, द्वितीया चक्रं प्रज्ञास्वभावा अनाहतं कान्तमिवालिङ्गयतीति **वीणापाद**मतं किल ।

विरूपाचार्यस्य—

निर्माणचक्रेऽन्तरीक्षचक्रस्थमोङ्कारं मुखेन शीत्कारवाय्वप्रवेशेन गणयेद् बुध इति विरूपाचार्येण देशितम् ।

मुखेन घोलयेत् प्राज्ञो यावदद्वयतां व्रजेत् ।
अकाराक्षरहकारौ **विरूपाचार्येण** देशितम् ॥

नागबुद्धेः—

निर्माणपद्मस्थयोनिचक्रस्य कर्णिका ज्वलति धर्मचक्रगता भवेत्, संभोगस्थानाहतरेखया एकीभवतीति **नागबुद्धेः** ।

दिङ्नागस्य—

मुखेन निर्गमप्रवेशवायुना अकारहंकारौ तावद् घोलयेद् यावद-द्वयतां व्रजेत् । ततोऽधरदशने संस्थाप्य रसनया आक्रमेदिति **दिङ्नागः** ।

मातलेः—

मुखे रक्त अंकारो निर्गमेन च वायुना ।
उपायशुक्रहुंकारप्रवेशेन च घोलयेत् ॥

एकीभवनतो नित्यं काकतुण्डी प्रसिद्ध्यति ।
मुक्ताभं ज्ञानबिन्दुं नासाग्रे भावयेत् सुधीः ॥

कर्णे वासति शब्दांश्च **मातलिः** संप्रचक्षते ॥

मत्स्येन्द्रस्य—

नागसं(?)कायमुखाक्षिकर्णनासिका अपि वा वायुयन्त्रणादधिगपि-(कोऽपि) ज्वलते वीरो **मत्स्येन्द्रमतमीदृशम्** ।

उद्देशसमुच्चयः

प्रज्ञाशिरसि ओङ्कारमुपायशिरसि हूँद्वयमधोमुखम् । अन्तर्मध्ये च वज्रादिमुखे प्रज्ञास्थितवायुना हतो बिन्दुरुपायशिखाग्रं याति । उपायवायुना हतो बिन्दुः [प्रज्ञा]शिखाग्रं याति । ज्ञानबिन्दुः सुखरूपत्वेन चिन्तितः सन् ज्ञानदीपशिखाकार ओङ्कारवचोलिङ्गितः सुखमयत्वेन विभावितः सन् दाहानन्तरं शिखात् सुखमयभावनात् । तिलका ओङ्कारो वसन्तो हूँकारोऽधोमुख एकस्वभावः । न सुखमयचित्तात् । चक्रद्वये लाँ हूँ मा इत्याद्यक्षराणि ज्ञानबोधिचित्तद्रावकाणि । तदनु मु(सु)ख-भावनामात्रम् ।

यच्चक्राद्विनिवृत्य ज्ञानबिन्दुं मुखं परिवर्त्य पश्यति, धर्मचक्रस्थ-कान्तमालिङ्गति, ओङ्कारवज्रमुखेन वायुं प्रवेशयेत् सुखस्वभावत्वेन ।

अ(ओ)ङ्कारं निःसरन्तं वाय्वाकृष्टं हुँकारं प्रविशद्वाय्वारूढं घोलयेत् । अर्थयता निःस्वभावता यावत् । अधरदशनेऽधोदन्तपङ्क्तौ जिह्वामारोच(प)येत् । अद्वयतो निःस्वभावता । काकतुण्डीमुखेन वायु-निर्गमः । नरनासिकायां निर्गच्छेत् । अप्रविशेद्(शति) वायौ हं नासाग्रे प्रज्ञापद्मनासाग्रे घोलरन्ध्राग्रे च वासति शब्दं करोति सुखरूपं बिन्दुम् ।

मुखादिकं प्रथमादेव भावनया हस्तद्वयाङ्गुल्या पीडयेत्, भावना-प्रकर्षेण मन्त्रयेत् ॥

॥ इति नानासिद्धोपदेशः ॥



भट्टरत्नाकरकृतः

पञ्चाकारः

PAÑCĀKĀRA

OF

BHAṬṬARATNĀKARA

पञ्चाकारः

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥

नासागन्धटवर्गतोयलवणकण्ठावली शौष्वतः (?)
प्रावृड् रत्नकुलं च रागपिशुनो मौलाभिषेको रजः ।
रेखावेदनवेदनाचयचलच्चामीकराभश्चिरं
सूर्ये त्रांकृतिजो ददातु मणिभृद्यात्मतृयो(त्रितुर्या)धरम् ॥ ४ ॥

संज्ञाकल्लोलवंशो रसकुलिशरसो रागदम्भोलिसेकः
संज्ञास्कन्धाम्लजः कुसुमसमयस्तादिदन्ती हकारः ।
जिह्वावेक्षासरोजध्वजकमलकुलं तुर्यधामाऽप्रदोषं
रक्तो ह्रीःकारजन्यामितरुचिरवताद् ब्रध्नधामा समाधिम् ॥ ५ ॥

संस्कारस्कन्धकायः कटुहरितहयग्रीष्मसंस्कार ईर्ष्या
कृत्यानुष्ठानखड्गध्वजरजककुलक्रव्यकाञ्चीनिशीथः ।
स्पर्शाकारः पवर्गः ब(प)वनरयरणद्वज्रघण्टाभिषेकः
सूर्ये खँकारजन्मा भयमभयकरोऽमोघसिद्धिर्हरीतात् ॥ ६ ॥

सद्यः कर्पूर[शुभ्र]द्युतिरसविलसद्वज्रघण्टाभिरामः
सोपक्लेशप्रदेशप्रभवसुसमयः शेषणाति(?) कषायः ।
आप्रत्यूषोपधानीमतिशिशिरमिलद्भूतिषष्ठाभिषेको
वादः श्रीधर्मधातुः श्रियमभितनुतां हूंभवो वज्रसत्त्वः ॥ ७ ॥

लंकारबीजोद्भवचक्रचिह्ना पीयूषरोचिर्धरणीस्वभावा ।
चन्द्रानुमा मोहनमोहशुद्धा मैत्रीमयी तव हिताय च लोचनाऽस्तु ॥ ८ ॥

अब्धातुः करुणाधिष्ठा कृष्णा मांकारजातका ।
मामकी साधयेद् द्वेषकुलिशेनाशु चन्द्रमाः ॥ ९ ॥

चन्द्रस्था पद्मिनी रक्ता तेजोधातुस्वरूपिणी ।
मुदितासंभवा शुद्धराग[चिह्ना च] पाण्डरा ॥ १० ॥

श्यामा समीरशुद्धा शुद्धेर्ष्या नीलनीरजं दधती ।
हस्तपक्षा(पद्मा) च परमा तारा तांकारजा मारभञ्जनी ॥ ११ ॥

शशभृदि[वगुणाढ्या रविमण्डलिनी]हारसंभवा पीता ।
शुद्धं तु पिशुनभावं दिशतात् त्वयि वज्रिणी समणिः ॥ १२ ॥

तादात्म्येन च लोचनाप्रभृतयो बुद्धादिभिः पञ्चभि-
र्मुद्र्यन्ते निजमुद्रया पुनरमी द्वेषेण बुद्धादयः ।
द्वेषो वज्रधरेण शाश्वतभिदा तेनाप्यसौ वज्रधृक्
तेनेदं युगनद्धशुद्धमधुना तद्विद्धि विश्वं गुरोः ॥ १३ ॥

पञ्चाकारमिमं कृत्वा **भट्टरत्नाकरः** कृती ।
संलेभे यत्कृतं भूरि तेन लोकोऽस्तु वज्रधृक् ॥ १४ ॥

॥ इति भट्टरत्नाकरकृतः पञ्चाकारः समाप्तः ॥

•

पञ्चाकाराभिसम्बोधिः

PAÑCĀKĀRĀBHISAMBODHIḤ

पञ्चाकाराभिसम्बोधिः

नमो बुद्धाय

प्रणम्य पञ्चबुद्धान् योगिनीश्चापि भक्तितः ।
पञ्चाकारमहं वक्ष्य आत्मनः स्मरणाय च ॥

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् । ॐ योग-विशुद्धाः सर्वधर्मा योगविशुद्धोऽम् । ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्म-कोऽहम् ।

वज्रसत्त्वो भवेद्बिन्दुरर्धेन्दुर्वैरोचनो मतः ।
रेखा रत्नाधिपस्यै(श्चै)व हकारोऽमिताभ उच्यते ॥
ॐकारोऽमोघसिद्धिस्तु पञ्चबुद्धात्मकं जगत् ॥

पूर्वे वेरोचनः । शुक्लवर्णः, चक्रचिह्नः, रूपस्कन्धः, रत्नकुलः, महाचीनक्रमः, मानविशुद्धिः, आदर्शज्ञानवान्, वज्राभिषेकः सूर्यमण्डली, वरदमुद्रा, अस्य बीजं 'अं' ।

दक्षिणे रत्नसंभवः । पीतवर्णः, रत्नचिह्नः, वेदनास्कन्धः, रत्नकुलः, सूर्यमण्डली, समताज्ञानवान्, वरदमुद्राधरः, अस्य बीजं 'त्रां' ।

पश्चिमेऽमिताभः । रक्तवर्णः, पद्मचिह्नः, संज्ञास्कन्धः, उत्पत्ति-क्रमः, रागविशुद्धिः, प्रत्यवेक्षणाज्ञानम्, वज्राभिषेकः, सूर्यमण्डली, समाधिमुद्रान्वितः, अस्य बीजं 'ह्रीं' ।

उत्तरेऽमोघसिद्धिः । हरितवर्णः, खड्गचिह्नः, संस्थाकारस्कन्धः, कर्मकुलः, विश्ववज्रक्रमः, ईर्ष्याविशुद्धिः, [कृत्या]नुष्ठानज्ञानम्, घण्टाभिषेकः, सूर्यमण्डली, अभयमुद्रान्वितः, अस्य बीजं 'खं' ।

मध्येऽक्षोभ्यः । कृष्णवर्णः, विज्ञानस्कन्धः, चक्रसत्त्वक्रमः, द्वेष-विशुद्धः, सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानम्, उदकाभिषेकः, सूर्यमण्डली, भूस्पर्श-मुद्रान्वितः, अस्य बीजं 'हूँ' ।

योगिनीनां वर्णचिह्नानि कथ्यन्ते—

अग्निदिशि लोचना । शुक्लवर्णा, पृथ्वीधातुस्वरूपिणी, मोहविशुद्धा, तथागतकुलोद्भवा, मैत्रीविहारिणी, वामे चक्रधरा, दक्षिणे वरदा, चन्द्रमण्डलिनी, अस्या बीजं 'लां' । ॐ ....ज्वल तिष्ठ सिद्ध मारण(णि) सर्वार्थसाधनि मम शान्तिं कुरु स्वाहा ।

नैर्ऋत्ये मामकी देवी । कृष्णवर्णा, अब्धातुस्वरूपिणी, द्वेषविशुद्धा, वज्रकुलोद्भवा, करुणाविहारिणी, वामे वज्रधरा, दक्षिणे वरदा, चन्द्रमण्डलिनी, अस्या बीजं 'मां' । ॐ संस्कारशान्तिकरे घुट घुट घुटिनी घोटय-घोटय घुटिनी................ स्वाहा ।

वायव्ये पाण्डरा । रक्तवर्णा, तेजोधातुस्वरूपिणी, वाचा विशुद्धा, अमिताभकुलोद्भवा, [मुदिताविहारिणी,] वामे पद्मचिह्ना, दक्षिणे वरदा, चन्द्रमण्डलिनी, अस्याः बीजं ' पां' । ॐ कट विकट निकट कष्टं कर कपाट स्वाहा ।

ऐशान्यां तारणी । श्यामवर्णा, वायुधातुस्वरूपिणी, ईर्ष्याविशुद्धा, अमोघसिद्धिकुलोद्भवा, उपेक्षाविहारिणी, वामे उत्पलधरा, दक्षिणे वरदा, चन्द्रमण्डलिनी, अस्याः बीजं 'तां' । ॐ तारे तुत्तारे [तुरे] स्वाहा ।

मध्ये वज्रधात्वीश्वरी। गगनवर्णा, गगनस्वभावा, रत्नसंभवकुलो-द्भवा, सूर्यमण्डलिनी, वामे पद्मधरा, धर्मधातुचिह्नपञ्चसूचिकवज्रधरा, दक्षिणे वरदा, अस्याः बीजं 'धां' । ॐ प्रज्ञे महाप्रज्ञे श्रुतिस्मृति[विजये धीः] स्वाहा ।

विड् वैरोचनः, मूत्रे अक्षोभ्यः, रक्ते रत्नसंभवः, शुक्रे अमिताभः, मांसे अमोघसिद्धिः ।

रूपशब्दगन्धरसस्पर्शधातुषु—[रूपे वैरोचनः, शब्देऽक्षोभ्यः], गन्धे रत्नसंभवः, रसेऽमिताभः, कायेऽमोघसिद्धिः, धर्मधातुर्वज्रसत्त्वः ।

चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकायमनःस्विति—चक्षुषोर्वैरोचनः, श्रोत्रयोरक्षोभ्यः, घ्राणे रत्नसंभवः, जिह्वायाममिताभः, कायेऽमोघसिद्धिः, मनसि वज्रसत्त्वः ।

चक्षुर्विज्ञाने रूपवज्रा, श्रोत्रविज्ञाने शब्दवज्रा, घ्राणविज्ञाने गन्धवज्रा, जिह्वाविज्ञाने रसवज्रा, कायविज्ञाने स्पर्शवज्रा, मनोविज्ञाने धर्मधातुवज्रा ।

अङ्गन्यासस्तु कथ्यते— ॐ कारे चक्षुः, हूँकारे श्रोत्रम्, डाँकारे घ्राणः, ह्रींकारे जिह्वा, खंकारे कायः, वंकारे शिरः । चक्षुर्भ्यां क्षितिगर्भः, श्रोत्रयोर्वज्रपाणिः, घ्राणयोः खगर्भः, जिह्वायां लोकेश्वरः, काये सर्वनीवरणविष्कम्भी, मनसि समन्तभद्रः ।

पूर्वे यमान्तकः । कृष्णवर्णः महिषारूढः, वज्राङ्कुशगृहीतहस्तः, वज्रडाकिनीसमापन्नः, सूर्यमण्डली, अस्य बीजं 'हूँ' ।

दक्षिणे प्रज्ञान्तकः । सितवर्णः, सिंहारूढः, वज्रपाशगृहीतहस्तः, वज्रनखीसमापन्नः, सूर्यमण्डली, अस्य बीजं 'हूँ' ।

पश्चिमे पद्मान्तकः । रक्तवर्णः, व्याघ्रारूढः, वज्रघण्टागृहीतहस्तः, अपराजितासमापन्नः, सूर्यमण्डली, अस्य बीजं 'हूँ' ।

चतुस्तथागतविशुद्धाश्चत्वारः क्रोधाः ।

इदानीं धात्वायतनानि कथ्यन्ते—पृथिवी कठिना, रूढत्वधारणं कर्म, अस्थि-अन्त्र-नहरु-दन्त-त्वच-केश-रोम-नखा इत्यादि पृथ्वीधातुः ।

अब्धातुः, द्रव [रूपं] .... संग्रहकर्म, तडागोदकम्, नद्युदकम्, श्लेष्मोदकम्, सिंघाणोदकम्, अक्षिजलम्, मूत्रजलमित्यादि ।

तेजोधातुः । नाभ्युष्णम्, हृदयोष्णम्, सर्वाङ्गोष्णम्, संशोषणम्, उष्णत्वम्, कर्मशोषणत्वम्, परिपाचनत्वम्, लघुत्वमिति तेजोधातुः ।

आकुञ्चनम्, प्रसारणम्, गमनागमनम्, निःश्वासः, उच्छ्वासः, उद्वाहः, प्रवाहः, निर्वाहः, संवाहः, कूर्मः, कृकरः, नरदत्तः, धनञ्जय इत्यादि वायुधातुः ।

शून्यव्यापकं कथं ग्राह्यग्राहकादीनामाकाशधातुः, एते योगिनां च तथागतानाम् । रसायनं कथ्यते—तिक्ते अक्षोभ्यः, मधुरे वैरोचनः, लवणे रत्नसंभवः, अम्लेऽमिताभः, कटुके अमोघसिद्धिः, कषाये वज्रसत्त्वः ।

कवर्गे वैरोचनः, चवर्गे अक्षोभ्यः, टवर्गे रत्नसंभवः, तवर्गे अमिताभः, पवर्गे अमोघसिद्धिः, यवर्गे वज्रसत्त्वः । इमानि व्यञ्जनानि भवन्ति ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः देवीनां बीजानीमे स्वरा भवन्ति । अकारादि प्रज्ञा ।

वैरोचनोऽक्षोभ्येण मुद्रयेत्, अक्षोभ्यो वज्रसत्त्वेन मुद्रयेत् । वज्रसत्त्वः केन मुद्र्यते, पितापुत्रन्यायेनाक्षोभ्यो न मुद्र्यते, अपरतथागतानामक्षोभ्य एव नायकः ।

दिनभेदस्तु कथ्यते—प्रत्यूषे वैरोचनः, मध्याह्ने अक्षोभ्यः, प्रहरत्रये रत्नसंभवः, अपराह्णेऽमिताभः, अर्द्धरात्रौ अमोघसिद्धिः, तृतीयप्रहरादि प्रत्यूषं यावद् वज्रसत्त्वः । दिवा वज्रसत्त्वः, निशि प्रज्ञा ।

शरद्यक्षोभ्यः, हेमन्ते वैरोचनः, प्रावृषि रत्नसंभवः, वसन्तेऽमिताभः, ग्रीष्मेऽमोघसिद्धिः, शिशिरे वज्रसत्त्वः । धर्मे धाता वज्रसत्त्वः, ज्ञाने वज्रसत्त्वः, चित्ते वज्रसत्त्वः, सर्वत्रैलोक्यामेकार्थवज्रसत्त्वः प्रशस्यते ।

पञ्चाकारात्मकं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
यद्यपि बाह्यनिर्विकल्पमयं दृश्यते जगत् ॥
पञ्चस्कन्धस्वभावेन पञ्चबुद्धाः प्रकीर्तिताः ।
पञ्चावरणनिर्मुक्ताः स्कन्धगाः पञ्चकौलिकाः ॥

कानि पञ्चावरणानि ज्ञेयानि ?

क्लेशो जन्म च कर्मेति ज्ञानाज्ञानं(ने) तथैव च ।
पञ्चावरणानि चैतानि कथितानि तथागतैः ॥

एवं विमृष्यमाणो हि भावयेत् सततं सुधीः ।
प्राप्नोति चाग्रजां बोधिं सम्यक्संबुद्धभाषितम् ॥

॥ इति पञ्चाकाराभिसंबोधिः समाप्तः ॥

•

दिङ्नागपादानाम्

योगावतारः

YOGĀVATĀRA

OF

DIṄNĀGAPĀDA

योगावतारः

नमस्तारायै

श्रुत्वा शास्त्रमुदारं निश्चित्य पारमार्थिकं तत्त्वम् ।
मृद्वासनोपविष्टः सश्रद्धो योगमारभेद् [योगी] ॥ १ ॥

ग्राह्यग्राहकमुभयं नोभयमहमेव निर्वृतिर्मग्न इति ।
बहुविधविकल्पजालं प्रविज्ञाय मनःसमापत्तिः ॥ २ ॥

ज्ञेयं विलोक्य सकलं मा योगमेव निर्भासम् ।
प्रविवाच्ये देहे यत् तत्तथताज्ञानवज्रेण ॥ ३ ॥

सर्वाकारविवर्जितमाद्यन्तविभागरहितमविकल्पम् ।
निमर्लसहस्रदीधितिनिर्भिन्नमेति सर्वं गगनमिव ॥ ४ ॥

स्वाकारमात्रशेषं पश्यति चित्तं स्वमाद्यनुत्पन्नम् ।
येनापि पश्यतीदं तदपि तथैवावलोकयति ॥ ५ ॥

सोऽनुपलम्भोऽचित्तं तथताज्ञानं तत्कोटिश्च ।
एवं तमसोऽभ्यासात् प्रज्ञावेदितनिरोधमाप्नोति ॥ ६ ॥

ताभिर्युक्तो योगी सत्त्वार्थमनेकधा कुरुते ।
अस्मिन् परिनिष्पन्ने तिष्ठति योगी सदार्यमध्वानम् ॥ ७ ॥

.......दनघवायौ निष्कम्प्यं क्लेशमाराद्यैः ।
प्रज्ञापारमितां वास्मिन् सर्वदा प्रवृत्तस्य ॥ ८ ॥

सिद्ध्यन्त्यन्ये बहवः समाधियोगदानरागाद्याः ॥ ९ ॥

॥ योगावतारः समाप्तः ॥

॥ कृतिरियमार्यदिङ्नागपादानामिति ॥

●

རྣལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་པ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། ཡོག[1]ཁབ་ཏཱ་ར། བོད་སྐད་དུ།
རྣལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་པ། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་
ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

བསྟན་བཅོས་རྒྱ་ཆེན་པོ་ནི་ཐོས་ནས་ཀྱང་། །
དོན་དམ་དེ་བཞིན་ཉིད་ནི་ངེས་བྱས་ལ། །
དད་ལྡན་དེ་ནི་འཇམ་པའི་སྟན་གནས་ཏེ། །
བློ་དང་ལྡན་པས་རྣལ་འབྱོར་བརྩོན་པར་བྱ། ༡ །

གཟུང་དང་འཛིན་དང་གཉི་ག[2]ཉིས་མིན་དང་། །
བདག་དང་གཞན་དང་མྱ་ངན་འདས་པ་དང་། །
འཁོར་བ་ཞེས་བྱའི་རྣམ་རྟོག་མང་པོ་ནི། །
རྟག་ཏུ་སྤངས་ལ་ཡིད་ནི་མཉམ་པར་གཞག ༢ །

སྒྱུ་མ་དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་ལྷ་བུ[3]ནི། །
ཤེས་བྱ་མ་ལུས་རྣམ་པར་བལྟས་ནས་སུ། །

---

1 གསེར། ཡོགཱ

2 གསེར། གཉིས་ཀ

3 གསེར། ལྷ་བུར།

དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཡིས། །
ལུས་ཀྱི་འཁྲུལ་འཁོར་རབ་ཏུ་གཞིག་པར་བྱ། ༣ །

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནི་རབ་མཛེས་ལ། །
ཐོག་དང་ཐ་མའི་ཆ་བྲལ་རྣམ་མི་རྟོག །
དྲི་མ་མེད་པའི་འོད་ཟེར་སྟོང་གིས་ནི། །
མུན་པ་ངེས་བསལ་མཁའ་དང་མཚུངས་པ་ཡིན།༤ །

རང་གི་སྣང་བ་ཙམ་གྱི་ངོ་བོ་སྟེ། །
གཟོད་ནས་སྐྱེ་བ་མེད་པའི་རང་སེམས་མཐོང་། །
གང་གིས་ཀྱང་ནི་དེ་མཐོང་གྱུར་པ་དག །
དེ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ནི་བལྟ་བར་བྱ། ༥ །

དམིགས་པ་མེད་དང་བཅས་པའི་སེམས་ཉིད་ནི། །
དེ་བཞིན་ཉིད་དང་ཡང་དག་མཐའ་རུ་བཤད། །
དེ་ལྟར་རིམ་གྱིས་བསྒོམས་པར་གྱུར་པ་ལས། །
མིང་དུ་ཞེས་[1]པ་འགོག་པ་འཐོབ་པར་འགྱུར། ༦ །

---

1 གསེར། ཐོས།

དེ་ལ་ཡང་དག་རིག་པར་སྦྱར་[1]བ་ལས། ।
འབད་[2]པ་མེད་པར་མངོན་ཤེས་ལྔ་རུ་འགྱུར། ।
དེ་དང་མངོན་པར་ལྡན་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ།[3] ।
འགྲོ་བའི་དོན་ནི་དཔག་ཏུ་མེད་པར་བྱེད། ༧ ।

འདི་ནི་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ། ।
ཤིན་ཏུ་ཡུན་རིང་དུས་སུ་གནས་པར་འགྱུར། ।
ལུས་ནི་རྡོ་རྗེ་ལྟ་བུར་མི་ཤིགས་ཤིང་། ।
ཉོན་མོངས་བདུད་ལ་སོགས་པས་གཡོ་མི་འགྱུར།༨ ।

ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་ཡི། ।
རྣལ་འབྱོར་འདི་དག་རྟག་ཏུ་རབ་ལྡན་པ། ।
ནམ་མཁའ་མཛོད་ལ་སོགས་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན། ।
མང་པོ་རྣམས་ནི་ཡང་དག་རྫོགས་པར་འགྱུར།༩ ।

བདག་གི་རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་འཇུག་པ་ཙམ། ।
ཡང་དག་སྦྱར་བས་དགེ་བ་གང་བསགས་པ། ।

---

1 གསེར། སྦྱོར།
2 ཅོ། འབོད།
3 གསེར། པས།

དེར་[1]ནི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་རབ་མྱུར་བ། |
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཐོབ་པར་ཤོག ༡༠ |

རྣལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་པ་ཞེས་བྱ་བ། སློབ་དཔོན་ཕྱོགས་ཀྱི་གླང་པོའི་ཞལ་སྔ་ནས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། ||

1 གསེར། ངེས།

आर्यदेवपादानाम्

स्वाधिष्ठानप्रभेदः

SVĀDHIṢṬHĀNAPRABHEDA

OF

ĀRYADEVAPĀDA

स्वाधिष्ठानप्रभेदः

ज्ञानमूर्तिं नमस्कृत्य सर्वदृष्टिविदारकम् ।
स्वाधिष्ठानप्रभेदोऽयं वक्ष्यते कृपया मया ॥ १ ॥

अस्तीति कल्पना यावत् तावच्छाश्वतकल्पना ।
शाश्वताभिनिवेशोऽयं नेदं मायास्वलक्षणम् ॥ २ ॥

नास्तीति कल्पना यावत् तावदुच्छेदकल्पना ।
उच्छेदाभिनिवेशोऽयं नेदं मायास्वलक्षणम् ॥ ३ ॥

अस्तिनास्तित्वनिर्मुक्ता मध्यमा या तु कल्पना ।
मध्यमाभिनिवेशोऽयं नेदं मायास्वलक्षणम् ॥ ४ ॥

यत् सत्यं संवृतिः प्रोक्तं बुद्धानां कायलक्षणम् ।
सेयं माया समुद्दिष्टा स्वाधिष्ठानमिहोच्यते ॥ ५ ॥

येन व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
यो नाप्यतेऽल्पपुण्यैस्तु व्याकृते(तै)रेव लभ्यते ॥ ६ ॥

नात्र शौचं न नियमो न तपो न च दुष्करम् ।
अदुष्करैरनियमैः सुखैर्हसै(र्षैं)श्च सिद्ध्यति ॥ ७ ॥

एवं विज्ञाय तत्त्वज्ञो यं स्मरेच्च मुहुर्मुहुः ।
सिद्ध्यते तस्य बुद्धत्वं सर्वं मायाविकुर्वितैः ॥ ८ ॥

मायास्थं च सदा देवाः पालयन्तीह योगिनः ।
सर्वज्ञेयं भवत्येव मायोपमसमाधिना ॥ ९ ॥

वज्रायुधं महावीर्यं सर्वमारोग्यसत्सुखम् ।
बुद्धऋद्धिं च संप्राप्य यात्युत्पतति स्वेच्छया ॥ १० ॥

वशमायान्ति सत्त्वाश्च दर्शनेनैव चोदिताः ।
लभते वाञ्छितं सर्वं मायोपसमाधिना ॥ ११ ॥

स्वप्नमायोपमान् धर्मान् बौद्धाः सर्वे वदन्त्यपि ।
सत्यं ते न प्रजानन्ति स्वाधिष्ठानबहिर्मुखाः ॥ १२ ॥

[विज्ञान]वायुसंयुक्तं छायाकार(रं) मनोमयम् ।
स्वज्ञानं ते न पश्यन्ति [माया]दृष्टान्तमोहिताः ॥ १३ ॥

अनन्तेष्वपि कल्पेषु श्रुतिपारङ्गतैरपि ।
गुरुवक्त्राद् विना माया साक्षात्कर्तुं न शक्यते ॥ १४ ॥

तस्मान्मानं परित्यज्य बुद्धत्वफलकाङ्क्षया ।
वज्रयानं समारुह्य यत्नेनाराधयेद् गुरुम् ॥ १५ ॥

इदानीं च प्रवक्ष्यामि क्रमभेदं सुदुर्लभम् ।
यं ज्ञात्वा विचरेद् योगी सर्वबुद्धमयो भवेत् ॥ १६ ॥

पृथिव्यादीनि चत्वारि तथा शून्यचतुष्टयम् ।
[अष्टाकाराणि पीठानि] विनाशोत्पत्तिहेतवः ॥ १७ ॥

[1]प्रभास्वरान्महाशून्यं तस्माच्चोपायसंभवः ।
तस्मादुत्पद्यते प्रज्ञा तस्याः पवनसंभवः ॥ १८ ॥

पवनादग्निसंभूतिरग्ने[श्च] जलसंभवः ।
जलाच्च जायते पृथ्वी सत्त्वानामेष संभवः ॥ १९ ॥

भूधातुर्लीयते तोये तोयस्तेजसि लीयते ।
तेजश्च सूक्ष्मधातौ च वायुश्चिते विलीयते ॥ २० ॥

चित्तश्चैतसिके लीये[ता]विद्यायां तु चे(चै)तसम् ।
सोऽ(सा)पि प्रभास्वरं गन्छेन्निरोधोऽयं भवत्रये ॥ २१ ॥

अनादिकालिकं ह्येवं भवचक्रं प्रवर्तते ।
यावन्न पश्यत्यात्मानं मायोपसमाधिना ॥ २२ ॥

स्वसंवेद्यो(द्या)हि सा माया तार्किकाणामगोचरा ।
निजदेहस्थितौ चापि मन्दपुण्यो(ण्यैः) न लभ्यते ॥ २३ ॥

ज्ञायते परमेकेन स्वदेहे साऽविकारिणी ।
गुरुपादप्रसादेन दृष्टान्तैरुपलक्षिता ॥ २४ ॥

निधयो मणयश्चापि पृथिव्यामुदकं यथा ।
विद्यमाना न दृश्यन्ते तथा देहेषु सर्ववित् ॥ २५ ॥

मायामरीचिर्गन्धर्वनगरः शक्रकार्मुकम् ।
दर्पणः(ण)प्रतिबिम्बश्चोदकचन्द्र[ः] प्रतिध्वनिः ॥ २६ ॥

---

१ यहाँ से चार श्लोक (१८.२१) सेकोद्देशटीका (पृ० ५१-५२) में आर्यदेवपाद और आर्यपाद के नाम से उद्धृत हैं ।

स्वप्नमायाभ्रपटलं विद्युद्बुद्बुदसंज्ञिता ।
माया द्वादशदृष्टान्तैर्विस्तरा चैकलक्षणा ॥ २७ ॥

आसां विस्पष्टतारूपं यद्देवतालम्बनं प्रति ।
मायात्रयं समुद्दिष्टं यत्नतस्तत्प्रकीर्त्यते ॥ २८ ॥

दर्पणप्रतिबिम्बं च शक्रचापमथापरम् ।
तृतीयं जलचन्द्रं च मूर्तिमेतैर्विभावयेद् ॥ २९ ॥

सूत(त्र)के यत्समुद्दिष्टं पञ्च बुद्धकुलं महत् ।
तत्तत्कुलसमुद्भूता देवताश्च पृथग्विधाः ॥ ३० ॥

दूतदूत्यस्तथा क्रोधाश्चेटचेट्यश्च किङ्कराः ।
न ते सन्ति न भाः(ताः) सन्ति सत्त्वार्थं प्रतिदर्शिताः ॥ ३१ ॥

एतत्सर्वं हरेद् योग(गी) संहरेदपि चात्मना ।
मायोपमसमाधिस्थो मण्डलाद्यपि विस्तरम् ॥ ३२ ॥

वर्णान् नानाविधांश्चापि स्वाधिष्ठानेन योजयेत् ।
शोकं भयं विरागं च सन्त्रासं स्खलितं तथा ॥ ३३ ॥

दुष्टं च दौर्मनस्यं च दुर्दृष्टं दुष्कृतं तथा ।
दुर्गन्धं दूरसं चापि दुःस्पर्शं चैव यद् भवेत् ।
तास्ता विरूपाः प्रकृतां(तीः) स्वाधिष्ठानेन शोधयेत् ॥ ३४ ॥

विण्मूत्रादिप्रवृत्तिश्च ज्वराद्या व्याधयश्च ये ।
स्वाभाविका जराद्याश्च तेषां माया चिकित्सितम् ॥ ३५ ॥

येन धर्मेण बालानां संसारो भुवि वर्धते ।
[२]योगिनस्तेन धर्मेण संसारो न विवर्धते ॥ ३६ ॥

सुखाः कामगुणाः पञ्च बालानां बन्धने मताः ।
योगिनस्तेन धर्मेण बुद्धत्वं साधयेत् पुनः ॥ ३७ ॥

रागो हर्षस्तथा प्रीतिर्मैत्री च करुणा तथा ।
उपेक्षा मुदिता चैव बलमुत्साह एव च ॥ ३८ ॥

शौर्यं वीर्यं तथा रौद्रं हठत्वं साहसं तथा ।
स्वरूपाः प्रकृतीश्चान्याः स्वाधिष्ठानेन संच(ह)रेत् ॥ ३९ ॥

एकमुद्रासमायुक्तश्चतुर्मुद्रायुतोऽथवा ।
अन्तःपुरगतो वापि स्वाधिष्ठानमनुस्मरेत् ॥ ४० ॥

रूपं शब्दं तथा गन्धं रसं स्पर्शं च शोभनम् ।
अनुभूयात् सदा योगी महासुखपदे स्थितः ॥ ४१ ॥

ततं चैवावनद्धं च घण्टं शुषिरमेव च ।
वाद्यं चतुर्विधं योगी स्वाधिष्ठानेन निर्विशेत् ॥ ४२ ॥

शृङ्गारादीन् रसान् सर्वान् नवनाटकसंज्ञकान् ।
अनुभूयात् सदा योगी मायोपमसमाधिना ॥ ४३ ॥

योगतन्त्रे समुद्दिष्टाश्छोमाद्या ये च विस्तराः ।
तांश्च प्रवर्तयेद् योगी माययाऽनुपलम्भतः ॥ ४४ ॥

उन्मिषन् निमिषन् वापि हसन् जल्पंस्तथैव च ।
गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन् भुञ्जन् मायादेहमनुस्मरेत् ॥ ४५ ॥

---

२ "योगिनः.... कर्म शुभानि यद्वत्" (श्लो० ३६-५५) ये सभी श्लोक गुह्यादि-अष्टसिद्धिसंग्रह में प्रकाशित अन्तिम सिद्धि (पृ० २१२-२१३) में मुद्रित हैं ।

जगत्यन्याश्च याः क्रीडा नानासङ्कल्पकल्पिताः ।
विचरेत् ताश्च तत्त्वज्ञो महारागनये स्थितः ॥ ४६ ॥

स्वाधिष्ठानमिदं प्राप्य सर्वदृष्टिविदारणम् ।
सर्वं कुर्यान्न कुर्याद् वा यथारुचितचेष्टितः ॥ ४७ ॥

चैत्यकर्म न कुर्वीत न च पुस्तकवाचनम् ।
करोतु वाचयेच्चापि स्वाधिष्ठानक्रमेण तु ॥ ४८ ॥

देवान् न वन्दयेदेवं भिक्षूंश्चापि न वन्दयेत् ।
अथवा वन्दयेत् सर्वान् स्वाधिष्ठानक्रमेण च ॥ ४९ ॥

मन्त्रन्यासं न कुर्वीत मुद्राबन्धं तथैव च ।
मन्त्रजापं न कुर्याद्वा कुर्याच्च प्रतिबिम्बवत् ॥ ५० ॥

मदीयं दृश्यते चित्तं बाह्यमर्थं न विद्यते ।
एवं वै भावयेन्मायां तथतामप्यनुस्मरेत् ॥ ५१ ॥

अनन्तध्यानविधिना मन्त्रमूर्तिसमाधिना ।
यदि माया न लब्धा स्यात् सर्वभूमिफलाय वै ॥ ५२ ॥

देहभोगप्रतिष्ठा च भूमिपारमितादयः ।
बुद्धऋद्धिविकुर्वादि सर्वं मायाविचेष्टितम् ॥ ५३ ॥

आदर्शबिम्बे सकलं स(सु)युक्तं रूपं यथा स्वच्छतरं विभाति ।
अशीत्यनुव्यञ्जनलक्षणाढ्यो देहस्तथा वज्रधरः सदैव ॥ ५४ ॥

[२]इन्द्रायुधं वियति दृष्टमनेकवर्णं
लोकस्य दर्शयति कर्मशुभानि यद्वत् ।

---

२ अमृतकणिकाकारस्य नामसंगीतिटिप्पण्याधारेण पूरितोऽत्र पाठः ।

एवं च वज्रधृगवाप्य सितादिवर्णं
[सम्पा]दयत्यविकलं खलु [कर्म] तद्वत् ॥५५॥

यद्धेमरूप्यमणिशङ्खशिलाप्रवाल-
वैडूर्यताम्ररजतादिषु संस्थितश्च ।
तत्रैव(क) एव हि शशी गगनोदरान्ता-
द्या(दा)वर्तमानवपुषा प्रतिभाति यद्वत् ॥५६॥

एवं स नाथः खलु चित्तवज्रो नानाविधस्तिष्ठति जन्तुवर्गे ।
स चाप्ययं स्वात्मनि विश्वरूपो मायामयो व्याप्तसमस्तलोकः॥५७।

रूपादिपञ्चकमथायतनानि यानि
अष्टादशेति चोदिताः खलु धातवश्च ।
ज्ञानानि पञ्च विषयाश्च जगत्समस्तं
मायामयः स इह वज्रधरोऽपि नान्यत् ॥५८॥

यं पर्वता अष्टमहासमुद्रा द्वीपाश्च सर्वे नरकादिभेदाः ।
यत् स्थावरं जङ्गममेव दृष्टं तत्तत् स्वयं सर्वविदेव नान्यत् ॥५९।

एवं स्वचित्तमयमेव जगत्समस्तं
विज्ञाय मोक्षभवकल्पनया विमुक्ताः ।
ये न भ्रमन्ति भवकल्पमहार्णवेषु
तेभ्यो नमोऽस्त्वखिलसंस्कृतपारगेभ्यः ॥६०॥

॥ स्वाधिष्ठानप्रभेदः समाप्तः ॥

॥ कृतिरियमार्यदेवपादानाम् ॥

•

བདག་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། སྭཱདྷིཥྛཱནཀྲམཔྲབྷེདཾ།[1] བོད་སྐད་དུ། བདག་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་པ་རྣམ་པར་དབྱེ་བ། དཔལ་རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་རབ་བཅོམ་པའི། |
ཡེ་ཤེས་སྐུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། |
བདག་བྱིན་བརླབ་པའི་རྣམ་དབྱེ་འདི། |
བརྩེ་བས་བདག་གིས་བཤད་པར་བྱ། ༡ |

ཡོད་ཅེས་རྟོག་པ་ཇི་སྙེད་པ། |
དེ་སྙེད་རྟག་པའི་ལྟ་བ་སྟེ། |
རྟག་པར་མངོན་པར་ཞེན་པས་ན། |
འདི་ནི་སྒྱུ་མའི་མཚན་ཉིད་མིན། ༢ |

མེད་ཅེས་རྟོག་པ་ཇི་སྙེད་པ། |
དེ་སྙེད་ཆད་པའི་ལྟ་བ་སྟེ། |

---

[1] གསེར། སྭཱཨདྷིཥྛཱནཀྲམཔྲབྷེདཾ

ཆད་པར་མཐོང་བར་ཞེན་པས་ན།
འདི་ཡང་སྨྲ་མའི་མཚན་ཉིད་མིན། ༣

ཡོད་ཅེས་པ་དང་མེད་ཅེས་པའི།
དེ་དབུས་སུ་གང་རྟོག་པ་ནི།
དབུས་སུ་མཐོང་བར་ཞེན་པས་ན།
འདི་ཡང་སྨྲ་མའི་མཚན་ཉིད་མིན། ༤

ཀུན་རྫོབ་བདེན་པར་གང་གསུངས་པའི།
སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་སྐུ་མཚན་ཉིད།
དེ་འདིར་སྨྲ་མར་བསྟན་པ་སྟེ།
བདག་ཕྱིན་བརླབ་པ་ཞེས་བརྗོད་དོ། ༥

རྒྱུ་དང་མི་རྒྱུའི་འཇིག་རྟེན་གསུམ།
གང་ཞིག་གིས་ནི་ཐམས་ཅད་ཁྱབ།
བསོད་ནམས་དམན་པས་མི་རྙེད་དེ།
ལུང་བསྟན་ཉིད་ཀྱིས་རྙེད་པར་འགྱུར། ༦

གཙང་སྦྲ་སྡོམ་པ་འདིར་མི་དགོས།
དཀའ་ཐུབ་དཀའ་སྤྱད[1]མི་དགོས་ཏེ།

---

1 གསེར། སྤྱོད།

དཀའ་ཐུབ་སྡོམ་པ་མེད་པར་ཡང་།
དགའ་དང་བདེ་བས་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༧

གང་ཞིག་དེ་ལྟར་ཤེས་ནས་ནི།
དེ་ཉིད་གང་ཞིག་རྟག་དྲན་ན།
ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མའི་རྣམ་འཕྲུལ་གྱིས།
དེ་ཡིས་སངས་རྒྱས་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༨

སྒྱུ་མས་གནས་པའི་རྣལ་འབྱོར་པ།
འདི་ལ་ལྷས་ཀྱང་རྟག་ཏུ་སྐྱོང་།
སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གྱིས།
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དེ་ནས་འགྱུར། ༩

རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་སྟོབས་པོ་ཆེ།
ལང་ཚོ་ནད་མེད་བདེ་བའི་མཆོག
སངས་རྒྱས་རྫུ་འཕྲུལ་ཐོབ་ནས་ནི།
སྐྱེ་བ་འབྱུང་བ་རང་དགས་སོ། ༡༠

མཐོང་བ་ཉིད་ཀྱིས་བསྐུལ་མེད་པར།
སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་དབང་དུ་འོང་།

སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གྱིས། །
འདོད་དོན་ཐམས་ཅད་རྙེད་པར་འགྱུར། ༡༡ །

ཆོས་ཀུན་རྨི་ལམ་སྒྱུ་འདྲ་སྟེ། །
སངས་རྒྱས་པ་ཀུན་སླ་མོད་ཀྱི། །
བདག་བྱིན་བརླབ་ལས་ཕྱིར་བལྟས་པས། །
དེས་ནི་།བདེན་པ་མཐོང་མི་ནུས། ༡༢ །

གཞུ་ཡི་རྣམ་པའི་ཡིད་རང་བཞིན། །
རྣམ་ཤེས་ལྷུང་དང་ཡང་དག་ལྡན། །
སྒྱུ་མའི་དཔེ་ལ་རྨོངས་པས་ནི། །
རང་གི་ཡེ་ཤེས་དེས་མི་མཐོང་། ༡༣ །

བསྐལ་པ་བྱེ་བ་མཐའ་ཡས་པར། །
ཐོས་པའི་ཕ་རོལ་སོན་གྱུར་ཀྱང་། །
བླ་མའི་ལུང་དང་བྲལ་བ་ཡིས། །
བདག་བྱིན་བརླབ་པ་རྙེད་མི་འགྱུར། ༡༤ །

1 གསེར། ན།

དེ་བས་ང་རྒྱལ་ཡོངས་སྤངས་ནས།
སངས་རྒྱས་འབྲས་བུ་འདོད་པ་ཡི།
རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ཞེན་པ་ཡིས།
བླ་མ་བསྒྲིམས་དེ་མཉེས་པར་བྱ། ༡༥

ཤིན་ཏུ་རྟེད་དཀའི་རིམ་དབྱེ་བས།
འདི་ནི་རབ་ཏུ་བཤད་པར་བྱ།
གང་ཞིག་ཤེས་ནས་རྣམ་སྤྱོད་པ།
སྒྲུབ་པོ་སངས་རྒྱས་ཀུན་དངོས་འགྱུར། ༡༦

ས་ལ་སོགས་པ་རྣམ་བཞི་དང་།
དེ་བཞིན་དུ་ནི་སྟོང་པ་བཞི།
གནས་ནི་རྣམ་པ་བརྒྱད་པོ་དང་།
སྐྱེ་དང་འཇིག་པའི་རྒྱུར་ཤེས་བྱ། ༡༧

འོད་གསལ་ལས་ནི་སྟོང་ཆེན་དེ།
དེ་ལ་[2]ཐབས་ནི་ཡང་དག་འབྱུང་།

---

1 གསེར། ཡིས།

2 གསེར། ལས།

དེ་ལས་སྐྱེས་པ་ཤེས་རབ་དེ།
དེ་ལས་སྣང་ནི་འབྱུང་བར་འགྱུར། ༢༨

སྣང་ལས་མེ་ནི་ཡང་དག་སྐྱེས།
མེ་ལས་ཆུ་ནི་འབྱུང་བར་འགྱུར།
ཆུ་ལས་སྐྱེས་པ་ས་ཡིན་ཏེ།
དེ་རྣམས་ལ་ནི་སེམས་ཅན་འབྱུང་། ༢༩

ས་ནི་ཆུ་ལ་ཐིམ་འགྱུར་ཏེ།
ཆུ་ནི་མེ་ལ་ཐིམ་པར་འགྱུར།
མེ་ནི་ཕྲ་བའི་ཁམས་སུ་ཞུགས།
སྣང་ཡང་སེམས་ལ་ཐིམ་འགྱུར་ཏེ། ༣༠

སེམས་ནི་སེམས་ལས་བྱུང་ལས་འགྱུར།
སེམས་བྱུང་མ་རིག་པར་ཞུགས་ནས།
དེ་ཡང་འོད་གསལ་བར་སོང་སྟེ།
སྲིད་པ་གསུམ་པོ་འགག་པར་འགྱུར། ༣༡

སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གྱིས།
ཇི་སྲིད་བདག་ཉིད་མ་མཐོང་བ།

1 གསེར། སྒྲ།

དེ་སྲིད་ཐོག་མའི་དུས་ཅན་གྱི།
སྲིད་པའི་འཁོར་ལོར་འཇུག་པར་འགྱུར། ༣༣

རང་རིག་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་སྟེ།
རྟོག་གེ་པ་ཡི་ཡུལ་མིན་ཞིང་།
རང་གི་ལུས་ལ་གནས་མོད་ཀྱི།
བསོད་ནམས་དམན་པས་རྙེད་མི་འགྱུར། ༣༣

རང་ལུས་འགྱུར་བ་མེད་པ་དེ།
མཆོག་གཅིག་གིས་ནི་ཤེས་བྱས་ཏེ།
དེ་ནི་དཔེ་ཡིས་ཉེར་མཚོན་ནས།
བླ་མའི་ཞལ་གྱི་དྲིན་གྱིས་སོ། ༣༤

ས་དང་དེ་བཞིན་ཆུ་ལ་སོགས།
གཏེར་དང་ནོར་བུ་སྦས་པ་ལྟར།
དེ་བཞིན་ལུས་ལ་ཀུན་མཁྱེན་པའང་།
རྨོངས་དང་ལྡན་པས་མཐོང་མི་འགྱུར། ༣༥

སྒྱུ་མ་སྒྲིག་རྒྱུ་དྲི་ཟ་ཡི།
གྲོང་ཁྱེར་དང་ནི་བརྒྱ་བྱིན་གཞུ།

མི་ལོང་གི་ནི་གཟུགས་བརྙན་དང་། |
ཆུ་ཟླ་དང་ནི་བྲག་ཅ་དང་། ༣༦ |

རྨི་ལམ་མིག་གཡོར་སྤྲིན་དང་གློག |
ཆུ་ཡི་ཆུ་བུར་ཞེས་བྱ་བ། |
སྒྱུ་མའི་དཔེ་ནི་བཅུ་དང་གཉིས། |
རྣམ་པ་དུ་མར་ཡོངས་མཚོན་པ། ༣༧ |

དེས་འདི་ཤིན་ཏུ་གསལ་བའི་གཟུགས། |
ལྟ་བའི་གཟུགས་ལ་དམིགས་པར་བྱེད། |
སྒྱུ་མ་གསུམ་དུ་བསྟན་པ་ཡིས། |
ནན་ཏན་དུ་ནི་རབ་ཏུ་བསྒྲགས། ༣༨ |

མི་ལོང་གི་ནི་གཟུགས་བརྙན་དང་། |
འཇའ་ཚོན་དང་ནི་དེ་ལས་གཞན། |
གསུམ་པ་ཆུ་ཟླ་ལྟ་བུ་ཡིས། |
དེ་ཡི་སྐུ་ནི་བསྒོམ་པར་བྱ། ༣༩ |

སྤྱོད་པ་བསྡུས་ལས་གང་བསྟན་པའི། |
རིགས་ལྡན་སངས་རྒྱས་བདག་ཉིད་ཆེ། |

ལྷ་དང་ལྷ་མོ་ཐ་དད་པ། |
རིགས་ལྔ་ལས་ནི་ཡང་དག་འབྱུང་། ३० |

ཁྲོ་བོ་ཕོ་ཉ་ཕོ་ཉ་མོ། |
བྲན་ཕོ་བྲན་མོ་མངག་པ་སོགས། |
དེ་ནི་ཡོད་མིན་དེ་མེད་ཀྱང་། |
འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་རབ་ཏུ་བསྟན། ३१ |

དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་བདག་ཉིད་ཀྱིས། |
ཐམས་ཅད་སྤྲོ་ཞིང་བསྡུས་པས་དེ། |
དཀྱིལ་འཁོར་ཚུལ་ནི་རབ་རྒྱས་པའང་། |
སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གནས། ३२ |

རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཁ་དོག་ཀྱང་། |
སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་རབ་ཏུ་སྤྲུར། |
མྱ་ངན་འཛིགས་དང་ཆགས་བྲལ་དང་། |
སྐྲག་དང་དེ་བཞིན་སྐྱོངས་པ་དང་། ३३ |

སྡུག་བསྔལ་བ་དེ་ཡོད་མིན་པས། |
དེ་བཞིན་མི་སྡུག་མཐོང་ཐོས་དང་། |
ཡིད་དུ་མི་འོང་དྲི་རོ་དང་། |

རིག་བྱ་རྒྱུ་བ་སོགས་གང་གྱུར་པ། |
ཚུལ་དང་མི་མཐུན་རང་བཞིན་རྣམས། |
སྒྲུ་མ་ལྟ་བུས་དག་པར་བྱ། ༣༤ |

བཤང་དང་གཅི་སོགས་འདུག་པ་དང་། |
གྲང་[1]དང་རིམས་[2]སོགས་ནད་དང་ནི། |
ཐྲས་ལ་སོགས་པའི་རང་བཞིན་རྣམས། |
དེ་རྣམས་སྒྲུ་མའི་སྨན་གྱིས་གསོ། ༣༥ |

ཆོས་གང་གིས་ནི་བྱིས་པ་རྣམས། |
འཁོར་བའི་གནས་སུ་འདུག་འགྱུར་པ།[3] |
ཆོས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་[4]རྣལ་འབྱོར་པ། |
བདེ་བ་ཆེན་པོའི་གནས་ལ་འདུག ༣༦ |

འདོད་ཡོན་ལྔ་ཡི་[5]བདེ་བ་ཡིས། |
བྱིས་པ་རྣམས་ནི་འཆིང་བརྗོད་[6]དེ། |

---

1 གསེར། གྲངས།
2 སྐྱི། རིམ།
3 ཙོ། བ།
4 གསེར། ཆོས་ཉིད་ཀྱིས་ནི།
5 གསེར། ཡིས།
6 གསེར། ཛོད།

ཆོས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་རྣལ་འབྱོར་པ། |
སངས་རྒྱས་ཉིད་ཀྱང་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༣༧ |

ཆགས་དང་རྒྱགས་དང་སྲེད་པ་དང་། |
དེ་བཞིན་བྱམས་དང་སྙིང་རྗེ་དང་། |
དགའ་དང་བཏང་སྙོམས་ཉིད་དང་ནི། |
སྟོབས་དང་དེ་བཞིན་སྤྲོ་བ་དང་། ༣༨ |

དཔའ་དང་མི་སྲུན་གདུག་པ་དང་། |
དྲག་ཤུལ་དེ་བཞིན་དཀའ་བར་སྤྱོར། |
སྣང་བའི་རང་བཞིན་གཞན་དག་ཀྱང་། |
བདག་བྱིན་བརླབ་པའི་བདེན་པས་བསྒྱུ། ༣༩ |

ཕྱག་རྒྱ་གཅིག་དང་ལྡན་པའམ།
ཡང་ན་ཕྱག་རྒྱ་བཞི་དང་ལྡན། |
བཙུན་མོའི་འཁོར་ན་བཞུགས་པས་ཀྱང་། |
བདག་བྱིན་བརླབ་པ་རྗེས་དྲན་བྱ། ༤༠ |

གཟུགས་དང་སྒྲ་དང་དེ་བཞིན་དྲི། |
རོ་དང་རེག་བྱ་སྣུག་པ་རྣམས། |

བདེ་ཆེན་གོ་འཕང་གནས་ནས་ཀྱང་།
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡིས་རྟག་ཏུ་སྤྱོང་།།[1] ༨༡

རྒྱུད་མངས་དང་ནི་རྒྱུད་གཅིག་དང་།
སྣུག་པ་ལྔང་ནི་གླིང་བུ་ཉིད།
རོལ་མོ་རྣམ་བཞི་རྣལ་འབྱོར་པས།
བདག་བྱིན་བརླབ་པས་རབ་ཏུ་འཇུག ༨༢

རྟག་ཏུ་ཐིག་ལེ་སོགས་པ་ཡི།
གར་གྱི་རོ་དགུར་ཡང་དག་འབྱུང་།
སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཏིང་འཛིན་གྱིས།
རྣལ་འབྱོར་པ་ཡི་ལོངས་སྤྱོད་བྱ། ༨༣

རྣལ་འབྱོར་རྒྱུད་ལས་གང་གསུངས་པའི།
བཟླ་སོགས་ཆོ་ག་རྒྱས་པ་དག
སྒྱུ་མ་ལྟ་བུར་དམིགས་པ་ཡིས།
རྣལ་འབྱོར་པས་ནི་དེ་ལ་འཇུག ༨༤

1 གསེར། སྤྱང་།
2 གསེར། པོ།

འཁྲིད་པ་དང་ནི་འཛུམས་པ་དང་། |
དགོད་[1]དམ་དེ་བཞིན་སླ་བ་དང་། |
འགྲོ་འོང་ཉལ་ལམ་ཟ་ན་ཡང་། |
སྒྲུ་མའི་ལུས་སུ་དྲན་པར་བྱ། ༨༥ |

སྣ་ཚོགས་རྟོག་པས་བརྟགས་པ་ཡི། |
འགྲོ་བའི་བདག་པོས་[2]རོལ་པ་གང་། |
འདོད་ཆགས་ཆེན་པོའི་ཚུལ་གནས་ནས། |
དེ་ཉིད་རིག་པས་རྣམ་པར་སྤྱད།[3] ༨༦ |

ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་སྤྲངས་པ་ཡི། |
བདག་བྱིན་བརླབ་པ་འདི་ཐོས་ནས། |
ལས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བྱ་བ་འམ། |
ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་དུ་སྒྲུ། ༨༧ |

མཆོད་རྟེན་ལས་ནི་མི་བྱ་ཞིང་། |
གླེགས་བམ་བཀླག་པར་མི་བྱ་སྟེ། |

---

1 གསེར། ཚོད།
2 རྒྱ་དཔེ་ར། (ཨཏྲཱུཿ) འགྲོ་བ་གཞན་རྣམས།
3 གསེར། དཔྱད།

བདག་བྱིན་བརླབ་པའི་རིམ་གྱིས་ཀྱང་།
བྱ་བ་དང་ནི་བསྒྲུབ་པའང་བྱ། ༤༨

ལྷ་ལ་འདུད་[1]པར་མི་བྱ་ཞིང་།
དགེ་སློང་རྣམས་ལ་ཕྱག་མི་བྱ།
བདག་བྱིན་བརླབ་པའི་རིམ་ཉིད་ཀྱིས།
ཡང་ན་ཀུན་ལ་ཕྱག་བྱའོ། ༤༩

སྔགས་[2]འདོད་པ་ནི་མི་བྱ་ཞིང་།
ཕྱག་རྒྱ་འཆང་བའང་དེ་བཞིན་ནོ།
སྔགས་ཀྱི་བཟླས་བརྗོད་མི་བྱ་སྟེ།
ཡང་ན་གཟུགས་བརྙན་ལྡན་པར་བྱ། ༥༠

ཕྱི་རོལ་དོན་ནི་ཡོད་མིན་པས།
འདི་དག་རང་གི་སེམས་སུ་བལྟ།
དེ་བཞིན་སྒྱུ་མར་བསྒོམས་ནས་ནི།
དེ་ཉིད་ཀྱང་ནི་རྗེས་དྲན་བྱ། ༥༡

1 གསེར། གདུད།
2 ཅོ། སྔུགས།

བསམ་གཏན་ཚོ་ག་དཔག་མེད་དང་། |
སྔགས་ཀྱི་སྒྲ་ཡི་ཏིང་འཛིན་རྣམས། |
ཇི་སྲིད་སྒྱུ་མ་སྙེད་མེད་ན། |
ཀུན་ཀྱང་ས་ཡི་འབྲས་དོན་ཙམ། ५२ |

ལུས་དང་གནས་དང་ལོངས་སྤྱོད་དང་། |
ས་དང་ཕ་རོལ་ཕྱིན་ལ་སོགས། |
སངས་རྒྱས་ཛུ་འཕྲུལ་རྣམ་རོལ་པ། |
ཐམས་ཅད་སྒྱུ་མའི་རྣམ་འཕྲུལ་ཡིན། ५३ |

ཇི་ལྟར་མི་ལོང་དྲི་མ་མེད་པ་ལ། |
ཡན་ལག་ཀུན་དང་ལྡན་གཟུགས་སྣང་བ་ལྟར། |
དཔེ་བྱད་བརྒྱད་ཅུ་མཚན་ཆེན་སུམ་ཅུ་གཉིས། |
དེ་བཞིན་རྟག་ཏུ་རྡོ་རྗེ་འཛིན་ལུས་ཉིད། ५४ |

མཁའ་དབྱིངས་དབང་པོའི་མཚོན་ཆ་ཁ་དོག་སྣང་བ་ལྟར། |
དེ་བཞིན་རྡོ་རྗེ་འཛིན་པའང་ཁ་དོག་དཀར་པོ་ལ་སོགས་པས། |
དགེ་སོགས་ལས་རྣམས་ཇི་བཞིན་དེ་བཞིན་དུ་ནི་འཇིག་རྟེན་ལ། |
ཡན་ལག་མ་ཉམས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་གཟུགས་ནི་སྟོན་པར་མཛད། ५५ |

གང་ཞིག་གསེར་དངུལ་དང་ནི་ནོར་བུ་དུང་དང་ཤེལ་བྱེ་རུ[1]།
བཻ་ཌཱུརྻ་དང་ཟངས་[2]དང་འཛིན་མོ་[3]སྙིང་སོགས་ཡང་དག་གནས།
ནམ་མཁའི་ངོས་ནས་རི་བོང་ཅན་གྱི་[4]གཟུགས་ནི་གཅིག་ཤར་བས།
དེ་ལ་རྣམ་པར་འཇུག་པས་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་གང་བྱས་ལྟར། ५६

རང་དངོས་སྣ་ཚོགས་གཟུགས་ཅན་ཟག་མེད་[5]གང་།
འཇིག་རྟེན་ཀུན་ཁྱབ་སྒྱུ་མའི་རང་བཞིན་ཉིད།
རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་འགྲོ་བའི་སྙིར་གནས་པའི།
སེམས་མགོན་རྡོ་རྗེ་དེ་ཡང་དེ་བཞིན་ནོ། ५७

གཟུགས་སོགས་རྣམ་པ་ལྔ་དང་གང་ཡང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས་དེ་ནས།
བཅོ་བརྒྱད་ཅེས་[6]བྱུར་གསུངས་དང་ཁམས་ནི་རྣམ་པ་ལྔ་དང་ཡང་།
ཡེ་ཤེས་ལྔ་པོ་དང་ནི་ཡུལ་དེ་འགྲོ་བ་མ་ལུས་ཀུན།
སྒྱུ་མ་ལས་བྱུང་དེ་འདིར་རྡོ་རྗེ་འཛིན་དེ་གཞན་མ་ཡིན། ५८

---

1 གསེར། བྱུ་རུ། ཅོ། བྱི་རུ།
2 གསེར། བཟངས།
3 གསེར། འཛིན་མོ་མི་སྣང་། ཅོ། འཛོན་མོ།
4 གསེར། གྱིས།
5 གསེར། ཟད་མི།
6 གསེར། ཞེས།

རི་རྣམས་དང་ནི་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་གང་ཡིན། |
གླིང་རྣམས་དང་ནི་དམྱལ་བ་ལ་སོགས་དབྱེ་བ་རྣམས། |
རྒྱུ་བ་དང་ནི་མི་རྒྱུ་བ་ཉིད་གང་ཡིན་པ། |
དེ་དེའི་རང་བཞིན་རྡོ་རྗེ་འཛིན་ཏེ་གཞན་མིན་བལྟ། ७९ |

དེ་ལྟར་འགྲོ་བ་མ་ལུས་རང་གི་སེམས་ལས་བྱུང་བ་སྟེ། |
སྲིད་དང་ཐར་པ་རྟོག་དང་ཡང་དག་ལྡན་པའི་རྣམ་པར་ཤེས། |
གང་གིས་སྲིད་པའི་རྒྱ་མཚོ་སྡུག་བསྔལ་རྒྱ་མཚོར་འཁོར་འགྱུར་ལས། |
ཡིད་སྦྱངས་ཕ་རོལ་སོན་པའི་འབྲས་ལྡན་དེ་ལ་བསྟོད་ཕྱག་འཚལ།८० |

སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཨཱརྱ་དེ་བས་མཛད་པའི་བདག་བྱིན་གྱིས་བརླབ་པའི་རིམ་པ་རྫོགས་སོ།། ||


yo